श्री रसमोद कुञ्ज बिहारी बिहारिणी जू

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीसीतारामनाम—साधना

- संपादक -

शत्रुहनशरण

— प्रकाशक —

''साकेतवासी श्रीविपिन विहारी प्रसाद एवम् गजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव''

की पुण्यस्मृति में

श्रीकेदारनाथ प्रसाद एवम् श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

— मुद्रक —

श्रीराम ऑफसेट प्रिन्टर्स

पालकी खाना, फैजाबाद, दूरभाष—२०५५२

द्वितीय संस्करण—२००० सन् १९९९ई० न्यौछावर ~~एक~~ दो सौ एक रूपये

२०१/- रुपये

श्रीजानकी–रमणो विजयते

प्रस्तावना

झाँसी के श्रद्धेय सज्जन श्रीरामसेवक झा जी पूर्वजन्म ही के नामानुरागी हैं। रेलवे के चार्जमैन नाम प्रतिष्ठित पद पर नौकरी करते हैं। रेलवे के कार्य में दिन के घंटों तक रत रहते समय इन्हें मानों दो मन, दो जीभ हो जाती है। एक जीभ और मन से तो लौकिक नौकरी वाला कार्य सम्हालते रहते है। दूसरे मन–जीभ से सतत नामाभ्यास में जागरुक रहते हैं। इनकी साधना उस समय भी शिथिल नहीं होती। उसके पश्चात् वाला आपका समय तीव्र साधना में ही व्यतीत होता है। रात में बहुत कम सोते हैं। इनके पूज्य पिताजी का दर्जा इनसे भी ऊँचा था। उनके दर्शनों के लिये एक दुर्लभ–दर्शन सिद्ध आया करते थे। वे अपने नामानुरागको ऐसा छिपाकर रखते थे कि आपके निकटवर्ती आत्मीय लोगों को भी पता नहीं था कि इनकी ऊँची पहुँच है। लोगों को आश्चर्य होता था, कि इनमें क्या विशेषता है कि इतने बड़े महान सिद्ध इनके दर्शनों के लिये बार–बार आते रहते हैं। एक रातको २ बजे सिद्धजी श्रीरामसेवकजी को सोये से जगाकर इन्हें पितृचरण के समीप लिवा गये। उस समय वे गाढ़ी नींद के आनन्दमें थे, पर निद्रावस्थामें भी उनके मुख से जाग्रतकी भाँति नामोच्चारण की झड़ी लगी थी। रामसेवक! तुम्हारे पिता की यह विशेषता मुझे भी प्राप्त नहीं हैं। इनकी इसी विशिष्टता के कारण मैं इनके दर्शनोंको बराबर आया करता हूँ।

इन दोनो पितापुत्र के द्वारा झाँसी के नवयुवक समाजमें इस समय भगवन्नामानुराग की प्रवर्द्धमान लगन जागृत है। श्रीरामसेवकजी को अधिक समय नहीं कि इन नवोदित नामानुरागियों को अलग–अलग अपनी प्रकृतिके अनुसार नाम–साधना का मार्ग निर्देश करते रहें। उन्हीं नवयुवकों में एक हैं श्रीरामप्रेम शरण। श्री अयोध्या में ये हस्ततैलचित्र के कलाकार रूपमें प्रसिद्ध हैं। एक दिन श्रीरामप्रेमशरणजी ने मुझसे आग्रह किया कि आपने कई ग्रन्थ लिखे। कुछ नामजप की विधि लिखकर दें, तो हम अपने झाँसी के युवक समाज के निमित्त छपाकर उनमें वितरित करें। मैं चिरकाल से श्रीसीतारामनाम का आश्रयी हूँ। यदि जीवनमें मुझसे कुछ साधना बनी है तो गलत या सही तरीके से केवल नामोच्चारण मात्र। श्रीसीतारामनाम प्रताप प्रकाश का मैं बराबर पाठ करता रहा हूँ। मुझे श्रीनामसरकार की लिखित सेवा करने में बड़ा हर्ष हुआ। संक्षिप्त जप विधि मात्र लिखने बैठा, तो लिखते लिखते एक विशाल काय ग्रन्थ बन गया।

मैंने एक नाम साधन के लिये जितने आवश्यक ज्ञातव्य विषय समझे, कुछ न कुछ प्रत्येक पर कलम चली। लेखन में मुझे कल्याण के प्रथम विशेषांक श्रीभगवन्नामांक तथा भगवन्नाम महिमा एवं प्रार्थना अंक–इन दोनों विशेषांकों से पर्याप्त लेखन सामग्री मिली है। खासकर दृष्टांत सभी तो वहीं से उद्धृत हैं। परमहंस श्री प्रेमलताजी महाराज के ग्रन्थ,पूज्यपाद बड़ेमहाराज अनन्त श्रीस्वामीयुगलानन्यशरणजी महाराज के ग्रन्थ एवं श्रीगोस्वामीजी के काव्यों से मुझे लेखनसामग्री जुटाने में विशेष सहायता मिली हैं।

अपने ग्रन्थ में मैंने जो आर्ष ग्रन्थों के श्लोक उद्धृत किये हैं। सभी श्रीसीतारामनाम प्रताप प्रकाश से लिये गये हैं। तात्पर्य यह कि प्रस्तुत पुस्तिका में मेरा विचार तो नगण्य ही है, मैंने केवल प्राचीन तथा अर्वाचीन नाम – आचार्यो की महावाणियों का संकलनमात्र किया हैं। श्रीनाम रहस्य को सहज बोधगम्य बनाने के लिये हमने सम्पूर्ण ग्रन्थों को सात खंडो में विभाजित किया। यह विभाजन–पद्धति हमारी तुच्छ बुद्धि की उपज है।
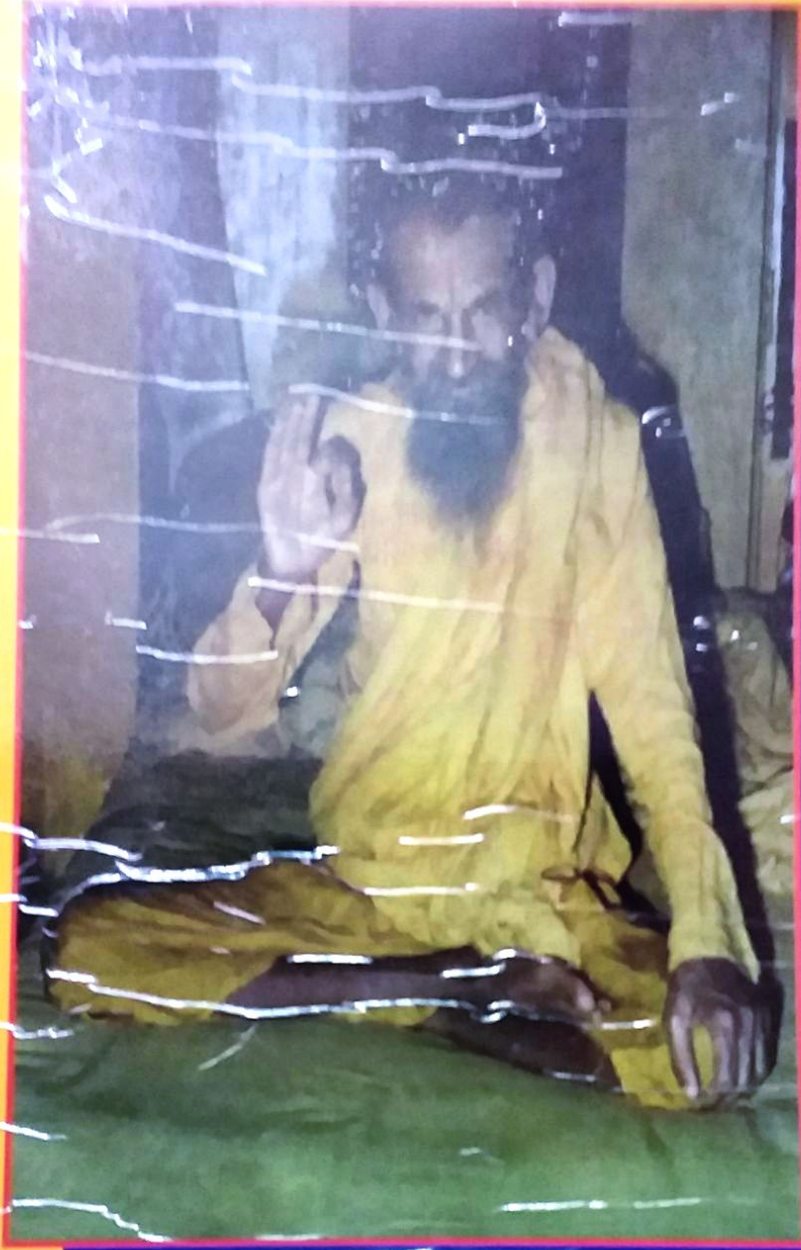
श्रीश्री अनंतविभूषित श्री स्वामी शत्रुह्न शरणजी महाराज
(श्री विरौली वाले महाराज जी)
श्री रसमोदकुञ्ज, अयोध्याजी

प्रथम अभिमुख खंड में हमने श्रीसीताराम नाम जप को ही युगधर्म के अनुसार एकमात्र सफल साधना प्रवल प्रमाणों के द्वारा सिद्ध किया है। अत: विधाव्यसन, ज्ञानार्जन, हठयोग, दान, तीर्थ, यज्ञ आदि के द्वारा पंगु बनाये हुये, साधनों से मुहमोड़ कर एकमात्र नाम–साधना में शिरतोड़ परिश्रम करने पर जोर दिया है।

द्वितीय साध्य खंड में हमने श्रीसीतारामनाम की सर्वश्रेष्ठता परत्व, प्रतिभा, प्रताप,वैभव,महिमा,प्रभाव,शक्ति सिद्ध करते हुये, श्रीनाम सरकार के सौहार्द, माधुर्य आदि गुण दर्शाये हैं। श्रीनामजप की दुर्लभता एवं प्रार्थना सुलभ भी बताये गये हैं।

तृतीय साधक खंड में नामसाधक के लिये वैराग्य, नाम विश्वास,श्रद्धा, नाम भरोसा आदि आवश्यक बताते हुये,इन्हें श्रीनामाकार वृत्ति बनाने तथा नामनशे में चूर रहने का आग्रह किया गया हैं। निष्काम साधकों के सुख,महत्व तथा सुरक्षा आदि विषय भी आनुषंगित रूप से कहे गये हैं।

चौथे बाधक खंड में अति आहार, शयन,संभाषण आदि को बाधक बताते हुये, इनके तथा अनान्य आवश्यक संयम एवं दश नामापराध से बचने का आग्रह किया हैं।

पाँचवें साधन खंड में श्रीसदुगुरूशरणागति,श्रीनाम शरणागति आवश्यक बताते हुये, युगलनाम,वैखरी वाणी में जपसंख्या का नियम लेकर जपने को कहा गया है। निरंतर अखंड जप को इष्ट ध्यानपूर्वक जपना सर्वोत्तम साधन बता कर नामरटन का सुदृढ़ संकल्प लेने पर बल दिया गया है।

छठे सिद्धि खंड में नामजप से प्राप्य सिद्धाई, श्रीइष्ट धाम प्राप्ति तथा भक्ति की सिद्धि बताई गई हैं।

इसी प्रकार नामजप से रोगनिवारण,भय निवारण,संकट–मोचन, विध्न वाधा निवारण,तथा नामजप से अमरत्व, की प्राप्ति बताया गया है। श्रीनाम सरकार प्रतिकूल को अनुकूल बनाते हैं। इनमें विलक्षण चमत्कार भरा है। ये प्रारब्ध भी मिटाने में समर्थ हैं। नामजपका अनुभव, लाभ तथा शान्ति की प्राप्ति बताई गई है।

सातवें नाम लेखन खंड में नाम लेखन से विविध मनोरथों की सिद्धि एवं अशेष प्रकार की सिद्धियाँ संभव बताई गई हैं।

ग्रन्थ प्रकाशन का पूरा भार–वहन साकेत वासी सेठ जय चन्द्र लाल जी लाहोटी, गोहाटी (आसाम) वाले के सुपुत्र श्री ऊँ प्रकाशजी लाहोटी कर रहे हैं।

एतदर्थ ये सभी सहदय पाठकों के आर्शीवाद भाजन हैं। प्रूफ मैंने केवल एकबार ही देखा है। अत: अशुद्रियाँ बहुत रह गई हैं। भूल करना मानव–स्वभाव हैं। उद्धृत श्लोको तथा आचार्य महावाणियों की हमने टीका नहीं की है। संक्षिप्त भाव सारांश मात्र जहाँ तहाँ दर्शाये गये हैं। अत: विज्ञपाठक मूल महावाणियों को अधिक विश्वनीय मानकर, हमारे भावकथन की त्रुटि को सम्हाल लेंगे। ग्रन्थमें जो कुछ खूबी है, वह आचार्यो की महावाणियों की हैं। त्रुटियों का उत्तरदायी हैं यह क्षुद्रलेखक । सहदय सज्जनों से अपराध क्षमापन की प्रार्थना करता हुआ।

विनीत

शत्रुहनशरण

श्रीरसमोदकुंज, श्री अयोध्याजी,

माघ पूर्णिमा, संवत २०३८

द्वितीय संस्करण के दो शब्द

प्रथम संस्करण की प्रतियाँ चुक गईं। संत एवं भक्त समाज को यह ग्रन्थ सुरूचिपूर्ण लगा। उनकी पुनः–पुनः माँग देखकर यह द्वितीय संस्करण सुजन समाज के समक्ष प्रस्तुत है।

इस द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के व्यय भार वहन में साकेत वासी श्री विपिन बिहारी प्रसाद जी के सुपुत्र श्री केदारनाथ प्रसाद जी (लक्ष्मी राईस मिल, गढ़नोखा) एवं दूसरे साकेत वासी श्री गजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (श्रीवैदेहीशरणजी) अर्रा, बाधी रोड, वैशाली सहयोगी हैं।

एतदर्थ आप नामानुरागी–द्रय श्री आचार्य–कृपा के भाजन हैं।

श्रीरसमोदकुंज, श्री अयोध्याजी,
गुरू पूर्णिमा, संवत २०५६
तदनुसार २८ जुलाई, १९९९ ई०

संत चरण रेणु–किंकर
सियाछबीली शरण
(भैया जी)

सूची-पत्र

सं.	विषय	पृष्ठ

सं.	विषय	पृष्ठ

सं.	विषय	पृष्ठ

७. श्री रामनाम लेखन खंड

❄ 'श्री सीतारामाभ्यां नम:' ❄

श्री सीताराम

नाम—साधना

❄ अभिमुख खण्ड ❄

, मङ्गलाचरण ,

सतगुरु पद असदहरन सुमिरन करु प्यारे।
याते पर अपर बात, घात पाँच सात रात,
ताते तजि तृगुन नात, गुरु गुननिधि धारे।
लोक लाज खाज दरद, दायक दब दगाबाज,
जानि बूझि भाज गुरु, सनेह सुचि सँवारे।।
नाम नेह नवल अमल, गेह देह पाँच हीन,
पीन मति विचित्र सरन, सतगुरु अवधारे।
'श्री युगल अनन्य' करुना सत, वरुनालय अधिक मेरु।
तोल पोल पार प्रीति, रीति लघु सवारे।।

चहुँ युग माहि सुसंत जे, रसिक नाम अभिराम।
तिन पद पंकज नमो नित, दायक उर अभिराम।।

पर ते पर पावन परम, अग जग जीवन जान।
बंदो सीताराम निज, नाम महामुद खान।।

अगुन सगुन वर बोध कर, अमर अजर सुख हेतु।
करुनानिधि आरत हरन, भव दुस्तर सुचि सेतु।।

,सब साधन छोड़कर नाम जपिये,

उपासना मार्ग पर चलने को समुत्सुक नवल जिज्ञासुओं के लिए प्रायः सर्वत्र श्रीसीतारामनाम जपने पर विशेष जोर दिया जाता है। हम पहले यही स्तम्भ यहाँ उपस्थित करते हैं :—

भक्त संसार की सर्वसम्मत मान्यता है कि ''सर्वं त्यक्त्वा हरिं भजेत्''।

''श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी। भजिये राम सब काम बिसारी।।''

इसी सिद्धान्त पर शास्त्रीय रीति से विस्तारपूर्वक विचार करना है।

श्री विष्णु पुराण में श्रीब्रह्माजी ने श्री मरीचिजी से कहा है कि भूमंडल में श्रीरामनाम विज्ञान से विहीन जन ही कोई स्वर्गादि नश्वर फल देने वाले यज्ञादिक कर्मों में लगे रहते हैं, कोई घुनाक्षर न्याय की भाँति कैवल्य प्राप्ति में भी संदिग्ध साधन ज्ञानार्जन में लगे हैं। लोग जानते नहीं कि संसार—सागर से पार उतारने वाले तारक शब्द 'ब्रह्म' संज्ञक तो एकमात्र श्रीराम नाम ही है। यही कारण है कि श्रीरामनाम के समान अमोघ साधन को छोड़कर कोई हठयोग के पीछे माथ मुड़ा रहे हैं, तो कोई ध्यानादि में मोहित हो रहे हैं। कोई नाना मंत्र जप की सिद्धि में क्लेश उठा रहे हैं। हम ब्रह्मा, श्रीशंकरजी, भगवान् विष्णु तथा सभी देवता लोगों ने भी श्रीरामनाम ही के प्रभाव से उत्तमोत्तम सिद्धियाँ प्राप्त की हैं। जो श्रीनाम विद्या नहीं जानते वे भटका करें।

''केचिद्यज्ञादिकं कर्म केचिज्ज्ञानादि साधनम्।
कुर्वन्ति नाम विज्ञान विहीना मानवा भुवि।।
तत्र योग रताः केचित्केचिद् ध्यान विमोहिताः।
जपे केचित्तु क्लिश्यन्ति नैव जानन्ति तारकम्।।
अहं च शङ्करौ विष्णुस्तथा सर्वे दिवौकसः।
राम नाम प्रभावेण सम्प्राप्ता सिद्धिमुत्तमाम्।।''

भविष्योत्तर पुराण में भगवान् श्रीनारायण, भगवती श्रीलक्ष्मीदेवी से कहते हैं — कमले ! क्या साधनान्तरों में भटकना है? सभी ईश्वर कोटि के महानों द्वारा संपूजित रामनाम जपो, रामनाम ! मैं भी तो मन ही मन वही नाम जपता हूँ। सभी साधनों में श्रीरामनाम उच्चारण सर्वोत्तम है। अकेले मैं ही नहीं कहता, वेद मर्मज्ञ, ज्ञानसागर में मग्न, महानुभाव भी यही कहते हैं।

''भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेश पूजितम्।
रामेति मधुरं साक्षान्मया संकीर्त्त्यते हृदि।।
सर्वेषां साधनानां वै श्रीनामोच्चारणं परम्।।
वदन्ति वेद मर्मज्ञा निमग्ना ज्ञान सागरे।।''

जब सरल सुगम अमोघफलप्रसू श्रीरामनाम ही सभी दिव्यादिव्य मनोरथ पूर्ण करने वाले है, तो नाहक तीर्थ, व्रत, हवन, तप, यज्ञ, दान, ध्यान, विज्ञान, समाधि, योग, विराग अन्य जप, पूजापाठ, यंत्र, मंत्र, तंत्र तथा अन्यान्य उग्र कर्म करने की क्या आवश्यकता? ऐसी 'वृहन्नारदीय' की सम्मति है।

''किं तीर्थै किं व्रतै होमैः किं तपोभिः किमध्वरैः।
दानैर्ध्यानैश्च किं ज्ञानैर्विज्ञानैः किंः समाधिभिः।।
किं योगैः किं विरागैश्च जपैरन्यैः किमर्चनैः।
यन्त्रैर्मन्त्रैस्तथा तन्त्रैः किमन्यैरुग्र कर्मभिः।।
स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि।
दर्शनाद्धरणादेव रामनामाखिलेष्टदम् ।।''

प्रश्न यह बनता है कि जब श्रीरामनाम ही लौकिक–पारलौकिक स्वार्थ–परमार्थ की अशेष वस्तु देते हैं, तो अन्यान्य साधन बनाये ही क्यों गये हैं? उत्तर – प्रीति–प्रतीति श्रीरामनाम ही में जमना बड़ा कठिन है। जिन्हें जम गया, उनके लिये सभी अन्य साधन व्यर्थ हैं। जिस भाग्यहीन को श्रीरामनाम में विश्वास नहीं है, वह करे क्या? आखिर कहीं तो उन्हें अपने मन को सन्तोष देने के लिए, लगना है। अतः ऐसे ही मंदभागियों के लिए परमानन्द–निष्ठ महर्षियों में साधनान्तर की कल्पना की है। श्रीआदित्य पुराण में स्वयं भगवान् सूर्यदेव मुनियों से कहते हैं –

''नाम विश्रब्धहीनानां साधनान्तर कल्पना।
कृता महर्षिभिस्सर्वैः परमानन्दनैष्ठिकैः।।''

श्रीरामनाम को छोड़कर जिसे अन्य साधना में प्रीति है, समझो कि वह अनजान कल्पवृक्ष समूह को छोड़कर, एरण्ड पेड़ का सेवन कर रहा है। 'श्रीआङ्गिरस पुराण' में कहा है –

''सुरद्रुम चयं त्यक्त्वा ह्यैरण्डं समुपासते।
यस्यान्य साधने प्रीतिस्त्यक्त्वा श्रीनाममङ्गलम्।।''

कलि के प्रभाव से श्री रामनाम प्रतिपादक अनेक ग्रन्थ लुप्त हो गये हैं। आजकल पाखंडियों ने नाना मतवाद फैला रखा है, भोली–भाली जनता के धनापहरण के लिए। अतः अनेक बहकावे में न आकर, जो सभी साधनों से मन मोड़कर, एकमात्र नामाभ्यास में लगे हैं, वही कृतकृत्य हैं, वही सभी वेदान्तों के मर्मज्ञ हैं। 'ब्रह्म संहिता' में कहा है–

''कलि प्रभावतो नष्टाः सद्ग्रन्थानां कथाः शुभाः।
पाखण्डै र्निर्मितं नाना मतं श्रीनाम वर्जितम्।।
अतस्सर्वं परित्यज्य नाम संस्मरणे रताः।
त एव कृतकृत्याश्च सर्व वेदान्त कोविदाः।।''

हमारे पूर्वाचार्य श्री बड़े महाराज कहते हैं– सभी साधन समूह की श्रीराम नाम से तुलना हो नहीं सकती है। आकाश–जमीन के समान अन्तर है दोनों में। यदि श्री नाम देवेन्द्र हैं, तो अन्य साधन भूमण्डल के दरिद्र। श्रीनाम विज्ञ हैं, तो दूसरे साधन अज्ञ। श्री नाम स्वच्छ जल हैं, तो दूसरे साधन सब कीचवत्। श्रीरामनाम अमृत, अन्य साधन मौत। श्रीरामनाम दिव्यदेह, तो अनन्य साधन मलीन स्थूल शरीरवत्। इसी भाँति दोनों में अन्तर समझ लेना चाहिए।

''जैसे छिति व्योम माँझ अन्तर लखाय अति,
जैसे सुरराज रंक भेद दरसात हैं।
जैसे विज्ञ अज्ञ बीच, स्वच्छ जल कीच,
सुधा मीच में, विभेद सब भाँति सरसात हैं॥
जैसे दिव्यदेह गुन गेह, औ मलीन तन,
समता कदापि नहीं कबहूँ लखात है।
(श्री) युगल अनन्य ऐसे साधन समूह सब,
महाराज नाम की न तुल्यता विभात है॥ १०९९

आप चले हैं और साधनों की श्री रामनाम से तुलना करने। भला बतलाइए तो असंख्य तारागण, दीपक, अग्नि, विद्युत, सहस्रों चन्द्रमा मिलकर भी सूर्य की तुलना करेंगे? सम्पूर्ण भूमंडल की प्रजा मिलकर, वैभव में क्या चक्रवर्ती सम्राट् की समता कर लेगी? काँच के कोटि—कोटि पर्वत मिलकर, क्या स्वच्छता में, मोल में, प्रकाश में, चिन्तामणि का पटतर कर पावेंगे? आपको तुलना करना हो तो कीजिये, किन्तु याद रहे सिद्धि तो रामनाम ही से मिलेगी।

'' अमित नखत दीप अनल सुदामसुता,
सहस उड़ेश सूर सदृश न होत रे।
अखिल जहान प्रजा जुरे न नृपेश सम,
वैभव विलास सम जोहिये निसोत रे॥
कोटिन पहार सम काँच तऊ चिंतामनि,
सदृश न स्वच्छता अमोलता सुजोत रे।
(श्री) युगल अनन्य ऐसे महाराज नाम सम,
साधन असंख्य सिद्धताई न उदोत रे॥ ११०४॥

उसी भाँति श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीनाम रहित साधन कैसे दारुण दोषयुक्त है— जैसे प्राणहीन शरीर, राजारहित असंख्य सैनिक दुखद ही होते हैं। चन्द्र चाँदनी बिना अँधेरी रात, सत्संगहीन नर जीवन, जल बिना नदी सरोवर, पतिहीन नारी, धूलवत् तुच्छ हैं।

''जैसे प्रानहीन तन नृपति रहित जन,
जरे सत सैन ऐन दुख ही को हेतु रे।
जैसे चन्द चान्दनी वियोग से देखात निसि,
जैसे संतसंग बिनु जीवन सकेतु रे॥
जैसे नीर रहित सरित सर देखियत,
जैसे धव हीन वाम तुच्छ सन रेत रे।
(श्री) युगल अनन्य ऐसे नाम से विहीन सब,
साधना मलीन दोष दारुन उपेत रे॥ ११०५॥

पुन: आप कहते हैं कि श्रीरामनाम स्नेह के बिना ज्ञान—ध्यान प्राणहीन तन के समान अपावन है, अत: नाम सहित सभी साधन सुखद हैं। नाम हीन दुखद हैं। पाप—नाश की दृष्टि से नाम छोड़कर अन्य प्रायश्चित करना राख में होम करने के समान निष्फल है। और साधन इन्दारुण फल के समान कडुए हैं तो श्रीसीताराम नाम दाख के समान मीठे हैं।

राम नाम नेह बिन ज्ञान ध्यान प्रानहीन,
तन के समान यों सुजान संत साख है।
ताही हेतु नामहेत सहित सुखद सब,
दुखद रहित वेद विदवर भाष है।।
जेते करतब कल्मष के हरनहार,
ते ते नाम बिन जैसे वादि होम राख है।
(श्री) युगल अनन्य और साधन इन्दारुनी सो,
सीतावर नाम महामिष्ट सम दाख है।१३४०।।

श्रीरामनाम पावनों के पावन बनाने वाले, महामोद सिन्धु, दीनबंधु हैं। पुराणों में अन्यान्य साधन जो लिखे हैं उन्हें कलियुग में हाथी के बाहरी दाँत के समान केवल दिखावटी मात्र समझना किसी साधन में भी कलियुगी बद्धजीव को प्रभु के सम्मुख करने की शक्ति नहीं है, केवल सब भाँति से आदि, मध्य परिणाम में तीनों प्रकार उन्हें दुखद समझना। अत: अन्य साधन की आशा करने वाले गधे के समान नासमझ हैं और हैं कर्मनाशा नदी तुल्य अपावन।

महामोद सिन्धु दीनबंधु विमलेश नाम,
लेक वेद जाहिर हमेश ही सुखद है।
साधन समूह व्यूह लिखो जो पुरान बीच,
तौन कलिकाल बीच रदन द्विरद है।।
काहू मध्य वध्य जीव सींव सनमुख शक्ति,
नेकु न देखात तिहूँ भाँतिन दुखद हैं।
(श्री) युगल अनन्य अन्य आस के करैया नर,
खर के समान तिन्हें मानों नदवद हैं१३४४।।

नाना साधन अनेक मत, मलीन मादक है। लक्ष्य तक पहुँचाने वाले नहीं हैं। जब पारसपर्वत तुल्य राम नाम मिल गये, तो कौड़ी मोल वाले साधनों से क्या मतलब? संत सदगुरु ने श्रीरामनाम सुधासिंधु दरशा दिया, तो अन्य साधन रूपी खारे जल पीकर कैसे प्रतोष चाहते हैं? श्रीसीताराम सुयश चिंतनपूर्वक नाम जपिये प्रेम रंग में रंगाइये और सारहीन साधनों के पीछे मत भटकिये।

नाना मत मादक मुलीनता मुराद बिन,
मतलब करन अजूब अविचार है।

पायो प्रिय पारस पहार अविकार जब,
तब कहा कौड़िन को रह्यो दरकार है।।
संत सदगुरु दरसाय दियो सुधासिंधु,
पीवत प्रतोष काज कौन जलछार है।
(श्री) युगल अनन्य सीताराम नाम जस संग,
रंग अंग रंग्यो और साधन असार है।।१५६०ई.।।

श्री बड़े सरकार के मत से श्रीरामनामहीन साधना बन्ध्यापुत्र सममिथ्या है कहने में सुगम, करने में अगम। करो भी तो मनबुद्धि की स्थिरता नहीं होती। जैसे भूसा कूटने से अन्न नहीं निकलता, जल मथने से घी नहीं निकलता, उसी भाँति अन्य साधनों से फल नहीं मिलता। कलिकाल में नाम ही से श्रीसाकेतधाम मिलेगा।

''मेरे मत मांझ सब बांझ सुत के समान,
साधन सुनाम विरहित सांच मानिये।
कथनी करन लागे सुगम अगम अति,
होत तिलमात्रहूँ न थिर मति तानिये।।
तुषा घात किये से न कढ़त अनाज कहूँ,
नीर के मथे ते घृत कैसेहूँ प्रमानिये।
(श्री) युगल अनन्य कलिकाल में कृपाल नाम,
देत सत्य धाम संत साखि साँच जानिये''।।२७३८।।

और भी महाराज की विमल वाणी पढ़िये—

कोउ साँख्य शास्त्र उपनिषद सुभाष्य वेद,
खेद विरहित निशि दिवस बिलोकही।
कोऊ योग रोग हर, सोग से बिहीन भक्ति,
सुरति सुतंत्र सुविचारत अशोक ही।।
कोउ यंत्र मंत्र तंत्र सिद्धता बड़ाई हेत,
नाना भाँति साधन सजाय चित्त रोकही।
(श्री) युगल अनन्य सब सत्य पर आज काल,
सीताराम नाम जपे पावे सुख थोक ही।।१४११।।

अनेकों कल्प पर्यन्त शरीर को कष्ट देकर, मौन पूर्वक तप कर लो, कंचनकामिनी तथा विषय विलास त्याग कर समाधि भी सिद्ध कर लो, काल की कठोरता को भी साधन द्वारा शीतल बना लो, परन्तु जो विलक्षण सुख स्वाद नाम जपने से होगा, वह उन साधनों में कहाँ?

"कोटिन काय कलेश करे कति कल्प अनल्प अजल्प रहावै।
कंचन कामिनि काम कषाय विहाय समाय समाधि सजावै।।
काल कराल कठोर कवाहत चाहत ताहि सदा सितलावै।
(श्री) युग्म अनन्य अमोल अडोल सुनाम रटे विन मौज न छावै।।१९०२।।

भजन प्रभाव होत सुलभ सकल सुख, घेर भवसिंधु होत गाय के ज्यों खूर है।
साधन करत सियराम नाम तजि कलि आमन के हेतु जनु सेवत बबूर हैं।।
चहुँ जुग तीनि काल वेद और पुरान माहि झलमल झलकत नाम ही को नूर है।
दीखत न प्रेमलता लोचन विहीन लोग रटत न राम नाम सोई नर कूर है।।

नाम को स्वाद मिल्यो जिन्हि को तिन्हि को जप जोग न भोग सुहाहीं।
कर्म सुधर्म शुभाशुभ साधन आराधन बहुते जग माहीं।
रिद्धि सुसिद्धि विभूति तिलोक की पूजन पाठ प्रपंच लखाहीं।
प्रेमलता रत नामहिं जे तिन्हि को कछु भूलिहु भावत नाहीं।।

कोटिन बात की बात कहौं इक, सत्य प्रमानिक मंगल खानी।
रटना सियराम के नाम सुजानहु कोटि प्रकारनि आनंद दानी।।
श्री गुरुदेव कृपाल कही मोहि पावन पर्म सु नाम कहानी।
प्रेमलता दृढ़ धारि सदा उर नाम रटो सुनि मोर सुवानी।।

नामेतर साधन निष्फल

युग द्रष्टा वैष्णवाचार्य शिरोमणि कलिपावनावतार श्री गोस्वामिपाद ने इस युग में श्रीरामनाम भिन्न सभी अन्यान्य साधनों को फलोत्पादनी शक्ति विरहिता वन्ध्यावत् बताया है। " कलिकाल अपर उपाय ते उपाय भये। जैसे तम नासिवो को चित्र की तरनि। "

राम नाम इक अङ्क है,सब साधन है सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दस गून।।

आदि में आप १, २, ३, ४ आदि कोई अंक न लिखें, केवल शून्य—शून्य लिखते जायें, तो गिनती में कुछ नही रहेगा। आदि में कोई अंक लिखकर शून्य लिखें, यथा १०, २०, ३० आदि तो वह लिखित अंक अपने से दस गुन बढ़ जायगा। उसी भाँति नाम कीर्त्तन सहित कोई साधन करें, तो उन वन्ध्या साधनो में भी श्रीनाम सरकार, अपनी शक्ति से शास्त्रोक्त फल के दश गुन अधिक दे देंगे।

यदि आप नाम छोड़कर, तीर्थ, व्रत, दान, पुण्य, योग, यज्ञ, ज्ञान, ध्यान आदि साधन कर रहे हैं, तो आपको परमार्थ प्राप्ति से तो हाथ धो ही लेना चाहिये। परमार्थ बनेगा, भगवद्धाम की प्राप्ति

मुक्ति, भक्ति आदि होगी, तो एक मात्र श्रीरामनाम के जप से ही। श्रीदोहावली में श्रीगोस्वामिपाद कहते हैं कि –

''राम नाम अवलंब विन, परमारथ की आस।
बरसत वारिद बूंद गहि,चाहत चढ़न अकास।।''

भला वर्षा बूँदो की लड़ी पकड़ कर कोई आकाश पर चढ़ सकता है? तब अन्य सभी साधन तो वर्षा बूंद की लड़ी है। भगवद्धाम कैसे पहुँचियेगा?

श्रीनृसिंह पुराण का प्रमाण है। देवर्षि नारदजी, श्रीयाज्ञवल्क्य ऋषि से श्रीरामनाम की महिमा बता रहे हैं। आपका कहना है कि किसी साधक के श्रीरामनाम में श्रद्धा तो है नहीं, अन्यान्य धर्म संग्रह में लगा है। समझ लीजिए मुनिवर! उसके सभी साधन निष्फल जायेंगे। यथा कोई रास्ते पर बीज वपन करे, तो पथिकों के चरण रगड़े से उस बीज का अंकुर ही नष्ट हो जायेगा, बिना पौधे का फल कहाँ?

''राम नाम्नि रति र्नास्ति कुरूते धर्म सञ्चयम्।
तत्सर्व निष्फलं प्रोक्तं पथि बीजाङ्कुरा इव।।''

आपने साधन ग्रन्थों में बहुत से साधनों के चमत्कार पढ़े होंगे। आप ही अपने हृदय पर हाथ रख कहिये, घोर पापियों का उद्धार किस साधन के द्वारा हुआ है अब तक?

श्री वायु पुराण की बात है। सब साधन प्रभाव मर्मज्ञ, अनादि काल से अद्यपर्यन्त साधन फलों को देखते आने वाले, जगद्गुरु भगवान शंकरजी बहुश्रुत, सर्वलोक पर्यटक देवर्षि नारदजी से कहते हैं। देवर्षि! जहाँ–जहाँ घोर पापियों का सम्यक उद्धार देखने अथवा सुनने में आया है, एक मात्र श्रीराम–नाम से संभव हुआ है? भगवान शंकर अपने कथन के प्रमाण में सत्य की दोहाई दे रहे हैं।

''यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा।
तत्सर्व राम नाम्नैव सत्यं सत्यं बचो मम।।''

श्री गोस्वामी जी अपने कथन का समर्थन करते हैं

' पतित पावन राम नाम सो न दूसरों।
सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।' (श्री विनय पत्रिका)

जासु पतित पावन बड़ बाना। गावहिं कवि श्रुति संत पुराना।।
ताहि भजहिं मन तजि कुटिलाई। राम भजे गति केहि नहिं पाई।।
पाई न केहिं गति पति पावन राम भजि सुनु सठ मना।
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना।।
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरास जे।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते।। (श्रीमानस ७/१३०/१)

सर्व साधन सार नाम जप

कर्म, वैराग्य, ज्ञान, योग, उपासना, प्रपत्ति आदि वेदोक्त शुभ साधना समुदाय अपनी–अपनी जगह सभी सत्य हैं। परन्तु युग धर्म के अनुरूप उनका सुविस्तृत विधि विधान से निर्वाह होना दुष्कर है। श्री रामनाम जप ऐसा सारभूत साधन है, जिसके करने से सभी उपर्युक्त साधनों के परित्याग जन्य दोष लगना तो दूर रहा, उल्टे अन्य साधनों की अपेक्षा, इससे असंख्य गुणित अधिक लाभ है। अत: सभी युगों में श्रीरामनाम सब साधनों का सार माना जाता है, परन्तु कलिकाल के लिए एक मात्र यही उपाय सुकर रह गया है।

पहले हम श्रीनाम साधन को सर्वसार, शास्त्रीय पद्धति से, सिद्ध करेंगे।

''एहि मह रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।''

श्री वृहद्विष्णु पुराण में श्रीपराशरजी ने अपने शिष्य को बताया है कि वेद की सम्मति में श्रीरामनाम से बढ़कर; किसी भी साधन को नहीं बताया गया है। यह सारों का भी सार है, सबों को परमोत्तमा मुक्ति देने वाला है। अत: अपनी जीभ को समझाना चाहिये कि रसने! तुम मधुर प्रिय और रस सार को परखने वाली हो। अत: श्रीरामनाम रूपी सुस्वाद सुधा निरन्तर प्रीति पूर्वक पान किया करो।

'' हे जिह्वे रस सारज्ञे सन्ततं मधुर प्रिये।
श्रीरामनाम पीयूषं पिव प्रीत्या निरन्तरम्।।
नात: परतर: पायो दृश्यते सम्मतौ श्रुतौ।
सारात्सारतमं शुद्धं सर्वेषां मुक्तिदं परम्।।''

श्री मंत्र प्रकाश में कहा गया है कि मैं (भगवान शंकर) ने सभी सद् ग्रन्थों को, सभी शास्त्रों को मंथन करके, यही निर्णय किया है कि श्रीरामनाम स्मरण करनाही सार है, अन्य साधन इसके आगे व्यर्थ हैं।

' कृतं सद्ग्रन्थशास्त्राणां निर्णयं परमं मया।
श्री रामनाम स्मरणं सारमन्यं निरर्थकम्।। ''

श्री बड़े महाराज विभिन्न शास्त्रीय मतवादों के नाम गिनाकर, सबों का सार श्रीरामनाम ही को बताते हैं।

न्याय मतवादी ईश करता निरूपे निज,
काल सर्वेश सुवैशेषिक विचार है।
प्रकृत पुरुष युगवाद सांख्य शास्त्रमत,
पातंजलि बीच योग स्वच्छ निर्द्धार है।।

कर्मकांड कहत मीमांसिक समेत युक्ति,
ब्रह्म अद्वितीय उपनिषद् प्रकार है।
श्री युगल अनन्य वेद भाल में अमित मत,
रामनाम रटन कदंव मत सार है।।५३३।।

जैसे मधुमक्खी फूलों से सार रूप शहद निकालती है, उसी भाँति संतोंने श्रुति समूह मथ कर श्रीरामनाम निकाला है। अत: और साधनों को सारहीन मान कर सारभूत श्रीरामनाम का खूब रटन कीजिये। आलस्य तथा मीनमेष छोड़कर नामाभ्यास में पिल पड़िये। फिर मृत्यु की परवा आपको नहीं रहेगी।

''जैसे मधुमक्षिका निकासि सार फूलन ते,
गहत विशेष बात विदित विशेष है।
ऐसे ही सुसंत सुधि श्रुतिन समूह मथि,
सु राम नाम रंग रूप वेष है।।
नाना मतवाद बहवाइये असार जानि,
जिकर जमाइये सुनाम अतिशेष है।
श्री युगल अनन्य चित्त अंतक न त्रास तिल,
वारिये प्रमादता विहाय मीनमेष है।। ७०२।।

नाम रटना सब सार मतों का भी सार है। आप प्रेम, विश्वास, सुविधि हीन भी एकही वार नाम उच्चारण करेंगे, तो आपके सभी पाप नष्ट हो जायेंगे। प्रमाण में अजामिल है। श्रीरामनाम का अमितप्रताप अचिन्त्य है। सच्ची बुद्धि से विचारिये कि ज्ञान ध्यान तप आदि के साधनों में इतनी बड़ी पाप दाहन शक्ति है कहाँ? अत: हमारे तो जीवन का आधार, समस्त सारों के सार, श्रीनाम सरकार ही बन गये हैं।

''राम नाम रटन समस्त सार सार है।''
वारक वदन ते वदत कोई रीति प्रीति,
विगत प्रतीति तऊ कटे अघ भार है।
अहो अद्‌भुत् नाम प्रबल प्रताप पन,
समात नहिं करत विचार है।।
कहाँ ज्ञान ध्यान तप आदिक में शक्ति इहै,
साँची मति सहित निहारिये सुतार है।
(श्री) युगल अनन्य मेरो जीवन अधार यार,
राम नाम रटन समस्त सार सार है।। ७२५।।

एक तो कलियुगी मानव की आयु थोड़ी, उसमें भी अनेकों रोग ग्रसित यह शरीर। शुद्ध अहार के अभाव में मन भी स्थिर नहीं हो पाता। नाना साधन प्रतिपादक शब्दजाल तो बीहड़ बन के समान जान पड़ते हैं। युगों पढ़ते रहो, कोई निश्चित निर्णय नहीं निकलता। योग, ध्यान, ज्ञान तो इस युग में बनने से रहा। अतः मोह, ममता, त्याग कर, सभी मतों के सार, सभी ग्रन्थों के सार, सुधा के भी सार, श्रीरामनाम ही को समझकर, नामामृत का ही पान करो।

''जीवन अलप तामें रोग से ग्रसित तन,
मनहुँ न थीर कहो कहा मीत कीजिए।
कानन समान शब्दजाल को न ठीक मीत,
परत अनंत युग पढ़ै पै पतीजिये।।
योग ज्ञान ध्यान नेक वनि न सकत काल,
कठिन कराल नैन देखि के न छीजिये।
श्री युगल अनन्य मोह ममता बिसारि सब,
सारहू को सार सुधासार नाम पीजिये।। २१४६।।

श्रीरामनाम सारों के भी सार हैं। आनंद के तो सुन्दर मदिंर ही हैं। श्रीशंकरजी तथा श्रीहनुमत लालजी के हृदय में ऐसे गूंजित रहते हैं, मानों प्रकाशमान रत्न के हार पहने हों। घोर भयंकर कलिकाल जन्य दोष दुख को काटने के निमित्त मानों तीक्ष्ण तलवार है। श्रीनाम अशरण शरण हैं। गुणहीनों के भी अधार हैं, अमानी को मान देने वाले हैं। अपराधपुंज हरनेवाले हैं। श्री बड़े महाराज कहते हैं कि मेरे मन ने भली—भाँति स्वीकार कर लिया है कि श्री राम नाम समस्त रसों की खान है, प्राणों के प्राण, जीव के जीवन रूप हैं।

''सारन को सार मोदमंदिर बहारदार
हर हनुमान हिय हार दुतिमान हैं।
कठिन कराल काल कहर कलंक कुल
कतल करन हित निसित कृपान हैं।।
असरनसरन हरन अपराध पुँज
अगुन अधार औ अमानिन को मान है
श्री युगल अनन्य मन मानि लियो भली—भाँति
नाम रस खान प्रान प्रान जीव जान है।। २६५२।।

उपर्युक्त सभी कवित्त श्री सीताराम नाम सनेह वाटिका से उद्धत किए गए हैं।।

वेद के प्रकांड विद्वान् महामहोपाध्याय श्री देव स्वामी जी अपनी सरल किंतु गूढ़ार्थगर्भित भाषा में भी यही कहते हैं।

''यही सार निचुरि रह्यो रामनाम रटन। याही में ज्ञान योग तीरथ कोअटन।।
राम नाम हीर और साधन सब छटन। रूप में मिलावन की नाम ही में घटन।।

नाम ही को मूरि कहत वेद बड़े डटन। यामें कछु नहिं दिखात सटन बटन जटन।।
देवमंत्र नामहि को बक्र भाव नटन। सीधी पथ पाइ चहत भली मजा पटन।।''

स्वल्पायास से भी महान फल देने वाला नाम जप है।

अन्यान्य साधनों को छोड़कर श्रीसीताराम नाम रटने को इसलिये भी कहा जाता है कि यह साधन अन्यों की अपेक्षा सुलभ है, सुकर हैं। स्वल्प प्रयास और फल सब साधनों की अपेक्षा बहुत अधिक और वह भी सुनिश्चित रूप से प्राप्त होने वाला है।

''सुमिरत सुलभ सुखद काहू लोकलाहु पर लोक निबाहूँ।। श्रीमानस नाम वंदना

श्रीभविष्योत्तर पुराण में देवर्षि नारद जी महामुनि श्रीभरद्वाज जी को बताते हैं कि— मुनिवर! योगादि साधन पार लगना दुस्तर है। अत: सुलभ सुमार्ग पर चलना चाहिये और वह है श्रीराम नाम का स्मरण। हे मुनि श्रेष्ठ श्रीराम नाम के प्रभाव से जो भक्त जनों के लिए दुर्लभ सर्वस्व हैं, वह श्रीराम रूप अनायास मिल जाते हैं। इससे भी बढ़कर कोई साधन फल है? हो तो बताइए?

'' योगादि साधने क्लेशं दुस्तरं सर्वथा मुने
अत सौलभ्य सन्मार्ग संगच्छेन्नाम संस्मरन्।।
अनायासेन सर्वस्वं दुर्लभं मुनि सत्तम
प्रभावाद्राम–नाम्नस्तु लभते रूपमद्भुतम्।।''

श्रीनारदीय पुराण में कहा गया है कि भला बताइये तो अपनी जीभ, अपना काम, नाम जपना – इसमें कौन पहाड़ ढोना है। जीभ हिलाइये, नामोच्चारण किया, हो गया सम्पूर्ण काम और जानते हैं, इस थोड़े से परिश्रम में फल क्या मिला? अनंत! दिन–रात पाप तो बनते ही हैं। कलियुगी जीव जो ठहरे। जान बूझ कर तो पाप नहीं ही करना चाहिये, परन्तु अनजान में भी तो अनेक पाप बन जाते हैं। रात दिन नाम रटते रहिये। अज्ञानजन्य पाप मिटते रहेंगे।

'आयास: स्मरणे कोऽस्ति समृतो यच्छति शोभनम्।
पाप क्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशम्।।'

श्रीपुराण संग्रह में श्रीसूत जी ने श्रीशौनक जी से कहा है कि सभी मंत्रों में श्रीराम–नाम श्रेष्ठ हैं। श्रीभवानीवल्लभ के तो जीवन ही हैं। चित्त शुद्ध करनेवाले नाम जप ही है। सभी प्राणिमात्र के लिये सुलभ हैं। बिना मिहनत के ही सिद्धि लूटिये। अत: सभी साधनों को छोड़ छाड़कर प्रेम पूर्वक नाम जप में ही पिल पड़ना चाहिये।

सर्वेषां मन्त्र वर्गानां राम नाम परं स्मृतम्।
गोप्यं श्री पार्वतीशस्य जीवनं चित्त शोधकम्।।
सुलभं सर्व जीवानामनायासेन सिद्धिदम्।
सर्वोपायं विहायाशु जप्तव्यं प्रेमतत्परै:।।

और मंत्रों के जप के समय का प्रतिबन्ध है। यथा प्रातः सायं जपो, दोपहर दिन निशीथ काल में मत जपो। श्रीराम नाम जप में समय की छूट है, जब चाहो जपो। अन्य साधन में श्रद्धा विश्वास सद्भावना की अपेक्षा है। श्रीराम नाम का भ्रम से भी उच्चारण, सर्व दुःख नाश करने वाला है। ऐसा क्रियायोगसार नामक आर्ष ग्रन्थ में कहा गया है।

''स्मरणे रामनाम्नस्तु न कालनियमः स्मृतः।
भ्रमादुच्चार्यमाणोऽपि सर्वदुःखविनाशनः।।''

श्री हिरण्यगर्भ संहिता में श्रीअगस्त्यजी ने श्री सुतीक्ष्णजी से कहा है कि परम सुखदायक श्रीरामनाम को परवश होकर भी उच्चारण करने वाले समस्त पापों से रहित होकर, नित्य रामधाम श्री साकेत नगरी को जाते हैं।

''अभिरामेति यन्नाम कीर्त्तितं विवशाच्च यैः।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम्।।''

विवशता पूर्वक किया गया नामोच्चारण, भगवद्धाम देने वाला है, इस पर एक सतगोष्ठी में सुनी गई आख्यायिका है। कहते हैं एक संत सेवी भगवद्भक्त का एकलौता लड़का भगवत्–विमुखी था। भगतजी की साधुसेवा एवं भगवद्भजन से उसे बड़ी चिढ़ रहती थी। दरवाजे पर कोई साधु पहुँच जाय, तो वह द्वेषवश घर छोड़कर बाहर बाहर फिरा करे, घर में नहीं घुसे। श्रीरामनाम न तो वह स्वयं लेता था, न सुनना चाहता था। भगतजी के उसके परलोक बिगड़ने का बड़ा सोच था। कहा माने तब न? आये दिन भगतजी उस बच्चे के कल्याण के लिए समागत संतों से अनुनय विनय किया करते थे। भई, वह साधु सम्मुख हो तब न उसे समझा–बुझाकर, भजन में प्रवृत्त कराया जाय। उसे तो साध ु के मुख देखने में भी परहेज था। एक बार एक हट्टे–कट्टे युवक नागा बाबा भगतजी के घर पहुँचे। भगत जी के बच्चे की भगवद्विमुखता पर कलपते हूए सुनकर, बाबा को तरस आ गई। बाबा महाराज ने भगतजी को आश्वासन दिया कि मैं उसके परलोक बनाने का ठेका लेता हूँ, भगत जी तुम चिन्ता मत करो। मुझे प्रसाद पवा कर, घर के एक कोने में छिपा दो, और बाहर इस बात की घोषणा कर देना कि बाबा तो खा पीकर, चले गये। ऐसा ही हुआ। बच्चे ने दूर से आहट ली। घर में किसी साधु द्वारा न तो कथा कीर्त्तन, न भगवत चर्चा हो रही थी। घर सूना सन्नाटा सा लग रहा था। पड़ोसियों से पूछताछ करने पर, मालूम हुआ कि इस समय घर में कोई साधु नहीं है। बच्चा घर में निर्भय हो घुसा। ज्यों ही बैठना चाहता था कि नागा ने घर के कोने से निकलकर, उसकी गट्टी पकड़ ली। वह कलाई छुड़ाकर, भागना चाहता था, परन्तु बाबा के जोर के सामने उसकी कुछ भी नहीं चली। बाबा ने कहा, कह बच्चे सीताराम। बच्चा का तो मुख कसकर बंद था। मानो मुख पर ताला पड़ा हो। बाबा पटककर, उसकी छाती पर चढ़ बैठे। नट्टी दबाते हुए बोले – कहो सीताराम नाम, नहीं तो अभी तेरा दम लेता हूँ। उसने दम घुटने की नौबत देखकर बड़ी जोर से चिल्लाया –बाप रे मैं

नहीं कहूँगा सीताराम। वस हो गया। बाबा ने उसे छोड़ दिया और सिखाया बेटा, जब मरने पर यमदूत पकड़कर, यमराज के पास ले जायँ तो तू पहले अपने विवशता से उच्चारित एक बार के सीताराम नाम कहने का पूरा–पूरा फल माँगना। यह बात याद रखना। जाओ तुम्हारा काम बन गया।

भगवत्‌विमुख जीवन में उसके अपराधों की गिनती नहीं रही। मरने पर यमदूत द्वारा, यमराज के पास उपस्थित कराया गया। धर्मराज ने उसके शुभाशुभ कर्मों का लेखा करके पूछा, तुम अपनी करनी पर, चिरकाल पर्यन्त भोगो जाकर। हाँ, एक बार विवशतापूर्वक रामनाम तुम्हारे सुकृत खाते में लिखा है। उसका फल चाहो तो पहले मिल सकता है। उस भगवत्–विमुखी भगत पुत्र को नागाबाबा की दम घुटाने वाली शिक्षा आजीवन याद थी। वहाँ भी याद आयी। उसने तनकर कहा धर्मराज मैं अपने नामोच्चारण का पूरा पूरा फल लूँगा। मैं आप से एक बार वैवश्य नामोच्चारण का फल अधिक नहीं माँगता, तो किंचित कम भी मुझे स्वीकार्य नहीं है। द्वादश महाभागवतों में प्रसिद्ध धर्मराज बड़े चक्कर में पड़े सोचा–

''राम नाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा।।''

नाम की मिति होती, तो उसके फल का आँकड़ा लगाया जाता। न्याय भी करना मेरे लिए विचित्र है। चलो, लोक पितामह ब्रह्माजी से पूछा जाय, एक नामोच्चारण का क्या फल? उस अभियोगी को साथ लेकर, श्रीब्रह्माजी के यहाँ धर्मराज पहुँचे। ब्रह्माजी बाबा ने सारा वृतान्त सुनकर कहा मैं भी संतोषप्रद निर्णय नहीं कर सकता। चलो, 'नाम प्रभाव जान सिव नीको' से पूछो। श्रीशिवजी ने कहा मैं इतना तो अवश्य जानता हूँ कि नाम का प्रभाव बहुत अधिक है। पर उस फल को तराजू के पलड़े पर तौल कर नहीं बता सकता। चलो नामी के पास जाकर पूछें। सब के सब अभियुक्त के साथ स्वयं श्रीसाकेताधीश्वर के पास पहुँचे। सारा वृत्तान्त सुनकर, प्रभु ने उस अभियुक्त को गोद में बैठा लिया और सबों को विदा करते हुए कहा। एक बार के वैवश्य नामोच्चारण का भी यही फल है कि वह मेरी गोद में लाडला बनकर अनंत काल तक मेरे धाम में परमानंद भोगता रहे। आप सब जायँ, यह यहीं रहेगा।

''बोलो श्री सीताराम नाम की जय! जोरो से गर्जन कीजिए न जय जय सीताराम!!

हमारी उपर्युक्त आख्यायिका से मिलती–जुलती एक आख्यायिका पाठक कल्याण के भवन्नाम महिमा विशेषांक के पृ. ४४९ में पढें और उसका चित्र ५२९ पृ. में देखें।

सुहृद पाठक! अपने हृदय पर हाथ रखकर, अपने ही जी से पूछिये। क्या ऐसा अन्य कोई साधन भी है, जो इस प्रकार विवशता से किंचिन्मात्र भी कराये जाने पर, पापियों को भी मुक्ति दे सके?

पुनर्जन्म दिलाने वाले स्वर्ग लोक प्राप्त कराने वाले साधनों की बात छोड़िये। जप – तप, यज्ञ दान, तीर्थ व्रत आदि कर्मकांड तो स्वर्ग ही देते हैं। हाँ, ज्ञान और योग को कैवल्य मोक्ष का साधन अवश्य माना जाता है, श्रीमानसजी के ज्ञान दीपक प्रसंग पढ़ने से पता लगता है कि ज्ञान की अन्तिम भूमिका पर पहुँचे हुए ज्ञानियों को भी विषय एवं ऋद्धि सिद्धि पतन करा देती है।

इसी से तो श्री काकर्षिजी ने कहा है—

''कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक।
होइ घुनाक्षर न्याय जो पुनि प्रत्यूह अनेक।।''

योग द्वारा कैवल्य मोक्ष के द्वार तक पहुँचे हुये योगियों का भी पुनर्जन्म होना—

''शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।।'' गीता ६/४१

वाली श्री गीता वचन से स्पष्ट है। और अधिक किस साधन को श्रीरामनाम की तुलना में लाया जाय?

अभी श्रीनाम साधना की सुकरता के कुछ और आप्त प्रमाण देने रह गये हैं। त्रिकालदर्शी परमार्थ तत्त्व द्रष्टा महर्षियों की दिव्य प्रज्ञा द्वारा निर्णीत सिद्धान्त किसे नहीं मान्य होगा?

श्री वैश्वानर संहिता का कहना है कि और सत्कर्मो की भाँति श्रीरामनाम के उच्चारण के लिए उपयुक्त खास देश या विहित काल का प्रतिबन्ध नहीं है। चाहे जिस जगह, चाहे जिस समय, जी में आवे नामोच्चारण करते रहिए। शौचालय में बैठे—बैठे भी आप नाम जप सकते हैं। नाम जप के लिए स्नानादि द्वारा शुचि हो लेना आवश्यक नहीं। श्रीरामनाम पावनों को भी पावन बनाते हैं,अपावन को पवित्र करना कौन बड़ी बात है? ऐसी सुविधा यज्ञादि साधनों में कहाँ पाइयेगा?

''न देश काल नियमो न शौच निर्णयः।
विद्यते कुत्रचिन्नैव राम नाम्नि परे शुचौ।।''

''भाव कुभाव अनख आलसहू। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।''

तुलसी अपने राम को, रीझि भजो या खीझ।
उलटो सीधो जामिहैं, खेत परे को बीज।।

श्रीलोमश संहिता में जगद्गुरु भगवान शंकरजी की उक्ति है कि एकमात्र रामनाम ही स्मरण करो, सदा सुना करो, पढ़ो, कीर्तन करो। रातदिन श्रद्धापूर्वक नामाभ्यास करते रहो। सदा इसकी विधि के द्वार खुले हैं। कभी निषेध नहीं। सब जगह, सब समय सभी मनुष्य जाति के द्वारा राम नाम जपा जा सकता है।

''स्मर्तव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा।
पठितव्यं कीर्तितव्यं च श्रद्धायुक्तै र्दिवानिशम्।।
विधिरूक्तं सदैवास्य न निषेधः क्वचिद्भवेत्।
सर्वदेशे सर्व काले सर्वैश्व नरजातिभिः।।''

श्रीशुक संहिता में कहा गया हैं कि श्रीरामनाम के जपने वाले के समीप कृतार्थरूप सिद्ध महानुभाव स्वयं आकृष्ट होकर आते हैं। जापक के सभी पापों का उच्चाटन हो जाता है। अतः पाप भाग जाते हैं। चांडाल जाति के बेगूँगा मानव भी श्रीनाम जपने के अधिकारी हैं। मुक्ति जापक के वश में हो जाती है और मंत्रो की भाँति इसके अनुष्ठान में दीक्षा (संकल्प) नहीं लेनी पड़ती। न जपांत में दक्षिणा बाँटना आवश्यक है। हवन, तर्पण आदि पुरश्चरण विधि भी इसमें आवश्यक नहीं है। जीभ पर नाम का स्पर्श हुआ, अर्थात् जीभ से नामोच्चारण किया,

कि फल लगा। सद्य: अमोघ फल लीजिये नाम जप से।

''आकृष्ट: कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा—
माचाण्डालममूक लोक सुलभो वश्यं च मुक्तिस्त्रिय:।
नो दीक्षां न च दक्षिणां न च पुरश्चर्या मनागीक्षते
मन्त्रोऽयं रसनास्पृशेव फलति श्रीरामनामात्मक:।।''

हारीत स्मृति नामक धर्मशास्त्र निर्णय देते हैं कि श्रीराम नाम ''महामंत्र जोइ जपत महेसू'' है सही, परन्तु और मंत्र सिद्धि में पहले मंत्रानुष्ठान का संकल्प करना होता है। जपान्त में हवन तर्पण, मार्जन, विप्र भोजन आदि के द्वारा पुरश्चरण किया जाता है। अंग न्यास, कर न्यास आदि विधि भी जपारम्भ में आवश्यक मानी जाती है। तब जाकर मंत्र सिद्ध होता है। सब मंत्रों में शिरोमणि भूत श्रीरामनाम में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं। यह विधिहीन जप भी सिद्ध हो जाता है।

''विनैव दीक्षां विपेन्द्र पुरश्चर्या विनैव हि।
विनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिद: ।।''

हमारे श्री बड़े महाराज ने श्री नाम साधना को ही सरल सुगम उपाय भक्ति मुक्ति पाने का बताया है। मूल वाणी पढ़िये—

''नाम की उपासना समान नहि आन है।
देश काल भाजन न दाम हूँ की चाह कछु,
सुचि न असुचिहू को रंचक प्रधान है।
बैठत उठत पुनि चलत असत मोद,
सोवत हूँ सतनाम जपे सुख खान है।।
संयम न एक टेक चाहिये विशेष उर,
फुरमत जानिं मानि आपनोई प्रान है।
(श्री) युगल अनन्य अभिराम आठ याम प्रद,
नाम की उपासना समान नहि आन है।। ८९७।।

''ज्ञान अज्ञान को भेद नहीं, निज नाम उचारन चाहिये प्यारे।
जाने अजाने जो उत्तम औषध खात नसे तेहि रोग सवारे।।
जाने अजाने जो गंग नहावत तासु को पाप कटे मल भारे।
श्री युग्म अनन्य विचारिये ऐसेहि नाम रटे भवसागर पारे।।९०३।।

राम नाम मंत्र मौलि मधुर महान मन,
मोदक महाल माल मरम मुफीद है।
सहज सुभाय सुचि सुगम उपाय अघ,
अखिल अपाय कर कारन प्रसीद है।।

वेद भेद पावन न अगम अतीव पुनि,
धुनि ध्यान धारि जामे जोगी जन नींद है।
श्री युगल अनन्य प्रान प्रीतम हमेश एक,
रस अविकार नाम नवल नफीद है।।२५०९।।

नामाभास से मुक्ति

अजामिल ने अपने पुत्र का नाम नारायण उच्चारण किया था। उसे यह पता नहीं था कि यह भगवन्नाम भी है। फिर भी कृपालु भगवान ने उसे अपने नाम पुकारने का फल दिया। वाराहपुराण की आख्यायिका प्रसिद्ध है। एक यमन वनैया सूअर के धक्के खाकर मर रहा था। मरने के पहले कराहते हुए सुनकर लोग दौड़ पड़े। पूछे बड़े मियाँ क्या हुआ? उसने दम छोड़ते–छोड़ते कहता मरा कि 'हराम' मारा। प्रभु ने उसका अर्थ मान लिया कि वह मुझे पुकार रहा है। कहता है ''हा राम मारा'' चलो प्रभु की रीझ से वह मृतात्मा भगवद्धाम पहुँचा। ऐसी अनेक आख्यायिकाएँ पुराणों में पायी जाती है। ''सी सी सिसकत नाम विचारो'' एक ठंडी के मारे मरने वाला, मरने के पहले ठंड से सी सी करते हुए मरा। उसी सीत्कार में श्री सीतानाम का आभास पाकर, उसे मुक्ति मिली।

कोई ऐसा भी मंत्र है जो उल्टा जपने पर भी मुक्ति दे? मरा मरा कहने वाले व्याध वाल्मीकि ऋषि बनकर ब्रह्मा समान बन गये हैं। है ऐसी छूट किसी साधन में? सीताराम न कहकर, अशुद्ध अक्षर सीतरम कहने वाले भी तर जाते हैं।

श्री पद्मपुराण में श्री सनत्कुमार जी का वचन है कि–

''नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथिगतं श्रोत्रमूलं गतं वा।
शुद्धं वाऽशुद्ध वर्ण व्यवहित रहितं तारयत्येव सत्यम्।।''

अर्थात् श्री रामनाम चाहे वचन से उच्चारण करे, स्मरण कर ले, कान से सुन भर ले। शुद्धाक्षर हो न हों अवश्य संसार से तार देंगे, इसमें कोई व्यवधान नहीं पड़ेगा। पाठक योग, ज्ञान, तीर्थ, व्रत आदि की ऐसी महिमा है कि एक ही बार के धोखे से किया गया कर्म भी संसार से मुक्त कर दे? हो तो हम भी नाम छोड़कर वही करें बताइये।

युगधर्म नाम जप

गुणग्राही, सारभागी सत्पुरुष कलियुग का इसलिये आदर करते हैं कि इस युग में एकमात्र नाम संकीर्तन से ही सभी प्रकार के स्वार्थ सिद्ध हो जाते हैं।

कलिं सभायन्यार्या: गुणज्ञा:सारभागिन:।
यत्र संकीर्तनेनैव सर्व स्वार्थोऽभिलभ्यते।।
(श्री भागवत)

श्री गरुड़पुराण में भगवान श्री विष्णुदेव स्वयं श्रीमुख से अपने परमप्रिय पार्षद श्री गरुड़ जी से कह रहे हैं कि कलिकाल में सभी पाप नामसंकीर्तन से ही नष्ट होते हैं, अत: श्री रामनाम का कीर्तन करते रहना चाहिए।

'कलौ संकीर्तनादेव सर्वपापं व्यपोहति।
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कार्यं संकीर्तनं वरम्।।'

ऐसे ही श्री ब्रह्मसंहिता में जगद्गुरु भगवानशंकर का वचन है कि कलियुगी जीवों का हृदय इतना पापग्रसित होता है कि श्री रामनाम के अतिरिक्त अन्य साधन करने का उन्हें अधिकार ही नहीं है। ऐसे पापीजीव परमसमर्थ अमोघफलदायक श्री रामनाम ही का सदा आदर पूर्वक स्मरण करता रहे, तो उसे अनायास मुक्ति मिल जायगी।

'रामेति वर्णद्वयमादरेण सदा स्मरन्मुक्तिमुपैतिजन्तु:।
कलौ युगे कल्मषमानसानामन्यत्र धर्मे खलु नाधिकार:।।'

श्री पतञ्जलिसंहिता का कथन है कि कलिकाल में श्री राघव जी के नामजप से ही नित्य साकेतधाम की अनायास और सुनिश्चित रूप से प्राप्ति हो जाती है। अत: सभी युगों से श्रेयस्कर कलि प्रशंसित होता है। इसी दृष्टि से कलि समस्त कल्याण का निवास है।

'कलौयुगे राघव नामतस्पदा परं पदं यात्पनयासतोध्रुवम्।
सर्वैर्युगै: पूजितमुन्नतंयुगं समस्तकल्याणनिकेतनं वरम्।।'

श्री शारदारामायण के मतानुसार श्रीरामनाम का समुज्ज्वल माहात्म्य तो चारो युगों से निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ है, परन्तु कलिकाल में सब प्रकार से श्री रामनाम ही एकमात्र कल्याण का सावन है।

'चतुर्युगेषु श्री रामं नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।
सर्वोत्कृष्टं न सन्देहो कलौ तत्रापि सर्वथा।।'

यही बात श्री मानसजी भी कहते हैं–

'चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहि आन उपाऊ।।'

कलिकाल में बड़भागी वही है जो श्री सीतारामनाम जप का अवलम्ब दृढ़तापूर्वक पकड़े हुए है। सतत नाम जपने वाले का इस लोक में भरण – पोषण सार सम्हार श्री नाम सरकार आदर्श माता – पिता के समान करते रहेंगे, उनके सभी मनोरथों को पूरा करते रहेंगे तथा परलोक में परम मित्र की भाँति सब प्रकार की सहायता करेंगे।

'रामनाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।''

''कलि नाम कामतरु रामको।
दलनिहार दारिद दुकाल दुख, दोष घोर घन धाम को।।
नाम लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वामको।
तुलसी जग जानियत नामते, सोच न कूच मुकामको।।'

अर्थात् यह कलिकाल ही विशेषता की है कि इस युग में श्रीरामनाम सरकार ने, जापको के सभी मनोरथ पूर्ण करने के लिए कल्पवृक्ष का स्वभाव अपना लिया है। कल्पवृक्ष का स्वभाव है—

'जाइ निकट पहिचानि तरु, छाँह समन सब सोच।
माँगे अभिमत पाव जग, राउ रंक भल पोच।।'

श्रीनाम कल्पवृक्ष की ओट लेते ही, उनकी छाया में आना माना जायगा। कल्पवृक्ष अपनी छाया में आने वाले के शोकसंताप सब हर लेते हैं। श्रीनाम कल्पवृक्ष अपनी छाया में आने वाले का अन्न वस्त्र के अभाव में होने वाले दरिद्रता रूपी कष्ट, अनावृष्टि के कारण होने वाले दुर्भिक्ष का कष्ट तथा संसार रूपी सूर्य से तपित जापकों के दैहिक, दैविक, भौतिक नामक तीनों तापों को तत्काल हर लेते हैं। साथ—साथ उसके पापों के कारण लगे हुए दोष कलंक को भी मिटा देते हैं।

'वाम विधि भालहूँ न कर्म दाग दागि है।।

किसी पापी के पापकर्मों से अप्रसन्न होकर, प्रतिकूल (वाम) होकर विधाता, उसके ललाट में दुःख दुर्भाग्य लिखने जा रहे थे, उस पापी को देखा श्री रामनाम की ओट में, नाम जपते हुए। विधाता प्रसन्न होकर, उसके दाहिने हो गये। लिखने को दुःख दुर्भाग्य, लिख दिया सुख सौभाग्य। अर्थात् प्राख्धकृत दुःख भी पलट कर नाम प्रभाव से सुख बन जाता है। मुनीश श्री बाल्मीकि जी ने उलटे नाम जपने का प्रभाव दिखा दिया 'उलटा नाम जपत जग जाना। वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना'।। देवाधिदेव भगवान शंकर जी ने सीधा नाम जपकर यह दिखा दिया कि श्री नाम कालकूट जहर को अमृत कैसे बना देते हैं। नाम जपकर अमर हो गये। नाम ही के प्रभाव से चिताभस्म मुंडमाल आदि अमंगल साज के बावजूद भी आप सभी के मंगलकर्ता बने हुये हैं।

'नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साज अमंगल मंगल रासी।।'

अजी, जिस नामजापक को नाम जपका सहारा मिल गया उसकी मृत्यु अभी—अभी हो जाय, संसार से उसके कूच का नगाड़ा बज जाय, अथवा वह दीर्घजीवी बनकर संसार में बना रहे, दोनों हाथों में उसके लड्डू हैं। श्री नाम सरकार उसे ऐसे परमानंद में मग्न कर देते हैं कि उसके लिये जीवन—मृत्यु दोनों समान बन जाते हैं। अतः नाम रूपी—सुन्दर रत्न तो लोक परलोक दोनों को सुखमय बना देने की क्षमता रखते हैं। वह बड़ा भारी अभागा है जो ऐसे सुखदायक श्री रघुनायक नाम से विमुख है।

पुनः श्री विनयपत्रिका के निम्नोद्धृत पद सं० १८४ भी विचारणीय है।

'राम नाम के जपे जाइ जिय की जरनि।
कलिकाल अपर उपाय ते अपाय भये,
जैसे तम नासिबेको चित्र के तरनि।।
करम कलाप परिताप पाप साने सब,
ज्यों सुफूल फूले तरु फोकट फरनि।
दंभ, लोभ, लालच, उपासना बिनासि नीके,
सुगति साधन भई उदर भरनि।।
जोग न समाधि निरुपाधि न विरागग्यान,
वचन विशेष वेष, कहूँ न करनि।
कपट कुपथ कोटि, कहनि रहनि खोटि,
सकल सराहैं निज निज आचरनि।।
मरत महेस उपदेस है कहा करत,
सुरसरि तीर कासी धरम धरनि।
राम नाम को प्रताप हर कहैं जपै आप,
जुग जुग जानैं जग बेदहूँ बरनि।।
मति राम नाम ही से, रति राम नाम ही से,
गति राम नाम ही की विपति हरनि।
राम नाम से प्रतीति प्रीति राखे कबहुँक,
तुलसी ढरैंगे राम आपनी ढरनि।।

अर्थात् मनुष्यों का हृदय दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तापों से सदैव जलता रहता है, उसे शीतल करने का एक मात्र उपाय है नाम जप। बात यह है कि श्री रघुवरजू के रामनाम, कृशानु (आग), भानु. (सूर्य) और हिमकर (चन्द्रमा) के भी उत्पन्न कर्त्ता हैं। अत: अनन्त चन्द्र के समान ताप जुड़ाने की शक्ति इनमें है। श्री महारामायण में भी कहा गया है कि श्रीरामनाम के अन्त्याक्षर मकार चन्द्रमा के बीज हैं। इनमें अमृत भरा है, जिससे जापकों को अपरिमित स्वाद मिलता है। पुन: प्रकार के चन्द्रबीज तीनों को शमन कर हृदय को जुड़ा देते हैं।

'मकारश्चन्द्रबीजं च पीयूष परिपूर्णकम्।
त्रितापंहरते नित्यं शीतलत्वं करोति च।।''

अत: हम जब तक सीताराम नाम नहीं जपेंगे, चाहे कर्म, ज्ञान, वैराग्य, योग, आदि किसी भी अन्य साधन के आश्रय में जायँ, हमारे तीनों ताप शान्त होने को नहीं।

'राम राम राम जीह जौलौ तू न जपि है,
तौलो तू कहीं ही जाय तिहूँ ताप तपि है।'' श्री विनय६८

यदि कहो कि परमार्थ साधन के लिए तो कर्म, उपासना, ज्ञान, योगादि और भी अन्यान्य साधन

हैं, तब केवल सीताराम नाम जपने ही का आग्रह क्यों किया जाता है? तो इसका उत्तर यह है कि उन सभी साधनों को कलि ने पंगु बना रखा है। कलिमल ग्रसित चंचल, विषय लोलुप चित्त से उपर्युक्त साधन सफल होने को नहीं। अत: कलिप्रभाव से सभी साधनान्तर पंगु हो गये हैं। छपी पुस्तकों में जो इनके प्रभाव बताये गये हैं वे मानों चित्रांकित सूर्य हैं। उनसे प्रकाश होना संभव नहीं, न अंधकार का निराश। अब एक—एक कर सभी साधनान्तरों में त्रुटि बताते हैं।

कर्मकांड को ही ले लीजिये। ये सेमरवृक्ष के तुल्य हैं। इनके शास्त्रोक्त लाभ को फूल समझिये। करने पर जो फल होते हैं वह निस्सार अर्थात् व्यर्थ। केवल परिश्रम ही परिश्रम,फल कुछ नहीं।

'यह कलिकाल सकल साधन तरु है श्रम फलनि फरो सो।
पाएहि पै जानिबो करम फल भरि भरि वेद परोसो।। १७३।।

'यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चित:।
वेदवादरता: पार्थ नान्यदस्तीति वादिन:।।
कामात्मन: स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रिया— विशेष— बहुलां भोगैश्वर्य—गतिं प्रति।। (श्रीगीता २/४२/४३)

अर्थात् जो सकामी पुरूष केवल फलश्रुति में प्रीति रखने वाले हैं, स्वर्ग को ही परमश्रेष्ठ मानने वाले हैं, स्वर्ग से बढ़कर कुछ नहीं है, ऐसा कहने वाले हैं, वे अविवेकी जन जन्मरूपी कर्मफल को देने वाली और भोग तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए बहुत सी क्रियाओं के विस्तार वाली, इस प्रकार दिखाऊ शोभायुक्त (पुष्पवत्) वाणी कहते हैं।

रही उपासना की बात। सो दंभ ने उपासना को निष्फल बना दिया। भजन तो करते नहीं किन्तु भजनानन्दी कहाने का अनेक स्वांग सजा लेते हैं। यही है हमारा दंभ। स्वांग न सजें, तो पैसे कैसे पुजावेंगे? पेटपूजा कैसे होगी? जगदगुरु भगवान् शंकरजी के वचन मानकर यदि आज हम दिखावटी उपासना न करके, केवल जीभ से ही नाम रटते होते, तो दंभ पूर्वक नाम जप भी हमारे शोक—समुद्र को तो सुखा ही डालते।

''संभु सिखवन रसनहूँ नित राम नामहि घोसु।
दंभहु कलि नाम—कुंभज सोच सागर सोसु।।''(श्री विनय १५९)

उपासना तो अपने इष्ट के परम धाम प्राप्ति के लिए की जाती है, किन्तु आज हम ऐसे चटोरे भोजनभट्ट बन गये हैं कि पेट भरने के निमित्त ही साधु वेष बनाकर ज्ञान वैराग्य की कथनी सीखकर, कथावाचक बनकर धनार्जन करने के चक्कर में पड़े हैं। गोस्वामी पाद ने अपने ऊपर आरोपण कर, हमारा ही भंडा तो फोड़ा है।

''भगति विराग ज्ञान साधन कहि बहुविधि डँहकत लोग फिरौं।
शिव— सरबस सुखधाम नाम तब बेचि नरकप्रद उदर भरौं।।
भगति ज्ञान वैराग्य सकल साधन एहि लागि उपाई।
केउ भल कहउ देउ कछु कोऊ असि वासना न उरते जाई।।''

मान बड़ाई, पूजा प्रतिष्ठा ही हम प्राप्त करना चाहते हैं, भगवत् प्रेम, भगवत्प्राप्ति से तो कोई मतलब ही नहीं है। पेट भर गया, साधु कहा लिया। हो गई देवदुर्लभ मानव शरीर पाने की सार्थकता। यदि भाग्यवश किन्हीं विशुद्ध संत महानुभाव के संग से भक्ति मार्ग पर चलने भी लगा तो साधन कोटिकी नवधाभक्ति से चलकर प्रेमापरा और प्रौढ़ा तक की पहुँच होने में अनेक दुर्गम घाटियों के पार उतरना बड़ा कठिन है। इसी से तो श्री गोस्वामीपाद ने कहा है कि–

''रघुपति भगति करत कठिनाई।

कहत सुगम करनी अपार, जानत सोइ जेहि बनि आई।''

कलियुग भक्ति मार्ग में भी बाधक बन जाता है। किन्तु भक्ति तो हमारा गन्तव्य लक्ष्य है ही। वहाँ पहुँचने के लिए भी हमें श्री सीताराम नाम जप का ही सहारा लेना पड़ेगा। क्योंकि?

''भक्ति–वैराग्य–विज्ञान शम दान दम

नाम आधीन साधन, अनेकं।। श्री विनय ४६।।

श्री लघु भागवत नामक सद्ग्रन्थ में भी कहा गया है कि स्वरूप, परमस्वरूप का जानना, विषय से मन का उपराम हो जाना, तथा परात्परतम प्रभु श्री जानकी रमण के पादाविन्द में प्रेमा, परा एवं प्रौढ़ा–भक्ति इन सबकी प्राप्ति परमानन्ददायक श्री सीताराम नाम संकीर्तन से सुगमता पूर्वकं हो जाती है।

''ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।

संलभेन्नाम संकीर्त्य ह्यभिरामाख्यमद्भुतम्।।''

भक्ति की सर्व्वोच्य दशा है प्रेम वैचित्री। वह श्री नाम जप से भिन्न साधनों से संभव नहीं। नाम रटने से वह भी शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है। इसमें कोई संशय नहीं।

''प्रेम वैचित्र्यता प्रोक्ता दुर्लभा साधनान्तरैः।

तां लभेद्रामनाम्नस्तु जपाच्छीघ्रंन संशयः।'' श्री प्रेमार्णव नाटके ।।

कलिकाल में योग, वैराग्य तथा ज्ञान आदि साधनों पर विचारना है। इस युग में अष्टांग योग साधना करो, परन्तु समाधि सिद्धि होगी नहीं। कारण कि काम क्रोध लोभ मोह आदि मान–सरोग इस युग में बड़े असाध्य रूप से लोगों को ग्रसे रहते हैं।

''एक व्याधि वस नर मरहि, ये असाधि बहु व्याधि।

पीड़हि संतत जीव वहँ, ते किमि लहहि समाधि।।'' श्री मानस

'जप तप संयम योग समाधी कलिमति विकल न कछु निरुपाधी' (श्री विनय)

यही बात ज्ञान वैराग्य की भी है।

काम, क्रोध, मद, लोभ मोह मिलि ग्यान विराग हरो सो।

विगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरों सो।। (श्री विनय १७३।४)

ज्ञानी, योगी, वैरागी आदि साधक अपने–अपने सम्प्रदाय के अनुसार ऊपर से संत–वेष बनाये हुए हैं, कुछ अपने–अपने मत की कथनी भी सीख ली है। करणी ढूँढ़िये, मिलना कठिन है।

ऐसे मतानुयायियों का परमार्थ कैसे बनेगा? अत: इन सभी साधनों से निराश होकर, श्री सीताराम नाम का कसकर अवलंब पकड़ना चाहिए। आप पूछ सकते हैं कि यदि नाम जापक भी विषय भोगी हुआ, ज्ञान, वैराग्य ब्रह्मचर्यादि सहायक साधन से विरहित हुआ, तो क्या उसकी सद्‌गति हो जायेगी? क्या वह श्री जानकी वल्लभ जू की धामप्राप्ति कर लेगा? उत्तर है कि यदि वह एक मात्र श्री नाम अवलंबन पर ही निर्भर है और नाम रटता रहता है तो उसे इन संयम हीनता के रहते हुए भी इष्ट धाम की प्राप्ति हो जायेगी और अवश्य होगी। प्रमाण श्री पद्मपुराण का है, देवर्षि श्री नारद जी परम भागवत राजा अम्बरीष के प्रति कहते हैं–

''अनन्य तयो मर्त्या भोगिनोऽपि परंतपा:।
ज्ञान–वैराग्य रहिता ब्रह्मचर्यादि वर्जिता:।।
सर्वोपाय विनिर्मुक्ता नाम मात्रैय जल्पका:।
जानकी वल्लभस्यापि धाम्नि गच्छन्ति सादरम्।।''

इस युग में असंख्य कपटपूर्ण कुत्सित मत मतान्तर चल पड़े हैं। आज श्री गोस्वामी जी की मानसवाणी सत्य–सत्य चरितार्थ हो रही है–

''श्रुति संमत हरि भगति पथ, संयुत विरति विवेक।
ते न चलहि नर मोह बस, कल्पहि पंथ अनेक।।

इन विविध पंथाइयों की रहनी देख आइये। घृणा होगी इनके प्रति। वचन भी विकारों से भरे ही बोलेंगे। इतने पर भी तुर्रा यह कि अपने–अपने मत की प्रशंसा में बड़ी–बड़ी डींगें हाँका करेंगे।

मरत महेस उपदेश है कहा करत............... जगदुरू शंकर जी सभी परमार्थ साधनों का मूल्यांकन अन्य परमार्थ वेत्तओं की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय रूप से करेंगे। विचारना यह है कि अपने परमप्रिय काशी वासी प्राणियों की सद्‌गति के लिए आप क्या उपाय करते हैं?

सब प्राणियों को मुक्त करना आप का अभीष्ट है। तो क्या मुक्ति की जन्मभूमि, धर्म की नगरी श्री काशी स्वयं अपने वासियों को अपनी शक्ति से ही मुक्त न कर सकेगी? अच्छा, यदि ये स्वयं स्वतंत्र रूप से इस कार्य में असमर्थ हैं, तो श्री गंगा जी तो मुक्त कर ही देंगी। जगदुरू को इन दोनों में से किसी पर भी भरोसा नहीं हैं मरण काल में स्वयं साक्षात्‌दर्शन देकर आप भी मुक्त नहीं कर सकते। तब तो मरणशील प्राणियों के कान में रामनाम सुनाने के लिए आप श्री काशी नगरी की गली–गली में दिन रात विचरते रहते हैं। भगवान शंकर जी अपने अमृत उपदेशों में सद्‌ग्रन्थों में श्री रामनाम ही जपना कल्याण का अमोघ उपाय बताते हैं और स्वयं भी ''तुम पुनि रामराम दिन राती। सादर जपहु अनंग अराती।।''

वेदों के उपवृहण रूप पुराण संहिताओं में सर्वत्र श्री राम नाम का प्रभाव गाया गया है। श्री रामनाम की महिमा सभी युगों में उजागर चली आई है।

अत: सिद्धांत यही निश्चित हुआ है। कि अपनी बुद्धि को श्रीराम नाम में लगाकर रामनाम में दृढ़ विश्वास जमा लें, श्रीराम नाम ही से अनुराग बढ़ावें, श्री नाम का दृढ़ भरोसा रखें। श्री राम नाम ही विपत्ति हटाने वाले हैं।

''छुटैं न विपति भजे विनु रघुपति श्रुति सिद्धांत निवेरो।। श्री विनय ८७!४

आवश्यकता है कि हम श्री रामनाम में दृढ़ विश्वास रखते हुए, प्रेमपूर्वक श्रीनामाम्यास करते रहें। हमारे पूर्वकृत पाप संस्कार प्रभुकृपा प्राप्ति में विलंब लगा सकते हैं। परन्तु हमें घबड़ाकर नामावलंब छोड़ना नहीं चाहिए। एक न एक दिन श्रीनामी श्री रघुनन्दन अपनी दया परवश होकर, हम पर भी अवश्य ढल जायेंगे। वश, हम क्षणमात्र में निहाल हो जायेंगे।

परमार्थ पथ का नवीन जिज्ञासु बड़े चक्कर में पड़ जाता है। यदि कोई उपदेशक कहता है बिना वैराग्य, ज्ञानी को ब्रह्म की प्राप्ति नहीं होगी। कोई निष्काम तथा अनासक्त होकर, त्रिविध कर्म करने का उपदेश देते हैं। कोई बताते हैं कि साधन के लिए स्वस्थ शरीर अपेक्षित है और रोग निवारण पूर्वक पूर्ण स्वस्थ होने के लिए योग आसन एवं योग क्रियाएँ ही उपयुक्त उपाय हैं। कोई वेद वेदान्त अध्ययन करने का परामर्श देते हैं। इस प्रकार बहुत भाँति के उपदेश होते रहते हैं। परन्तु है यह कलिकाल। इस युग में अन्यान्य उपाय से हृदय में शान्ति कतई नहीं होने को। बड़े महाराज का आदेश है कि जीभ से श्रीसीताराम नाम रटो भजन की कांति निखर आवेगी।

''काहू को संमत ज्ञान विराग अदाग–अराग क्रिया तिहु भाँती।
मानत योग सुरोग निवारक कोउ कहे पढ़िये श्रुति पाँती।
ऐसे ही नाना विधान वखानत पै कलिकाल किये नहि शांती।
युग्म अनन्य सियावर नाम रटे रसना चमके कल कांती।१४७

श्री व्यासजी, श्री वाल्मीकिजी, श्री अगस्त्य जी, श्री शेष जी, श्री शनकादिक, श्री उमापति शंकर जी, इन सबों ने श्रीरामनाम ही के प्रभाव से, कालबाधा में रहित श्री राम प्रेम धाम प्राप्त किया है। ये सभी प्रवीण नाम जापक रहे हैं। श्री नाम ही सुधा को पान करने योग्य, श्रीनाम ही को ध्यान करने योग्य समझकर नाम साधना की है। वह श्री नाम सदैव गुप्त रहे हैं। कलिकाल में कृपालु संतों ने इन्हें अपने अनुभव से प्रगटकर लिया है। अत: इस युग में अन्य साधन को घातक मानकर, श्रद्धा प्रेमपूर्वक अखण्ड नाम जप करना चाहिए।

''व्यास, वाल्मीकि, कल कलस–सुवन, शेष
शनक, उमेश राम नाम के प्रभावते।
पायो काल व्याल से विहीन पीन प्रेमपद
परम प्रवीन पेय ध्येय दिव्य भावते।।
सोई सतनाम कलिकाल में सुसंत सब,
गोप गुह्य प्रगट बतायो अनुभाव ते।
(श्री) युगल अनन्य बात दूसरी समान घात
मानिये अखंड नाम जापिये सुभाव ते ।।२२९।।

वैश्वानर संहिता में कहा गया है कि हे महाभाग! कलियुग के समान दूसरा कोई भी नहीं है। इस युग में श्री रामनाम के स्मरण, कीर्तन मात्र से परमपद मिल जाता है।

''नास्ति नास्ति महाभाग कलेर्युगसमं युगम्।
स्मरणात् कीर्त्तनाद्यत्र लभते परमं पदम्।।''
''घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्व दोषैक भाजने।
रामनामरता जीवास्ते कृतार्था: सुजीविन:।।
रामनामपरा ये च घोरे कलियुगे द्विजा:।
ते एव कृतकृत्याश्च न कलिर्बाधते हि तान्।।''
''वेद पुरान विहाइ सुपंथु कुमारग, कोटि कुचालि चली है।
कालु कराल, नृपाल कृपाल न, राजसमाजु, बड़ोई छली है।।
बर्न विभाग न आश्रम धर्म, दुनी दुख—दोष—दरिद्र दली है।
स्वारथ को परमारथ को कलि, राम को नाम प्रतापु वली है।।८५
दमु दुर्गम, दान, दया, मख, कर्म, सुधर्म अधीन सबै धन को।
तप तीरथ साधन, जोग विराग सोहोई, नहीं दृढ़ता मन को ।।
कलिकाल कराल में रामकृपालु यहै अवलंबु बड़ो मन को ।
'तुलसी सब संजमहीन सबै,एक नाम अधारु सदा जन को ।।

श्री कबीर जी महाराज कल्याण का साधन एकमात्र श्रीरामनाम ही को बताते हैं—
'कबिरा कहता जात है, सुनता है सब कोय।
राम कहे भल होइगा,नहितर भला ना होय।।'

राजकुमार श्री रघुवर दास जी, अमरावाला वगसरा कहते हैं :—

श्रुति भी ''यस्यनाम महद्यश: अर्थात् जिन प्रभु से बढ़कर उनके नाम का सुयश अधिक महान है, कहकर प्रशंसा करती हैं ऐसे भगवन्नाम का प्रभाव चारों युगों में फैला हुआ हैं परन्तु कलिकाल में तो साक्षात् भगवत्प्राप्ति करने के लिए यही सबसे बलवान्,शीघ्र अभीष्ट सिद्धिप्रद सर्वोत्कृष्ट और अत्यन्त सुलभ साधन है। यही सर्व शास्त्रों का तथा संतों का अनुभवपूर्ण सिद्धान्त हैं।

''चहुँ युग चहूँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहि आन उपाऊ।।''
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु बिचार।
श्री रघुनायक नाम तजि, नाहिन आन अधार।।''

विद्या—व्यसन छोड़ कर नाम जपिये

कहते हैं श्री गोस्वामीपाद अपने महाप्रस्थान के पहले यही अंतिम उपदेश दे गये हैं कि—

''अलप तो अवधि जीव तामें बहु सोच पोच
करिबे को बहुत पै कहा कहा कीजिए।

पार न पुरानहूँको वेदहूँ को अंत नाहिं
वानी तो अनेक चित्त कहा कहा दीजिये।
काव्य की कला अनंत छंद को प्रबन्ध बहु
राग तो रसीली रस कहा कहा पीजिये।
सब बातन की एक बात तुलसी बताये जात
जन्म जो सुधारा चाहो रामनाम लीजिये।।"

और भी कहा गया है कि–

"अनेक शास्त्रं वहुलाश्च विधा स्वल्पश्च कालो बहु बोधितव्यम्।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसों यथा क्षीरमिवाम्बु मध्यात्।।

अर्थात् शास्त्र अनेक हैं, विद्या बहुत हैं। कलियुगी आयु स्वल्पकालीन हैं।पढ़ने जानने की बात इतनी अधिक कि जीवनपर्यन्त सधनेवाली नहीं। तो क्या इसी में जीवन खपा देने से मुक्ति मिल जायगी? कदापि नहीं। शास्त्र कथित सार – वस्तु, तो श्रीरामनाम है। इसी को ग्रहण कीजिये। हंस से सीखिये नीर छोड़ क्षीर ग्रहण करना। विद्या समुद्र को मथ कर सार रामनाम अमृत निकाला गया है – श्री मानसमंगलाचरण

"ब्रह्माम्भोधि–समुद्भवं ...... श्रीराम नामामृतम्।।"

अर्थात वेद सिन्धु मथकर काढ़ा गया है श्रीरामनामामृत।

"पढ़व लिखव पंडित को काम। भजलो भैया सीताराम।।"

पंडित बनकर जीविका चलावो, पाँव पुजावो। मुक्ति के लिये तो रामनाम ही पर लौटकर आना पड़ेगा।

भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो बाम रे।
रामनाम ही सो अंत सबही को कामरे।श्री विनय०।।

वंधन–प्रद बहु पढ़ना लिखना संत विशुद्ध पुकारत है।
अंत समय कछु काम न आवत संक पंक में डारत हैं।
सोई पंडित सोइ चतुर धर्मरत सोइ निज पर कहँ तारत हैं।।५।।
जो'सियलाल शरन' होइ निसिदिन श्री सियराम उचारत हैं।
अग्यानी सियराम नाम तजि पोथिन में सिर मारत हैं।
बिना विचारे सुर दुर्लभ तनु पाइ भजन बिनु हारत हैं।।
पढ़ि पढ़ि पोथी झगरा ठानत बातन में वय गारत हैं।।।६।।
'प्रेमलता' गहि कांच किरच सठ नाम सुमनि महि डारत हैं
नाम रटत अनयास सुविद्या आपै हृदय प्रकासत हैं।
परम आचरज जन्य पदारथ गुप्त प्रगट सब भासत हैं।।

मोह—जाल भाववंध अविद्या जरामूल से नासत हैं।
'प्रेमलता' लहि नाम सरन जिउ फिरि तापत्रय त्रासत हैं॥ ९॥
चारिउ वेद पूरान छतीसो सास्त्र संहिता बहुतेरे।
नाटक यामल रहस भागवत काव्य कोष जहँ लगि जेरे॥
रामायन सत कोटि आदि सिय रामनाम के लखि चेरे।
रटत सदा सियलाल शरन सोइ आवत उर फुर बिनु टेरे॥ १०॥
महामूढ़ जो परिहरि नाम सु तिन्ह के लागि यतन करते ।
मूल त्यागि सींचत सठ पातनि अगय मोहवश हठ धरते॥
नाशवान तिहुँ काल आप जो अभिमत फल केहिं बिधि फरते ।
'प्रेमलता' अस जानि तर्क तजि रटहि नाम ते भव तरते॥ ११॥
पढ़ते हौ का पोथी थोथी पंडित कलि रजधानी में।
रटै नाम सियराम कामप्रद सार न कथा कहानी में।
आनहि सुन्दर ग्यान सिखावत आप बूड़ते पानी में।
'प्रेमलता' पाछै पछितैहौ भजे बिना प्रभु ज्वानी में॥ ७५।श्री हितोपदेश शतक

पढ़ना—लिखना तभी तक रुचता है जब तक कि नाम का सुखस्वाद जापक के लिए नाम जपते जपते प्रगट नहीं होता है। अनेक प्रकार की विद्या वाणी में उन्हें विकार विबाद और वासना ही दीखती है। नाम के द्वारा निष्कलंक अनुराग में मन रीझ जाता है।

''कौन पढ़े अब वेद पुरान कुरान किताब अनेक कहानी।
चित्त में छायो छबीलो सुनाम हमेश रसीलो रँगीलो गुमानी॥
होइहौ मस्त अवस्त अभय अनुराग अदागहिसे मनमानी।
(श्री) युग्म अनन्य विकार विवाद भरी लखिये सब वासना वानी॥ २६३॥

नाम रटते—रटते वेद वाणी का ज्ञान स्वयमेव जापक के मस्तिष्क में प्रगट हो जाते हैं। फिर उन्हें सांगोपांग वेदाध्ययन की कतई आवश्यकता नहीं रहती। श्रीनाम से ही तो चारों वेदादि प्रगट हुए हैं। जड़ ही क्यों न सीचें कि पत्ते—पत्ते की सिंचाई में व्यर्थ लगे रहें?

रट्यो जब नाम तब पढ़यो चारो वेद को।
वाकी नहिं बच्यो कोउ अंग उपअंग पुनि
नाहक विचार बिन सहे कौन खेद को।
भूल ही के सीचे भूमिरुह हरियात सब
लोक वेद विदित न यामें लेस भेद को॥
चिंतामनि पाय पर, चाह चित्त फेरि कौन
देखिये उघारि नैन धारि निर्वेद को।

श्रीयुगल अनन्य दृढ़ कीजिए प्रतीति पटु
रट्यो जौन नाम तौन पढ़यो चारो चारो वेद को।। ८८६।।

''जानकी नाथ निगाह भये बिन होत कहा पढ़ि के बहु पोथी।
नाम अनाम जपे जिय जौक,सनेह विहीन लखे सब थोथी।।
वाद विवाद बढ़ाय जहाँ जहाँ आपने आपने ही दिशि चोथी।
युग्म अनन्य सुधा सुचि स्वच्छ विहाय के मुरूष खात हैं मोथी।।१२१७।।

(श्रीसीताराम नाम सनेह वाटिकासे)

श्रीरामनाम रहस्य के परम मर्मज्ञ श्री बड़े महाराज की निम्नोद्धत वाणी को नाम–साधक गाँठ वाँधकर रखें–

''चारि वेद अंग औ उपांग के समेत
विधि सहित अनेक कोटि वार करे पाठ को।
तैसे ही पुरान संहिता पुनीत सुस्मृति
सहस करोर वेर कहे जीति आठ को।
नेम धर्म धारना समाधि कई जन्म लगि
करे जेते साधन उपायन के ठाठ को।
श्री युगल अनन्य तऊ एक बार रामनाम
सम होत नही देवतरुवर काठ को।।११२२।।''

भक्त गाथाओं में प्रसिद्व है कि श्री चैतन्य महाप्रभु, श्रीमाधवदास जी जगन्नाथी, श्री जीव गोस्वामी जी,श्री कबीदासजी, श्रीदेवस्वामी आदि भजनभटों के आगे दिग्विजयी पंडित गणों की अपनी–अपनी पठित विद्या निष्प्रयोजन प्रतीत हुई थी। अत: राम–नाम रट बिना केवल वेद शास्त्र में पठित विद्या तो आपको संसार से तारेगी नहीं। श्रीरामनाम जप सभी साधनों के प्राण–भूत है। प्राणहीन शरीर को शृंगार करके क्या होगा? नाम जपे बिना जाति अभिमान, शास्त्रज्ञान, जप,तप का बल आदि प्राणहीन शरीर है। श्रीभुसुंडि रामायण में कहा गया है–

''वेद शास्त्रं शतं वापि तारयन्ति न तं नरम्।
यस्तु स्वमनसा वाचा न करोति जपं परम्।।
राम नाम विहीनस्य जातिस्शास्त्रं जपस्तपः।
अप्राणस्यैव देहस्य पण्डनं तु बृथा यथा।।

श्री अध्यात्म रामायण में कहा गया है कि जिसने वेदशास्त्रों का अध्ययन नहीं किया, यज्ञादिक कर्म नहीं किये, यदि श्रीसीताराम सीताराम निरन्तर रटते रहते हैं, तो समझ लीजिए, उसने सभी वेदोदित कर्त्तव्य कर लिये।

'नाधीत वेद शास्त्रोऽपि न कृताध्वर कर्मक:।
यो नाम वदते नित्यं तेन सर्वं कृतं भवेत्।।

इसी प्रकार श्रीमन्त्र प्रकाश नामक आगम ग्रन्थ में कहा गया है कि–श्री ऋग्वेद, श्रीयजुर्वेद, श्रीसामवेद तथा श्री अथर्ववेद का उसने सांग अध्ययन कर लिया, जो निरंतर रामनाम रटते रहते हैं।

''ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदस्त्वथर्वण:।
अधीतास्तेन येनोक्तं श्री रामेत्यक्षर द्वयम्।।''

इसका कारण यह है कि श्रीरामनाम के रकार में सभी वेद उसी प्रकार निहित हैं जैसे बटबीज में वटका विशाल वृक्ष शाखा पल्लव सहित छिपा स्थित रहता है। ऐसा पुलह संहिता कहती है।

''बीजे यथा स्थितावृक्ष: शाखा पल्लव संयुत:।
तथैव सर्ववेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिता:।।''

श्री आदि पुराण में भगवान् श्रीकृष्ण श्री अर्जुन जी से कहते हैं–श्रीरामनाम ही सभी शास्त्रों के उत्तम तात्पर्यार्थ हैं। श्रीरामनाम ही वेद के मंगलमय सारसिद्धान्त हैं।

''नामैव चाङ्ग शास्त्राणां तात्पर्यार्थमुत्तमम्।
नामैव वेदसारांशं सिद्धान्तं सर्वदा शिवम्।।''

श्रीलघुभागवत में कहा गया है कि वेद शास्त्र के विस्तार में अवगाहन करने से क्या लाभ? तीर्थादिक कर्मों से मुमुक्षुओं का क्या प्रयोजन? यदि अपने लिए मुक्ति की अभिलाषा हो तो श्रीरामनाम का निरन्तर रटन करना चाहिए।

''किं तात वेदागम शास्त्र विस्तरैस्तीर्थादिकैरन्यकृतै: प्रयोजनम्।
यद्यात्मनों वाञ्छसि मुक्तिकारणं श्रीराम रामेति निरन्तरं रट।।

श्रीपद्मपुराण में कहा गया है कि वेद के सभी मंत्र का बार–बार जप करले, तो उससे कोटि गुणा फल एक बार श्रीरामनाम उच्चारण से ही मिल जायेगा।

''जपत: सर्ववेदाश्च सर्वमन्त्राश्च पार्वति।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनामैव लभ्यते।।''

नाम जप त्यागि पाठ पढ़े सो अधम है।

तौन सठ सुधा सुचि सरस सुपान तजि
हालाहल हेतु रचे यतन कुसम है।
पाय मनि मानिक अमोल लाल फेरि जड़
पाथर बटोरे वौरे मोद दम–दम है।।
महाराज संग नवरंग अंग पीठि देय
सेवे सो दरिद्र दुखी दूनो ताहि गम है।
श्री युगल अनन्य अवलोकिये नजर नेक
नाम–जप त्यागी पाठ पढ़े सो अधम है।।२०५१।।

''पढ़व लिखव तब लौं भलो, जब लगि मिले न नाम।
तुलसी ज्यौं रवि के उये,कहा दीप को काम।।''

ज्ञानार्जन छोड़ नाम जपिये

यदि आपको ज्ञानार्जन का ही शौक है तो श्रीसीताराम नाम के अभ्यास से वह भी हो जायेगा और होगा उपनिषद ज्ञान एवं योगज ज्ञान से भी बढ़कर दिव्य विमल विवेकज ज्ञान। श्री बड़े महाराज की निम्नलिखित रीति से आप श्री नामाभ्यास करें।

सीताराम नाम ही से उदै होत दिब्य ज्ञान
जामें लेशहू न कहूँ छप्यो सु अज्ञान है।
बातन के कहे कहा पेखिये प्रतच्छ रटि
एकरस होय के अनन्य एकतान हैं।।
मन मति रोकि के विशेष वासना से
रोम–रोम माँझ फेर कीजे नाम ध्यान है।
श्री युगल अनन्यनाम रहित हमारे मत
साधन समूह जैसे कायर कृपान है।। १५२२।।

श्री बड़े महाराज की बताई रीति में १–श्री नाम का अनन्य भरोसा रखना। २–निरन्तर तैलधारावत् नामरटना ३– एंकाग्र चित्त होकर,भाव करना कि मेरे रोम–रोम से नाम ध्वनि निकल रही है। इन तीनों रीतियों को अपने नामाभ्यास में सम्मिलित करने से दिव्य ज्ञानोदय होगा।

पुन: श्रीमानस जी के आदेशानुसार भी ''जाना चहहि गूढ़ गति जेऊ। नाम जीह जपि जानहि तेऊ।।'' जिह्वा से बैखरी वाणी में श्रीनाम उच्चारण करना भी आवश्यक हैं।

पठित ज्ञान निर्भ्रान्ति एवं यथार्थ होता नहीं। श्रीनाम जप द्वारा संभूत ज्ञान ही सच्चा ज्ञान होता है। इस पर श्री बड़े महाराज कहते हैं कि श्रीनाम के अतिरिक्त यर्थाथ ज्ञान क्या है,मानो आकाश में स्थित बन के पुष्प के समान,मृगतृष्णा के जल की भाँति,भूसा कूटकर निकाले गये अन्न के समान अयथार्थ है। ज्ञानार्जन के प्रयास में कोई लाभ नही होता,कृतज्ञता की हानि होती है,अनुभव प्रकाश छिप जाता हैं। बुद्धि की हानि होती है। बड़े–बड़े देवताओं और सिद्धों से सेवित नाम की उपेक्षा वही करे, जो काम विकार से मोहित हो रहा है। श्रीबड़े महाराज की विमल वाणी विवेचन करने योग्य है कि श्री रामनाम के ध्यान से उत्पन्न ज्ञान ही स्वच्छ ज्ञान है।

''नाम व्यतिरेक बोध व्योमवन सुम सम
सूरज–मरीचि तुष ताड़न बयान है।
नफा नहीं सफा वफा दफा होत जोत दवि
जफा फल पावत विशेष मति हान है।।
बड़–बड़े सिद्ध सुर सेवित सुनाम सद
शरन विहीन मोहे मदन मलान है।
युगल अनन्य वैन विमल विवेचनीय
सोई स्वच्छ ज्ञान जामें राम नाम ध्यान है।। १४१८।।''

श्री पुराण संग्रह के अनुसार आप मधुर—उपासना—सम्मत दिव्य युगल बिहार रहस्य का ज्ञान भी नामाभ्यास से प्राप्त कर सकते हैं तथा दिव्य बिहार देश की नित्य सखी यूथेश्वरियाँ स्वयं आपसे प्रत्यक्ष मिलकर,दिव्य देशका रहस्य बता जायेंगी। सच्चे ज्ञान का लक्षण है—''ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माही।।'' श्रीपुराण संग्रह में श्रीसूत जी ने श्रीशौनक जी से कहा है—

पृष्ट्वा रीतिर्यथा तथ्यँ गुरोः सान्निध्यतो मुने।
तत्पश्चादभ्यसेन्नाम सर्वेश्वरमतन्द्रितः ।।
स्वल्पाहारं तथा निद्रां स्वल्प वाक्यं निरन्तरम्।
मिथ्या संभाषणं त्यक्त्वा तथा च गमनादिकम्।।
इहैव लभते नित्यं परिकराणां समागमम्।
तथा नाना रहस्यानां ज्ञानं सांजायते ध्रुवम्।।

अर्थात् रहस्य जिज्ञासु को प्रथम श्री गुरु चरणाश्रित होकर, उनसे भाव—भावना सीखनी चाहिए। तत्पश्चात् उनकी आज्ञा के अनुसार सर्वेश्वर प्रभु श्री अयोध्याविहारीजू का मंगलमय युगल सीताराम नाम का आलस्य प्रमाद त्यागकर,तीव्र साधननिष्ठ होकर, अभ्यास करे। तीव्र नाम साधन के लिए आपको नियमित आहार धटाकर,एक तिहाई शेष रखना चाहिए। स्वल्प भोजी के विषय विकार, आलस्य क्षीण होकर, बुद्धि दिव्यदेश प्रवेशिणी बन जाती है। शयन से तमोगुण की वृद्धि होती है। प्राप्त ज्ञान भी क्षीण हो जाता है। बने तो निद्रा सर्वथा त्याग दें नहीं तो जितना कम हो सके। नाम जापक को चौबीस घंटे में दो तीन घंटे से अधिक समय सोने में नहीं लगाना चाहिए। बोलिये बहुत कम। वाणी से व्यवहार बढ़ता है। वाणी जितनी रुकेगी मन की दशा, उसी अनुपात में समुन्नत होगी। मिथ्या कथन से बढ़कर कोई पाप नहीं। नहिं असत्य सम पातक पुंजा। घूमने—फिरने वाले का मन दृश्य पदार्थों में बिखर जाता है। उसको एकाग्र करने में कठिनाई होती है। ऐसे संयम के साथ तीव्र नाम साधना करने पर आपको बिहार देश के नित्य परिकरों का यहीं समागम होगा तथा नाना रहस्य ज्ञान स्वयमेव स्फुरित होंगे और होंगे अवश्य।

श्री कबीरदास जी को कोई पठित विद्याभ्यास अधिक नहीं था। फिर भी अपने दिव्य ज्ञान से दिग्विजयी विद्याभिमानी पंडित को परास्त कर शिष्य बनाया। भक्तमाल में प्रसिद्ध है। उनका कहना था कि—

''तुम कहते हो पुस्तक लेखी। मैं कहता हूँ आँखों देखी।।''

अज्ञान जन्य जगत का नानात्व दृश्य का पुस्तकीय विद्या से अभाव होना संभव नहीं। यह अज्ञान तो नाम जप से मिटगा। मार्कण्डेय पुराण में श्री व्यासदेव जी श्रीसूत जी को बताते हैं।

''अज्ञानप्रभवं सर्व जगत्स्थावर जंगमम्।
रामनाम प्रभावेण विनाशो जायते ध्रुवम्।।''

श्री ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि श्रीराम नाम सर्व विकार रहित, शुद्ध मायातीत निर्वैर अन्यसाधन निरपेक्ष स्वयं सर्वसमर्थ हैं। इनके भजन से श्रीरामरूप का हृदय के भीतर तथा बाहर प्रकाश (अर्थात् साक्षात्कार) हो जाता है।

''निर्विकारं निरालम्बं निर्वैरं च निरञ्जनम्।
भज श्री रामनामेदं सर्वेश्वरप्रकाशकम्।।''

श्री पुराण संग्रह में श्रीसूत जी ने श्रीशौनक जी से कहा है कि श्रीरामनाम का परात्पर ऐश्वर्य हम बचन के द्वारा कैसे कहें ? श्रीरामनाम के स्मरण करते–करते सम्पूर्ण विश्व श्रीरामरूपमय दीखने लगता है। इसी को ज्ञान कहते हैं। पठित विद्या से ऐसी ब्राह्मी–दृष्टि किसको प्राप्त हुई है।

''नाम्नःपरात्परैश्वर्य कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणाल्लक्ष्यते विश्वं राम रूपेण भास्वरम्।।''

अद्वैतवादी वेद वचन के अर्थ न समझकर ,निर्गुण, निराकार ब्रह्मका प्रतिपादन करते हैं। उन्हें पूर्वापर प्रसंग समझने आवे कैसे ? ज्ञानगुमान में भरकर सद्‌गुण रहित हो रहे हैं जो। परात्पर ब्रह्म तो श्री अयोध्या बिहारी ही हैं। बात लोक वेद सर्वत्र प्रसिद्व हैं। सच पूछिये तो यही अयोध्या बिहारी ही, निर्विशेष अव्यक्त ब्रह्म तथा सगुण सविशेष ब्रह्म तथा अवतार –अवतारी कोटि ब्रह्म तीनों के कारण हैं। यह रहस्य ऐसा सूक्ष्म है कि नाम रटने के बिना समझ में आना कठिन है।

''श्रुतिन सदर्थ सुसमर्थ अज्ञ व्यर्थ करि
करै प्रतिपादन अगुन देहहीन को।
बूझि न परत जिन्हें पूरब अपर कछु
गहे गुन गारत गरूर गरबीन को।।
लोक वेद विदित विशेष सर्वेश अवधेश
सविशेष अविशेष बीज तीन को।
श्री युगल अनन्य राम नाम के रटन बिन
विशद विचित्र वस्तु लखे कैसे झीन को।। १४९३।।

हठयोग से नामयोग अधिक हितकर

सम्पूर्ण योगका लक्ष्य है चित्तवृत्ति का निरोध। वह कार्य तो नाम जप से, अनायास हो जाता हैं। श्रीनृसिंह पुराण में कहा है कि थोड़ी सी सावधानी से नाम जपे तो क्षिप्त विक्षिप्त तथा मूढ़ आदि चित्त की वृत्तियाँ, निश्चय पूर्वक बिटुरकर निरूद्ध हो जायेगी। वृत्तिनिरोध होने पर परमानन्द का खजाना हाथ लगेगा और भाव–समाधि भी सुलभ हो जायेगी।

''सर्वासां चित्तवृत्तीनां निरोधं जायते ध्रुवम्।
रामनाम प्रभावेण जप्तव्यं सावधानतः।।''

महात्मा गाँधी कहते हैं श्रद्धापूर्वक रामनाम के उच्चारण करने में एकाग्रचित्त हो सकते है। श्री गोस्वामी पाद श्री विनय में कहते हैं

राम नाम ते विराग जोग जप जापि हैं।
सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि

श्रीमानस जी में भी कहा है–

''नाम जीह जपि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच वियोगी।
ब्रह्म सुखहि अनुभवा अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।।''

योग रीति से भी न होने वाली हृदय की आनन्द कली नाम–जप से अनायास ही प्रफुल्ति हो जाती हैं। भीतर बाहर दोनों भाँति से नाम जप होना चाहिए श्री आङ्गिरस पुराण का कहना है कि–

''आभ्यन्तरं तथा वाह्य यस्तु श्रीराममुच्चरेत्।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदि पङ्कजे।।''

योग साधना से प्रगट होने वाले दश प्रकार के अनाहतनाद नाम जप से भी जाग्रत हो जाते हैं। श्रीभारत विभाग में योग से यह विशेषता बतायी गई कि मोक्ष प्राप्ति उसमें संदिग्ध रहता है, नामजप में निश्चित है और भगवत्प्रेम तो योग के वश की बात ही नहीं। यह तो नाम जप से ही होगा। श्रीरामनाम के प्रसंग में ही कहा गया है–

''महानादस्य जनक महामोक्षस्य हेतुकम्।
महाप्रेमरसेशानं महामोदमयं परम् ।।''
आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम्।
परंब्रह्म परं धाम परं कारणकारणम्।।''

बुद्धि को श्रीसगुण ब्रह्म रूप में निश्चल रूप से निविष्ट करना तथा चंचल चित्त को उन्हीं में लय कर देना, योग के लिए अगम है। यह नाम जप से ही होगा। आदि पुराण में योगीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का कथन श्री अर्जुन के प्रति है।

''नाम्नैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला।
नामैव चञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन् प्रलीयते।।''

श्री कौशल खंड में कहा गया है कि जिस योग में श्रीराम रूप का ध्यान तथा रामनाम जप नहीं,वह तो रोग रूप ही है।

''योगस्सरोगो नहि यत्र रामः।।''

जब योग से संभव सभी कार्य नाम जप से हो जाता है तब योग का आश्रय छोड़कर जो श्रीरामनाम जपमें तत्पर हैं,वही धन्य हैं और वही सौभाग्यशाली,एवं सच्चे शरणागत हैं।

''धन्याः पुण्याः प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ता कलौयुगे।
संविहायाथ योगादीन रामनामैक नैष्ठिकाः ।।'' (श्रीविश्वामित्र संहिता)

श्री सनक सनातन संहिता में कहा गया है कि जब नाम से ही सब कुछ प्राप्त हो जाते हैं तब नाम जप छोड़कर लोग ज्ञान योगादि साधनों में व्यर्थ ही क्लेश करते हैं।

''श्रमं मृषैव कुर्वन्ति ज्ञान योगादि साधने ।
कथं न भजते राम नाम सर्वेश पूजितम्।।''

''सरसत सत नाम सहजहि सहज समधिया ।
देह जनित भ्रमवास रास दुख सुख सम रहित उपधिया।।
मानामर्ष तर्ष तम नाशत भासत छैल अवधिया ।
(श्री) युगल अनन्य शरन रस चखि–चखि भूल गई सुधबुधिया।।''

समाधि भी कई प्रकार की होती है १–कर्म समाधि,ज्ञानसमाधि,योगसमाधि, प्रेमसमाधि,भावसमाधि, रूपसमाधि, आदि। भावसमाधि लगाकर, दिव्य विहारदर्शन में मगन होने की विधि श्रीबड़े महाराज इस प्रकार बताते हैं कि सर्वप्रथम आप किसी शान्त एकान्त देश में पवित्र आसन पर, पद्मासन लगाकर बैठिये। दृष्टिको किसी यत्न से एक ही जगह रोक रखिये। मन को इष्ट चिंतन में एकाग्र एवं अडौल बनाइए। २. रमु क्रीड़ायां धटित श्रीराम नाम का अर्थ हैं रमण करना और रमण कराना। बीच में हम श्री महारामायण कृत श्रीरामनाम का अर्थ लिखकर पुनः श्रीबड़े महाराज की बतायी शेष विधि बतावेंगे।

''कोटि कन्दर्प शोभाढ्ये सर्वाभरण भूषिते।
रम्यरूपार्णवे रामे रमन्ते सनकादयः ।।
अनेक सखिभिः साकं रमते रास मण्डले।
अतएव रमु क्रीड़ा राम नाम्ना प्रवर्तते।।''

अर्थात कोटि–कोटि काम से भी अभिराम श्रीअवध बिहारीजी रमणीय रूपके सिन्धु हैं। आप नखशिख मणिभूषणों से समालंकृत हो रहे हैं। आपके ऐसे रमणीय रूपमें बीतराग सनकादिक मुनियों का मन भी रमण करने लगता है।

जो अनन्त सीता सखियों के साथ दिव्य प्रमोदवन के श्रीराम रास में रमण करे, उन्हीं का नाम राम है, रमुधातु का अर्थ क्रीड़ा करना इसी से सिद्ध होता है।

श्री बड़े महाराज के कथनानुसार आप सारी अष्टयाम सेवा में प्रधानतया श्री रामनामार्थ घटित रास की भावना विशेष रूप में करें इसी अर्थ का विचार करना है। श्रीयोग सूत्र में भी नामजप से समाधिकी सिद्रि बतायी गयी है। वहाँ भी नाम जप काल में नामार्थ चिंतन आवश्यक बताया गया है। मूल सूत्र इस प्रकार है–

(समाधि सिद्धिः) ईश्वर प्रणिधानाद्वा १२३ ''तस्य वाचकः प्रणवः।''१ / २७ ''तज्जपस्तदर्थ भावनम्''१ / २८।

विस्तार भय से यहाँ सूत्रों की व्याख्या नहीं लिखी गई। श्री नामार्थगत युगल

विहार चिंतन से आपको दिव्य प्रेमानन्द होना स्वाभाविक है। फलत: क्षण–क्षण में आपको रोमांचादि सात्विक विकार उदित होते ही रहेंगे। उसी दिव्यविहार चिंतन में रंगकर लौकिक विषय रस को नष्टकर डालिए। आपको एकान्त स्थानमें इस प्रकार छिपकर रहना चाहिए कि आपकी दिव्य दशाको दूसरा कोई लेखे नहीं। अनुभव कहकर जना देना तो अनुभव का द्वार सदा के लिए बंद कर देना है। दश नामापराध से बचते रहियेगा। लय, विक्षेप,कषाय और रसाभास इन चारों विघ्नों को जीते रहिये। उन बिघ्नों में भी कषाय अर्थात् विषय भोग की स्मृति तो महात्याज्य है। भागवतापराध से बचने के लिए सबके आगे दीन विनयी बने रहना चाहिये तथा स्थूल सूक्ष्म और कारण तीनों मायिक शरीर को भूलें। उपर्युक्त प्रकार के नामाभ्यास के लिए तीक्ष्ण बुद्धि की अपेक्षा है। किसी–किसी कृपा पात्र में पायी जाती है। अब मूल महावाणी लिखते हैं।

''इह भाँति नाम लय लावै,फिर खतरा खौफ न पावै।।
ह्वै आसीन पद्म आसन दृढ़ दृग दिल अचल करावै।
अर्थ परत्व विशेष विचारत पल – पल पुलक बढ़ावै।
रहे एकांत सांत अनुदिन निज दसा न प्रकट लखावै।।
रंगरति रातो रहे एकरस बीरस विषय बहावै।
दश अपराध असाध महारुज तेहिं तजि मोद समावै।।
लय विक्षेप क्षेप डारे करि रसाभास सकुचावैं।
प्रवल कषाय वासना भवमय आमय समुझि मिटावै।।
सबसे सहज अधीन हीन मन तन तिहुँ तमक सुखावै।।
(श्री) युगल अनन्य शरन लच्छन प्रिय कोउ तीच्छन मति पावै।।

श्री बड़े महाराज कहते हैं कि नाम स्नेह ही से योग सिद्धि प्राप्त करना उचित है। किंतु इनके लिए पाँच वस्तु वाञ्छनीय हैं।

१– धैर्य और अडोल उत्साह।
२– भोग स्पृहा से निष्कामता।
३–संयमपूर्वक एक ही स्थल में निवास।
४–श्रीनाम में प्रबल प्रतीति और प्रीति।
५–बाह्य जगत के भोग पदार्थों से चित्त में पूर्ण वैराग्य।

''योग सिद्ध कारन प्रसिद्ध पांच चीज है।
धीरता अचल उत्साह आह दाह बिन
चाह से रहित चित्त चाँदनी अतीज है।
संयम समेत एक थल में निवास पुनि
प्रबल प्रतीति प्रीति राखिये तमीज है।।

रहिये हमेश ऐश हिरस हिराय रोज
सोज जग जाहिर बिहाइये अबीज है।
श्री युगल अनन्य नाम नेह ही सुयोग योग्य
योग सिद्धि कारन प्रसिद्ध पाँच चीज है।।''

इन पंक्तियों के लेखक ने अपनी आँखों के आगे ही एक नवयुवक भगत को नाम जपते जपते समाधिस्थ होते देखा है। वह भगत अभी जीवित है। बिहार प्रान्त के दरभंगा जनपद के अभ्यन्तर दरभंगा से श्रीसीतामढ़ी जानेवाली रेलवेलाइन में एक जोगियारा नामक स्टेशन हैं। उसी स्टेशन से उतर कर जाना पड़ता है चन्दौना ग्राम में। चन्दौने में इन दिनों एक डिग्रीकालेज भी स्थापित हो गया है। वहीं का रहने वाला वह भगत है श्री रामलषण शरण नामधारी वह अपना शिष्य ही है। उस ग्राम में यह लेखक सन् १९५० में गया था। ग्राम के समीप एक आम के बगीचे मे बने झोपड़े में नाम जप कर रहा था। रामलखन शरण झोपड़े से मेरे निकलने की प्रतीक्षा में बैठा बैठा नाम जप रहा था। आंखे बंदकर, सुखासन से बैठकर नाम जप कर रहा था। उसे समाधि लग गई। मैं बाहर निकलकर उसे पुकारा देह पकड़कर जोरों से हिलाया डुलाया,परन्तु वह नाम रटते–रटते देह भान भूल चुका था। बहुत देर के पश्चात् उसे बाह्य चेतना हुई। तत्पश्चात् उस बड़भागी को कई बार श्री नामी सरकार के साक्षात् दर्शन भी हुए हैं। लय स्वर के साथ सतत नाम कीर्त्तन करना उसका स्वभाव बन गया है। समय–समंय वह अपने यहां दर्शनार्थ श्रीअयोध्या भी आया करता है।

पूज्यपाद भी हरिबाबा कल्याण भगवन्नामांक पृ०७६ में लिखते हैं– एक और सत्संगीं नाऊ जाति के थे। उनके पहले से ही नाम में श्रद्धा थी और वे रामायण का पाठ किया करते थे। नाम संकीर्त्तन करने से उन्हें भाव समाधि होने लगी । उनके नेत्र ऊपर को चढ़ जाते थे और वे राम–राम पुकारते हुए मूर्छित होकर गिर पड़ते थे, उनके जीवन में बड़ा भारी परिवर्तन आया। उन्हें सोते जागते भगवान् के दर्शन और भगवच्चरित्र के अनुभव होने लगे।

श्रीरामनाम में सुदृढ़ निष्ठा और अटल विश्वास होने से समाधि सिद्धि सुलभ हो जाती है। दृष्टांत –डॉ० भगवती प्रसाद सिंह लिखित श्री हनुमान पोद्दार के जीवनदर्शन के पृष्ठांक ४३३ से साभार उद्धृत किया जाता है।

प्रसंग सम्भवतः संवत् १९७९ वि० का है। मेरे एक मित्र थे श्रीसागर मल गनेड़ीवाला। मैं तथा वे दोनो ही नवयुवक थे। उन दिनों मैं कभी–कभी धार्मिक नाटक देख लिया करता था। एक नाटक कम्पनी में भक्त सूरदास नाटक का अभिनय होने वाला था। सागरमलजी मेरे घर पर आये और बोले ''भाईजी भक्त सूरदास नाटक देखने चलिये।'' मैं उनके साथ चल दिया। रास्ते में मुझे प्यास की अनुभूति हुई। श्री सुखानन्द जी की चाल (मकान) रास्ते में ही पड़ती थी। सुखानन्दजी सागर मल के फूफा थे और सागरमल उन्हींके यहां रहते थे। सागरमल ने कहा भाई पानी कहाँ खोजियेगा? अपने घर पर ही चलिये, वहाँ पानी पिया जाय।' हम दोनों उनके

घरपर पहुँचे। पानी पीने के लिए बैठे ही थे कि पररस्पर की चर्चा में रामनाम के महत्त्व का प्रसंग छिड़ गया। सागरमल नाम के प्रेमी थे, पर उनका कहना था, समझकर लिए बिना रामनाम से कोई लाभ नहीं होता। राम शब्द को भगवान् राम का नाम समझ कर लेने से ही लाभ होता है,अन्यथा नहीं।

'मेरा विश्वास भगवान् के नाम पर दूसरे ही ढंग का था। मैंने कहा– किसी प्रकार से रामनाम लिया जाय, लाभ होता ही है। राम शब्द के यदि 'रा' और'म' ये दो अक्षर मुख से निकल गये तो प्राणी की सद्‌गति होगी – इसमें तनिक भी संदेह नही हैं।

यह बात सागरमल के गले नहीं उतरी। उन्होंने इस पर विवाद छेड़ दिया। मैंने उन्हें एक कथा सुनाकर कहा, मरते समय किसी के मुख से हराम शब्द निकल गया, इसी से सद्‌गति हो गयी। कारण, हराम में राम शब्द सम्मिलित है।

सागरमल ने तर्क किया राम शब्द को अंग्रेजी में 'आर' 'ए' 'एम' लिखा जाता है और इस शब्द का अंग्रेजी भाषा के अनुसार अर्थ होता है'मेढ़ा'। कोई अंग्रेज मरते समय मेढ़े के भाव से 'राम' पुकार उठें तो क्या उसकी सद्‌गति हो जायेगी। उस अंग्रेज के ज्ञान में राम का अर्थ मेढ़े के अतिरिक्त अन्य कुछ है ही नही।

मैंने कहा, ज्ञान–अज्ञान से, भाव–अभाव कुभाव से, किसी भी प्रकार से , यदि जिह्वा पर रामका नाम आ जाय तो,भगवान का नाम होने से तार देता है। मेरे विश्वास के अनुसार उस अंग्रेज की मुक्ति हो ही जानी चाहिए। यह विवाद हो ही रहा था कि सहसा मेरी वाह्य चेतना लुप्त हो गयी।(श्रीनाम के वस्तु धर्म पर सुदृढ़ विश्वास देखकर, श्रीनामी से रहा नहीं गया। आपके हृदय में प्रगट होकर, आपको विभोर बना दिया।)

पीछे क्या हुआ,यह मुझे पता नहीं । होश आने पर श्री सागरमल जी ने मुझे बताया था कि 'तुम्हारी आँखे खुली थीं, पर बाह्य ज्ञान नहीं था, तुम ज्यों के त्यों उसी स्थान पर बैठे रहे। मैंने सोचा कि तुम बेहोश हो गये हो। मैं रातभर तुम्हारे पास बैठा रहा । मैं तो धबड़ा गया था कि क्या हो गया। सबेरे बड़ी कठिनता से तुम्हें उठाया सीढ़ियों से नीचे ले गया, मोटर मंगवायी और मोटर में बैठाकर तुम्हें घर पहुँचाया। साथ मैं स्वयं गया। घर पहुचने पर तुम्हें शौच से निवृत्त होने के लिए कहा, पर उस समय तुम्हें बिलकुल होश नहीं था। इससे तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया। मैंने तुम्हें पकड़कर पानी के नल के नीचे बैठा दिया। तुम्हारे सिर पर नल से पानी की धार गिरने लगी।

इसी बीच संगीताचार्य श्री विष्णुदिगंबर को तुम्हारी ऐसी स्थिति हो जाने की सूचना भेज दी गयी थी। श्री विष्णुदिगंबर सूचना प्राप्त होते ही चले आये। उन्होंने अपने दो विद्यार्थियों को बुलवाया और स्वयं तानपूरा लेकर उनके साथ 'रघुपति राघव राजाराम। पतित पावन सीताराम।' कीर्त्तन की ध्वनि छेड़ दी। तुम बीच में बैठे थे और चारों ओर अन्य लोग थे।

सम्भवत: पौन घंटे तक कीर्त्तन होने के बाद तुमको होश आया। रात्रिके ९बजे से प्रात:९ बजे तक लगभग बारह धंटे यह स्थिति बनी रही।

''होश आने पर मैं सकुचा गया। मैनें श्री विष्णुदिगंबर को प्रणाम किया। सब पूछने लगे,क्या हुआ, क्या देखा? मैंने कहा– 'मुझे इतना ही स्मरण है कि वनवेषधारी भगवान् श्रीराम, लक्ष्मण और श्री सीताजी के दर्शन हुए। कितनी देर तक हुए,यह याद नहीं है। बातें भी हुई थीं। पर सब बातें स्मरण नहीं, केवल दो ही बातें याद हैं—एक तो भगवान ने यह कहा कि किसी भी प्रकार से भगवन्नाम लेने वाले की सद्‌गति होती है। दूसरी बात भगवान ने परम भक्त श्री विष्णुदिगंबर का नाम इसी सिलसिले में लिया था। इसके अतिरिक्त और कुछ याद नहीं। श्रीसागरमल ने मुझे याद दिलाना चाहा, तुम रात को उस समय कह रहे थे कि 'ये है भगवान,इनके चरण पकड़ लो। पर मुझे इन शब्दों की स्मृति नहीं थी। इस प्रसंग को सुनकर श्री विष्णुदिगंबर स्नेहातिरेक से रोने लगे। इस घटना के बाद सगुण स्वरूप की ओर विशेष झुकाव हो गया तथा भगवद् विश्वास भी प्रगाढ़ होता गया।'

, दानों की अपेक्षा नाम जप ,

श्री वात्स्यायन संहिता में कहा गया है कि कोई धनीमानी व्यक्ति बारम्बार अपने शरीर के भार के बराबर स्वर्ण तौलकर तुलादान करे उस फलसे असंख्य गुणा फल एकबार श्रीरामनाम के उच्चारण में है। हो क्यों नहीं? स्वर्णदानसे स्वर्ग मिलेगा, वहाँ से लौटकर फिर चौरासी लाख योनियों में जनमना मरना बना रहेगा। श्री रामोच्चारण से अविनाशी विशोक श्री साकेत लोक को जायेगा, जहां से पुन: लौटकर संसार में नहीं आना है।

''तुला पुरुष दानानि दत्त्वा यत्फलमश्नुते।
तस्मादसंख्य गुणितं राम नाम्नापि संलभेत्।।

पुन: वहीं कहा गया है कि जिनके मन में सतत श्रीरामनाम रटने का निश्चय दृढ़ हो चुका है, उनके लिए सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में जाकर हजारों सोने का भार दान करने से क्या लाभ? हाथी,घोड़े,रथादिकों के दान, देवालय मंदिर की प्रतिष्ठा ,सभी तीर्थों का सेवन नाना प्रकार के तप ये साधन नाम जापकों के लिए नगण्य हैं।

''हेमभार सहस्रै श्च कुरूक्षेत्रे रविग्रहे।
गजाश्वरथ दानैश्च देवालय प्रतिष्ठया।।
सेवनै: सर्व तीर्थानां तपोभि विविधैश्च किम्।
श्रीराम नाम्नि सततं नित्यं यस्यास्ति निश्चयम्।।''

श्री पतञ्जलि संहिता में कहा गया है कि धान्य पौधों से लहलहाती हुई पृथ्वी की सारी भूमि दान कर देने से जो फल होगा, उससे अधिक फल है, एक बार के रामनाम उच्चारण में।

''पृथ्वी शस्य सम्पूर्णा दत्त्वा यत्फलमश्नुते।
रामनाम सकृज्ज़प्त्वा ततोऽनन्तगुणं फलम्।।''

श्री सौर संहिता में कहा गया है कि समुद्र सहित पृथ्वी को शुद्ध सोने से भर कर दान कर देने मे जो फल होगा उससे अधिक फल होगा श्री रामनाम के उच्चारण में।

''ससागरां महीं दत्त्वा शुद्धाकाञ्चन पूर्णिताम्।
यत्फलं लभते लोके नामोच्चारस्ततोधिकम्।।''

श्री शुक पुराण में कहा गया है कि पृथ्वी को कौन कहे आप ब्रह्माण्ड ही दान कीजिए। एक नहीं, सैकड़ों ब्रह्माण्ड का प्रभुत्व आपको मिला हो, तो दान देकर देख लीजिये। दान का क्या फल मिलता है। अजी, कहीं ऐसा दान बन भी जाय,तो एक बार का श्रीरामनाम उच्चारण उससे अधिक फल आपको देगा।

''ब्रह्माण्ड शत दानस्य यत्फलं समुदाहृतम्।
तत्फलादधिकं विद्यात्सकृच्छ्रीराममुच्चरन्।।''

इतना कहने का यह मतलब नहीं कि आप दान न करें । हृदय धर्म को उदार बनाने के लिये दान आवश्यक कर्त्तव्य है। किन्तु मुक्ति की आशा दान से नहीं रखिये। मुक्ति के लिए एकमात्र उपाय है श्री रामनाम। पूछ लीजिये परमार्थ मर्मज्ञ जगद्‌गुरु शंकरजी से। प्रभो! आप काशी वासियों को मुक्त करने के लिए और उपाय क्यों नहीं करते? रातदिन गली—गली में घूम घूम कर मरणशील प्राणियों के कान में श्री रामनाम सुनाते हैं? क्या मुक्ति को जन्मभूमि काशी मुक्ति नहीं देंगी? यदि उनमें शक्ति देने की नहीं हो, तो गंगाजी में मुर्दो को प्रवाहित करवा दीजिये। श्री देवनदी तो मुक्ति देंगी ही। भगवान कहते हैं नहीं जी, मुक्ति एकमात्र श्री रामनाम ही के हाथ में है। और अन्य उपाय इस दिशा में विफल हैं।

जब गंगा काशी मरणकालीन श्री शंकर जी के साक्षात् दर्शन मुक्ति नहीं दे सकते, तब आप चले हैं दान के पुण्य प्रभाव से मुक्ति पाने? सेठ जी, जरा समझ से भी काम लीजिए।

श्रीब्रह्मवैर्त्त पुराण में कहा गया है कि जो श्री रामनाम का कीर्त्तन करते हैं, उन्हें असंख्य गोदान का, असंख्य कन्यादान का, अनत तीर्थों के फल नाम ही सरकार देते रहते हैं।

''गवामयुत कोटीनां कन्यानामयुतायुतैः।
तीर्थ कोटि सहस्त्राणां फलं श्री नाम कीर्त्तनम्।।''

इस सम्बन्ध में श्री बड़े महाराज को महावाणी उद्‌धृत कर, इस लेख को यही समाप्त करते हैं।

''जीवत मृतक ताते जानि न परत पीर
अंतक सदन जाय अंत सिर पीटि हैं।
कहैं हम पंडित प्रवीन सभा जीते बहु
रटे बिना नाम पढ़े पाथर औ ईट है।।
दान अभिमान सो तौ अतिही नदानपन
नृगके समान नृप दानी गिरगीट है।
श्री युगल अनन्य सब फोकट धरम लखु
रटे नहीं नाम सों विशेष बीट कीट हैं।।''

श्रीनाभा स्वामी के सर्वमान्य परम प्रामणिक भक्तमाल के सुप्रसिद्ध कवित्त श्रीप्रियादासजी ने श्रीपंडरपुर के प्रसिद्ध सिद्ध संत श्रीनामदेवजी के विषय में एक बड़ी मजेदार कथा लिखी हैं। हम नीचे उनके मूल के कवित्त तथा श्री रूपकला जी महाराज का वार्तिक अनुवाद भी अविकल उद्धृत करते हैं। देखिये भक्ति सुधा स्वाद तिलक पृ० ३४४

''सुनौ और परचै जो आए न कवित्त माझ
बांझ भई माता क्यों न? जौ न मति पागी है।
हुतो एक साह तुला दानको उछाह भयो
दयो पुर सबै रह्यो नामदेव रागी है।।
ल्यावौ 'जू बुलाई' एक दोई तो फिराई दियो
तीसरे सो आए 'कहो कहो' बड़भागी है।
कीजिए जु कछु अंगीकार मेरो भलो होय
भलो भयो तेरो, दीजै जो पै आसा लागी है।।

अब श्री नामदेव जी के परिचय प्रभाव, जो श्री नाभास्वामी के छप्पयमें नहीं कहे गये है, सो सुनिये। देखिये ऐसे भक्ति भरे श्री नामदेव का चरित्र सुनकर श्रीसीताराम नाममें जिसकी मति प्रेम से न पगी, उसकी माता बाँझ क्यों न हुई?

पण्डरपुर में एक बड़ा सेठ था। उत्साह पूर्वक सोने का तुला दान करके उसने सबों को सुवर्ण दिया। परम अनुरागी श्री नामदेव जी एक रह गये। आपके पास भी सादर बुलाने को मनुष्य भेजे परन्तु आपने एक दो बार तो उनको कोरे ही लौटा दिया कि मुझे नहीं चाहिए। तीसरा बार बड़ी प्रार्थना पूर्वक उसने बुलाया तो आप जाकर बोले कि है बड़भागी सेठ कहो क्या कहते हो? उसने विनय की कि कृपा करके इसमें से कुछ सुवर्ण अंगीकार कीजिए कि मेरा भला हो । आपने उत्तर दिया कि तेरा भला हुआ ही है,क्योंकि तुमने सबको दिया। जिसकी आशा लगी हैं, उसको दे और यदि मुझको भी देने के हेत तेरी आशा लगी ही है तो दे।

जाके तुलसी है ऐसे तुलसी के पत्र मांझ
लिख्यो आधो रामनाम 'यासो तौल दीजियो।'
'कहा परिहास करौ? ढरो ह्वै दयाल
'देखि होत कैसो ख्याल, याको पूरो करो रीझियो।।
ल्यायो एक काँटो, लै चढ़ायो पात सोना संग
भयो बड़ो रंग सम होत नहि छीजियो।
लाई सो तराजू जासो तुलै मन पाँच सात
जाति–पाँतिहूँ की धन धरयो पै न धीजियो।।'

इतना कहकर श्रीतुलसी के पत्र में आधा श्रीराम अर्थात् 'रा' मात्र लिखकर, आप बोले कि यदि दिया ही चाहता है तो इसी भर तौल दे। सुनकर सेठने कहा कि 'आप हँसी क्या

करते हैं? इस पत्र ही भर मैं क्या दूँ? मुझ पर दयालु होकर, कुछ अधिक अंगीकार कीजिए। श्री नामदेव जी ने उत्तर दिया कि मैं हँसी नहीं करता। देख तो इसका कैसा कौतुक होता है? इस भर तौलकर पूरा तो कर, तब मैं तुझ पर अतिशय प्रसन्न हूँगा। एक तौलनेका काँटा लाकर, उसकी एक ओर तुलसीदल और दूसरी ओर सोना साहने चढ़ाया, परन्तु बड़ा ही रंगमचा कि वह सोना श्री पत्रके तुल्य न हुआ, वरन घट गया। तदनन्तर साहूने एक ऐसा तराजू मंगाया जिसमें पाँच सात मन वस्तु तुल सके। उस पर श्रीनाम पत्र रखकर, अपने घर भरका स्वर्णादिक सब धन चढ़ाया, तब भी श्रीपत्र वाले पल्ले ने भूमि न छोड़ी। फिर अपने जाति भाइयों का धन माँग—माँगकर, पल्ले पर चढ़ाता गया। तथापि पूरा न पड़ा, धनका पल्ला अतीब हलका ही रहा। उन सबका प्रिय कार्य न हुआ।

परयो सोच भारी दुःख पावें नर नारी
नामदेव जू बिचारी एक और काम कीजिये।
जिते व्रत दान औ स्नान किये तीरथ में
करिये संकल्प यापै जल डारि दीजिये।
करेऊ उपाय पात पला भूमि गड़े पाय
रहे पै खिसाय कह्यो इतनोई लीजिये।
लै कै कहा करै, सरबरहू न करै
भक्ति भाव से लै मेरो हिय मति अति भीजिये।'

अर्द्ध—रामनाम युक्त श्रीतुलसी—पत्र के गौरव महत्त्व का कौतुक देखकर, सेठ के घर के सभी स्त्री—पुरुषों को बड़ा सोच और दुःख हुआ कि कैसे पूरा हो? श्री नामदेव जी ने विचार किया कि श्रीरामनाम के सामने धनादिकों की तुच्छता तो दिखा ही दी, परन्तु अब यह भी दिखा दूँ कि श्रीरामनाम के सामने सब धर्म—कर्म भी हलके ही हैं। अत: आपने कहा कि 'सुनो एक और काम करो कि तुम लोगों ने जितने व्रत उपवास तीर्थ स्नान, दान इत्यादि सुकर्म किये हों, उन सबों का फल भी संकल्प करके, वह जल इस पर छोड़ दो। यह भी उपाय किया गया, किंतु श्रीनाम—पत्र वाला पल्ला भूमि में पाँव जमाये ही रहा। तब तो वे सब अति लज्जित और संकुचित होकर कहने लगे। महाराज आप इतना ही ले लीजिए। श्री नामदेव जी ने उत्तर दिया कि 'यह सब धन और पुण्य ले कर क्या करूँ? क्योंकि तुमने स्पष्ट देख ही लिया कि मेरा धन श्रीरामनाम है। उसके आधे के तुल्य भी ये सब नहीं रहे। अत: श्रीरामनाम को लेकर मैं संतुष्ट रहता हूँ और रहूँगा। मेरी मति प्रेम—भक्ति में भीजी है। तुम लोग भी यही करो, तब मेरे समान सुखी होओगे।

, तीर्थाटन छोड़कर नाम जपिये ,

श्री पद्मपुराणमें स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन जी को श्रीरामनाम का प्रभाव बता रहे हैं। अर्जुन! जिसने श्रीरामनाम का उच्चारण कर लिया उसे सर्वतीर्थों के मज्जन—पान का फल मिल

गया। समझ लो उसने श्रीगंगा,सरस्वती, रेवा, यमुना, सिंधु, पुष्कर, केदारनाथ आदि सभी तीर्थों का स्नान, जलपान कर लिया।

अतिथि सेवा, सर्वतीर्थ स्नान आदि सर्वपुण्योंका फल श्री नामोच्चारण से अकेले श्रीनाम सरकार कृपा पूर्वक दे देते हैं। सूर्यग्रहण के मौके पर, करुक्षेत्र तीर्थ करने न भी जाओ, कार्तिक मास में स्वामी कार्तिकेय का दर्शन न भी हो सके, तो दो अक्षर वाले श्रीरामनाम सभी फल अपने उच्चारण करने से दे ही देंगे। कहाँ भटकना है? रटते रहो नाम। श्रीरामनाम की समानता करते हो, गंगा से, काशी से, नर्मदा और पुष्कर से! छि: छि: कहाँ मुक्ति देने वाले श्रीरामनाम, कहाँ स्वर्ग देने वाले तीर्थ? श्रीनाम की बराबरी सब तीर्थ कर हीं नहीं सकते। समझ लेना पृथ्वी भर में समुद्र से लेकर पुण्य सरोवर सब–जितने भी तीर्थ हैं, नाम जपने वाले सब कर चुके। जब एकत्र फल श्रीनाम सरकार ने दे ही दिया, तो कर लेने में क्या बाकी रहा?

गङ्गा सरस्वती रेवा यमुना सिन्धु पुष्करे।
केदारेतूदकं पीतं राम इत्यक्षर द्वयम्।।
अतिथे: पोषणं चैव सर्व तीर्थावगाहनम्।
सर्वपुण्यंसमाप्नोति रामनाम प्रसादत:।।
सूर्यपर्वे कुरुक्षेत्रे कात्तिर्कयां स्वामी दर्शने।
कृपापात्रेण वै लब्धं येनोक्तमक्षर द्वयम्।।
न गंङ्गा न गया काशी नर्मदा चैव पुष्करम्।
सद्दृशं राम नाम्नातु न भवन्ति कदाचन।।
भूतले सर्व तीर्थानि आसमुद्र सरांसि च।
सेवितानि च येनोक्तं राम इत्यक्षर द्वयम्।।'

श्री ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में देवर्षि श्रीनारद जी भक्तराज श्री अम्बरीष जी से कहते हैं– 'इस भूमंडल पर जितने भी पावन तीर्थ हैं, सभी मिलकर, अपने पुण्यफल एक तराजू के पलड़े पर चढ़ावें, और दूसरे पलड़े पर एक बार के नामोच्चारण के फल का केवल सोलहवाँ हिस्सा चढ़ाया जाय, तो भी श्रीनाम का पलड़ा ही भारी रहेगा।

'बसन्ति यानि तीर्थानि पावनानि महीतले।
तानि सर्वाणि नाम्नस्तु कलां नाहन्ति षोडशीम्।'

श्रीविश्वामित्र संहिता में कहा गया है कि नाना प्रकार के तीर्थ शास्त्र प्रसिद्ध हैं। किंतु उनके फल श्रीरामनाम के कीर्तनफल के करोड़वाँ अंश के बराबर भी नहीं हैं।

'विश्रुतानि बहून्येव तीर्थानि विविधानि च।
कोट्यांशान्यपि तुल्यानि नाम संकीर्तनस्य च।।'

इसी प्रकार श्रीवृहद् वशिष्ट संहिता में भी कहा गया है कि तराजू के एक पलड़े पर सभी तीर्थ तथा प्रयाग राज का जल चढ़ाया जाय, दूसरी ओर श्रीरामनाम महिमा का कण मात्र। बराबर नहीं होने को।

'एकत: सर्व तीर्थानि जलं चैव प्रयागजम्।
श्रीरामनाम महात्म्यं कलां नार्हन्ति षोऽशीम्।।'

तभी तो श्री मानस जी का परम प्रामाणिक वचन है—

'तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघपुंज नसावन।।'

श्री कात्यायन संहिता में कहा गया है कि जो बड़भागी नाम लागी नित्य प्रति रामनाम का जप करते रहते हैं, उन्हें पदे—पदे पर कोटि—कोटि पूजा विधिवत करने का और तीर्थो के फल मिलते रहते है।

'राम रामेति—रमेति प्रत्यहं वक्ति यो नर:।
सम्यक् पूजायुतं पुण्यं तीर्थ कोटि फलं लभेत्।।'

पुण्य फल लेकर स्वर्ग जाना हो, तब तो तीर्थाटन की आशा अवश्य करनी चाहिये। यदि उपासना सिद्ध कर भवगद्धाम जाना चाहते हैं तब तो तीर्थ यात्रा इसके लिए निष्फल है, बेकार है। श्री बड़े महाराज की महावाणी प्रमाण है—

'तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु।
एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है।।'(श्री चतुष्ट गुटिका)

यदि आप शरीरान्त होने पर, अपने इष्ट श्री रामधाम साकेतपुरी जाना चाहते हैं,तब तो आप तीर्थ व्रत दान पुण्य के चक्कर में मत पड़िये। कहीं एकान्त में बैठकर, दिन—रात सीताराम सीताराम जपा करिये।

'तुलसी राम नाम सम मित्र न आन।
जो पहुँचाव रामपुर तन अवसान।।' (श्री बरवै रामायण)

भवसंकट (जन्ममरण) मिटाना तो तीर्थों के मान की बात नहीं है। एक जन्म ही क्यों? अनंत जन्मों तक सभी तीर्थों में भ्रमते रहो, भवसंकट जब मिटेगा, तब केवल श्रीरामनाम से ही, और उपाय व्यर्थ। श्री कवितावली, उत्तरकांड सवैया ८६ पढ़िये।

'न मिटै भवसंकट दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिरागु, न ग्यान कहूँ, सब लागत फोकट झूठ—जटो।।
नट ज्यों जनि पेट— कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिअ तौं, रसनाँ निसिबासर राम रटो।।'

' सहस करोरि बेर द्वार का प्रयाग जाय
पदुम अनेक बार कासिका बिहार ही।
मथुरा अवन्तिका अरब औं खरब बार
मायापुरी कच्छप समान द्रग धारही।।
जगन्नाथ बदरी केदारनाथ आदि सब
तीरथ सुछेत्र जाय पदुम अपार ही।।
युगल अनन्य तउ एकबार रामनाम
मुखके उचारे सम कहे पाप भार ही।।'

अब बताइये, शान्त एकान्त देश में जमकर नामसुधा पीकर जीवन कृतार्थ कीजियेगा कि तीर्थाटन के बहाने आँखों को जगह–जगह के दृश्य देखाने के लिए रेलगाड़ी में धक्के खाइयेगा?

यज्ञायोजन छोड़कर नाम जपिये

भगवान श्री गीताचार्य सभी प्रकार के वेदोक्त यज्ञों में जप को सर्वश्रेष्ठ यज्ञ मानकर, उसे अपना स्वरूप ही बताते हैं। 'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि।' जिन्होंने श्रीरामनाम का जप कर लिया उन्हें और यज्ञादि करने की क्या आवश्यकता है? अब हम शास्त्रीय प्रमाण इस सम्बन्ध में उद्धृत करेंगे।

श्रीवृहद्वशिष्ठ संहिता में कहा गया है कि विशुद्ध चित्त से जो सतत श्री रामनाम जप करते रहते हैं, उन्हें पदे पदे पर सहस्रो राजसूय यज्ञ करने का फल मिलता रहता है।

'राम रामेति रामेति कीर्त्तयेच्छुद्ध चेतसा।
राजसूय सहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः॥'

श्री आदि रामायण में कहा गया है कि एक बार नामोच्चारण से हजारों बार गंगा स्नान, कोटि–कोटि यज्ञान्त (यज्ञ समापन सूचक अन्तिम) स्नान, पान करने वाली पवित्रता आती है।

'गङ्गा स्नान सहस्रेण यज्ञान्तस्नान कोटिभिः।
पान शुद्धिर्भवेज्जातु सा रामेति कीर्तनात्॥'

श्री कालिका पुराण का वचन है कि निर्विकार परमदेव श्रीरामनाम का उच्चारण करने मात्र से अनन्त यज्ञ और तीर्थों के फल निश्चय पूर्वक होते हैं।

'रामेत्यभिहिते देवे परात्मनि निरामये।
असंख्य मख तीर्थानां फलं तेषां भवेंद्ध्रुवम्॥'

श्री लोमश संहिता में कहा गया है कि जिनने श्रीरामनाम का कीर्तन कर लिया, उनने फल पाने के अर्थ में सब यज्ञ कर लिये अर्थात् अशेष वेदोक्त यज्ञों के फल उन्हें एकत्र मिल गये।

'कृताश्च सकलाः यज्ञा येन रामेति कीर्तितम्।'

श्री पद्मपुराण में स्वयं भगवान् श्री कृष्ण श्री अर्जुनभक्तराज से कहते हैं कि दो अक्षर वाले श्री रामनाम का जिसने कीर्तन कर लिया, वे समझिये कि चारों वेद साङ्गोपाङ्ग पढ़ चुके, सभी यज्ञ कर चुके और उसने तीनों लोकों का उद्धार भी कर लिया।

'चत्वारः पठिता वेदास्सर्वे यज्ञाश्च याजिताः।
त्रिलोकी मोचिता तेन राम इत्यक्षर द्वयम्॥'

श्री विष्णु पुराण में आया है कि इस भूमंडल में जिनको श्रीरामनाम के प्रभाव, माहात्म्य का ज्ञान विज्ञान नहीं है, वहीं नाम रटन छोड़कर यज्ञादिक कर्म तथा ज्ञानादि उपार्जन में नाहक रचते–पचते रहते हैं।

'केचिद्यज्ञादिकं कर्म केचिद्ज्ञानादि साधनम्।
कुर्वन्तिनाम विज्ञान विहीना मानवा भुवि॥'

सर्वश्रेष्ठ साधना नामजप है

कोई जप को,कोई आचार विचार टकसार को, कोई योग साधना को अच्छा बताते हैं। कोई अनेक प्रकार के विचार पूर्वक ज्ञान को श्रेयस्कर बताते हैं। कोई कहते हैं कि स्त्रीभोग त्याग कर, त्याग वैराग्य से हृदय जागृत होगा। श्री बड़े महाराज की मान्यता में अपनी—अपनी जगह सब सत्य है, परन्तु श्री जानकी रमण जू का सीताराम नाम सभी साधनों से अनुपम है।

'कोऊ कहे जप नेम अचार भलो कोउ योग बखानत नीको।
कोउ वदे वर ज्ञान विचार प्रकार अनेक तहाँ करि ठीको।।
कोउ कहैं किये त्याग विराग सही जिय जाग उठे तजि ती को।
(श्री) युगम अनन्य है सत्य सभी पर नाम अनूप सदा सिय पीको।।२२५०।।
'राम महामुद धाम सुनाम अखंड उचार करो तजि के जग।
सिद्ध सिरोमनि संतन को मत है इह उज्ज्वल धारु जगामग।।
काहू की ओर न दृष्टि करो दिन रैन छको रसनाम सुधा संग।
(श्री) युग्म अनन्य में भूलो कहीं अनुराग बिना पथ और महाठग।।२७४२।

नामही के रटे ते उदासता विनास है।
प्रीति परतीति रस रीति सुविनीत गुन।
गहर गंभीर धीर सीर सुख रास है।
लोक परलोक में असोक तम तोक बिना
महत महानन की सभा में सुवास है।।
अनायास उदित मुदित अभिलाष खाश
मधुर सुमंजु कंज बिसद विकास है।
श्री युगल अनन्य सिद्धि सब करतल नित
नाम ही के रटे ते उदासता विनास है। २१७०।।

सीताराम नाम ही से आदि अंत काम है।
चोज चतुराई चटकाई चपलाई चारि—
रोज ही की चाँदनी अंधेरे परिणाम है।
देखिये दराज दृग धृग धेय संग त्यागि
पागि प्रेम रंग रस रास गौरश्याम है।।
केतो करौ कौल हौल हीयको कुडौल तौल
तकिये तलाश तीन खेद खेह खाम है।
श्री युगल अनन्य मूढ़मध्य में मलीन मद
सीताराम नाम ही से आदि अंत काम है।। १३१।।

श्री गोस्वामिपाद ने भी श्री विनयपत्रिका में कहा है—

भलो, जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे।
रामनाम ही से अंत सबही को काम रे।।

मरने पर हमारे शव के साथ लोग राम नाम सत्य है का नारा लगाते जावेंगे। अभी से हम चेतकर उस सत्य स्वरूप रामनाम का अवलंब कस कर क्यों नहीं पकड़ें ?

बोलिये प्रेम से श्री सीताराम नाम की जय!

आज ही से नाम जप में लग जाइये। समय बीतने पर हाथ मलमलकर पछताना पड़ेगा।

, आज की दुर्दशाग्रस्त स्थिति में रामनाम की आवश्यकता ,

इस संदर्भ में हम श्रीराम—नाम—विज्ञान के यशस्वी लेखक गंभीर विचारक, श्री रामनामानुरागी पं० जगदीश शुक्ल के विचार यहाँ साभार उद्धृत करेंगे।

'आज की बिगड़ी परिस्थिति को सुधार सकने की सामर्थ्य एकमात्र रामनाम में ही है। आजकी हमारी चमगादुरी और उल्लू की आँखों को प्रकाश ही अन्धकारमय दीख रहा है और अन्धकार ही प्रकाशमय तभी तो हम अधर्म को धर्म, अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य और विनाश को विकास मान बैठे हैं, और तो और, हमने शिक्षा को भी भोग के ही तराने का तबलची बना दिया है। एक ओर सह—शिक्षा व्यभिचार की वैतरणी बहा रही है, तो दूसरी ओर सार्वजनिक शिक्षा अर्थके द्वार की भिक्षुकी बन गई है। आज की अंधी शिक्षा को भी आँख देने वाला यह रामनाम ही होगा। राम नाम ही गाँधी के हृदय से आधुनिक शिक्षा के प्रभाव—परिधान को उतार फेंका और उन्हें सच्चे अर्थ में शिक्षित बना रखा था।

जब तक हम राम—नाम के रम्य रसायन को अपने रोम—रोम में रमाएँगे नहीं, तब तक कानून कागज पर कराहते ही रह जाएँगे और विकास की योजनाएँ रोती ही रह जाएँगी। कर्मठ कार्यकर्त्ता आकाश पाताल एक करते ही रह जाएँगे और सुधार के लिए उछल कूद मचती ही रह जाएगी, किन्तु संकुचित भावना का अंत नहीं होगा, क्षूद्र स्वार्थ साधना की वृति नहीं मिटेगी, त्याग, तपस्या और प्रेम का उदय नहीं होगा, परिणामतः सुख शान्ति के दर्शन दुर्लभ ही रह जाएँगें और हाहाकार की बीमारी बढ़ती ही चली जाएगी। सारी बीमारियों की दवा है राम नाम और सभी समस्याओं का समाधान है राम—नाम। राजनीतिक तथा सामाजिक उलझनों की सुलझन और साम्प्रदायिक तथा पारस्परिक उलझावों का सुलझाव भी राम—नाम ही है। राम—नाम हमें स्वार्थ त्याग का और विश्व—प्रेम का पाठ पढ़ाएगा। रामनाम ही हमारी संकुचित मनोवृतियों को विश्वव्यापिनी बनाकर, हमें 'स्वदेश भुवनत्रयम्' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जगायेगा।

सारे ज्ञानों, विज्ञानों और कलाओं की आत्मा राम—नाम ही है। राम—नाम से शून्य ज्ञान भी अज्ञान, विज्ञान का वरदान भी प्रलय का आह्वान है और कला की क्यारी भी विष की फुलवारी

है। सभी विद्याओं और कलाओं को अपने मंगलमय प्रकाश से प्रकाशित और प्रोद्भासित करने वाला, उन्हें उपकारक तथा उद्धारक बनाने वाला राम–नाम ही है। रामनाम से शून्य विज्ञान के कारनामों को जापान में जाकर पूछिये। वैज्ञानिक विध्वंस के शिकार हुए वहाँ के हिरोशिमा और नागाशाकी नगर खाक की ढेर हुए, अपने कलेजे के टुकड़ों को दिखला–दिखला कर आप को विज्ञान की प्रलय–लीला की वानगी बता देंगे। जहाँ फौलाद भी पिघल कर बह गया, वहाँ देहधारियों की दुर्दशा की क्या चर्चा? यह भी साफ साफ समझ लीजिये कि विज्ञान बुरी वस्तु नहीं है, बुरी वस्तु है उसका दुरुपयोग और उस दुरूपयोग का कारण है विज्ञान का राम–नाम से अलगाव। विज्ञान मानव–जीवन का सुदृढ़ पाँव है तो राम–नाम आन्तरिक आँख। इसलिए विज्ञान के बिना मानव–जीवन लँगड़ा है, तो राम–नाम के बिना विक्षिप्त और अंधा। राम–नाम जीवन को दिशा बतलाता है– और विज्ञान उसको गति देता है। इस प्रकार राम–नाम मानव जीवन का निर्देशक है और विज्ञान गतिवर्द्धक ? हाँ, राम–नाम की आवश्यकता अनिवार्य है क्योंकि राम नाम–जीवन की भीतरी आँख हैं। इसके बिना मानव–जीवन अन्धा ही नहीं पागल भी है और अपने ही लिए नहीं, संसार के लिए खतरा भी है।

इसी प्रकार राम–नाम राजनीति का भी पथ–प्रदर्शक है। इसकी भीतरी दृष्टि है, राम–नाम को दृष्टि से सूनी अतएव अंधी राजनीति क्या–क्या गुल खिला सकती है, यह तो अमेरिका और रूस के पैंतरे ही हमें आए दिन बता रहे हैं। यह आधुनिक राजनीति क्यों सारे संसार में तबाही मचा रही है? इसलिए कि इसको दिग्भ्रम हो गया है– इसके पास राम–नाम का दिशा–निर्देशक यंत्र नहीं है और राम–नाम के कारखाने की गढ़ी हुई विज्ञान की गति–वर्द्धक मशीन नहीं है। फिर यह विपरीत दिशा में न जाय तो कैसे? विगति को प्रगति नहीं मानें तो कैसे?

श्रीरामजी की भरी सभा में अपने वक्षस्थल की विदीर्ण करके, उसके भीतर रामनाम के पक्के अक्षर दिखला देने वाले हनुमान जी हमें आज भी बतला रहे हैं कि यदि तुम्हारे हृदय में राम–नाम नहीं है, तो तुम उसे विदीर्ण कर डालो, उससे न तो तुम्हारा ही हित हो सकता है, न तुम्हारे समाज का ही। राम–नाम से शून्य हृदय नहीं है, समाज समाज नहीं है, और शास्त्र–शास्त्र नहीं है। गाँधी जी के हृदयोंदयाचल से जब राम–नाम का सूर्योदय हुआ, तो उन्होंने राजनीति के मंदिर में राम–नाम की प्रतिष्ठा कर डाली और भारतीय राजनीति मंदिर को भी साधना मंदिर बना डाला।

भगवन्नाम की साधना किये बिना किसी भी सेवा की साधना शुद्ध नहीं रह सकती। इसीलिए वह सफल और लोक मंगलकारिणी भी नहीं बन सकती। गाँधी जी ने राम–नाम की साधना की, उनके मन में जब राम–नाम रम गया,तब उस मन में रामराज्य की कल्पना आई और उस जागृत स्वप्न को साकार करने के लिए वे जीवन–भर जूझते रहे। राम–नाम के द्वारा त्याग और तपस्या की, सेवा और सदाचार को, तथा प्रेम और करुणा की भावना जगा जगा कर वे

रामराज्य का ही नव निर्माण कर रहे थे। सच मानिये, रामनाम का अवलंब लिए बिना मानवता के गुण स्थायी और सच्चे कल्याणकारी हो ही नहीं सकते। बिना राम–नाम के उनकी आत्मशुद्धि जो नहीं होती, उसमें चिरन्तन प्रकाश जो नहीं आता। आज के सत्ताधारियों ने राम–नाम का वह चश्मा ही अपने हृदय की आँखों से उतार दिया। इसका फल यह हुआ कि उन्हें भोग में ही भगवान का भ्रम हो गया। इनके सेवाभाव में राम–नाम का प्रकाश जो रहा नहीं, इसीलिए गाँधी परम्परा से प्राप्त हुई शुद्ध और लोकतारक सेवा भी इनके हाथों में आकर विकृत–ग्रस्त, लोक–पीड़क, भ्रामक अतएव असफल बन गयी। आज भी इनके सामने नक्शा तो है राम–राज्य का ही, किन्तु बनता जा रहा है क्रमश: रावण राज्य। तो इस अकल्पित कार्य का कारण है राम–नाम की साधना का अभाव। अतएव भोगभावना के प्रत्यक्ष आक्रमण का प्रत्यक्ष प्रभाव।

सच मानिए, राम–नाम युग–युग का धर्म तो है ही, आज का युगधर्म भी यही है। तभी तो युग पुरुष गाँधी जी अपनी युगवाणी से इस तारक युग मंत्र के युगाक्षरों के द्वारा देश के कोने–कोने को गुंजाते रहे, वे युग युग के इस गान को युग गान बनाकर, झूम–झूम कर गाते रहे, दुनिया में घूम–घूम कर दुहराते रहे और जगाते रहे अपने जनता जनार्दन को।

आज संसार के सभी देश विश्व युद्ध से थककर, विश्व–शान्ति का सच्चा और पक्का मार्ग ढूंढ़ रहे हैं। यदि वे सच्चाई और गहराई के साथ सोचेंगे, तो इन्हें भगवन्नाम के भूगर्भ में ही विश्व–शान्ति की और विश्व बन्धुत्व की पाताल गंगा लहराती हुई मिलेगी, जहाँ गोते लगाकर संसार के स्वार्थमय संघर्ष का सारा का सारा कल्मष सदा के लिए साफ हो जाएगा और विश्व सुख तथा विश्व शान्ति और स्वर्गीय स्त्रोत अपने हाथ में आ जाएगा।

मैं मानव मात्र से यह पुनीत प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक मानव भगवन्नाम की महिमा को समझे, विश्व कल्याण को ध्येय बनाकर शुद्ध हृदय से भगवन्नाम जपे और गावे। इस प्रकार सहज ही विश्व कल्याण भी हो जायगा और सच्चा आत्म कल्याण भी।

सतरहवीं सती के अंत में औरंगजेबी अत्याचार की विषवह्नि में जलते हुए राष्ट्र को बचाने के लिए तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना के प्रबोधक और उद्घोषक परमाचार्य समर्थ गुरु रामदास ने राष्ट्र के संरक्षक और उन्नायक छत्रपति शिवाजी को तेरह अक्षरों वाले तारक का उपदेश दिया था–'श्री राम जय राम जय जय राम। श्री राम जय राम जय जय राम।।' यही नारा उस युग का राष्ट्रीय नारा था, जिसका उद्घोष करते हुए हमारे राष्ट्र के सच्चे वीरों ने उस समय अपना बेजोड़ बलिदान किया और सच पूछिये तो औरंगजेब के अत्याचार का अन्त ही करके छोड़ा। इसीलिए इस नारे में विशुद्ध राष्ट्रीयता, विश्व प्रेम और वीरत्व की भावना लहरा रही है। हम आज भी अतीत के इस विजयगान की तान छेड़ सकते हैं और अपनी भारतीय भावना के कमान पर इस अमोघ वाण का सन्धान कर अपनी राष्ट्र चेतना की नसों में दिव्य और भव्य प्राणों की प्रेरणा भरकर राष्ट्र के सम्पूर्ण संकट को हर सकते हैं। यह घोष सम्पूर्ण भारतीय

संस्कृति का मूलमंत्र, विश्व शान्ति के साधक, तान्त्रिकों का यशस्वी यंत्र और हमारी राष्ट्रोपासना का तगड़ा तन्त्र है। यह हमारा दिग्विजयी और विश्व–विजयी राष्ट्र–गीत, अतीत की पुनीत प्रेरणा ही नहीं, वर्तमान की अतुल उत्तेजना भी है और हमारे उज्ज्वल भविष्य का द्रष्टा तथा स्रष्टा भी। यह उद्घोष हमारे जोश का ही प्रेरक और उत्तेजक नहीं है, हमारे होश का संजीवक, पोषक और संवर्द्धक है। यह नारा शान्ति की बिजली बनकर ही हमारी नस–नस में नहीं समा जाता, हमें शील और संस्कृति की संजीवनी भी पिलाता है और विशुद्ध मानवता और विश्व–शान्ति का प्रोज्ज्वल प्रकाश भी देता है। इसीलिए यह हमारा पारमार्थिक प्राण है और व्यावहारिक शान्ति समर का रणवाद्य या शंखनाद है। कहाँ है आज देश के हमारे 'समर्थ गुरु' और 'छत्रपति' जो हमसे इस सिद्ध नारे का उदघोष कराकर, हमारे पतन की मरूभूमि में उत्थान की मन्दाकिनी बहा दें और हमें कुभावना के कुंभीपाक से निकाल कर सद्भावना के साकेत में पहुँचा दें। इस परम और चरम साध्य की सिद्धि का सफल मंत्र है–

'श्री राम जय राम जय जय राम। श्री राम जय राम जय जय राम।'

, मूर्ख– शिरोमणि ,

एक बड़ा धनी सेठ था। उसके पास एक सीधा गरीब ग्रामीण रहा करता था। एक दिन सेठ ने उसे अपना डंडा दिया। उस भोले हँसमुख ग्रामीण ने पूछा–''सेठजी, मैं इसका क्या करूँ? सेठ ने हँसते–हँसते जवाब दिया कि इसे तुम अपने पास रख, तुझसे बढ़कर कोई मूर्ख कभी मिले तो उसे दे देना, इतने दिन अपने पास रखना। ''उसने कहा बहुत ठीक।'' यों कहकर वह चला और उस डंडे को लिये गाँव में फिरने लगा। सेठ जब मिलता तब उससे पूछता–क्यों? क्या तुझे अपने से बढ़कर कोई मूर्ख अभी नहीं मिला? तब तो मैंने तुझको सबसे बड़ा मूर्ख समझकर सच्ची ही परख की है। इस तरह सेठ उससे दिल्लगी किया करता।

सेठ बीमार पड़ा,एकदिन बीमारी बहुत बढ़ गयी मरने का समय नजदीक मालूम पड़ने लगा। उससमय ग्रामीण ने आकर सेठ से पूछा–

''क्यों सेठजी क्या करते हो?'' सेठ–''अब तो चलने की तैयारी है।''

ग्रामीण –लौटकर, कबतक आओगे? सेठ–भाई अब मुझे तो वहाँ जाना है, जहाँ से लौटकर नहीं आया जा सकता । ग्रामीण–पाथेय और राहखर्चा तो साथ ले लिया है न? सेठ– भाई! यहाँ का पाथेय वहाँ काम नहीं आता। मैंने धन तो बहुत कमाया था, परन्तु इस जगत से मिली हुई सारी चीजों को अंत में यहीं छोड़ जाना पड़ता है। संसार के लोग जिस वस्तु को धन समझते हैं,महात्मा उसे धन नहीं मानते। कबीरजी ने कहा है–

'कबीरा सब जग निर्धना, धनवंता नहि कोय। धनवंता से जानिये जाके रामनाम धन होय।'

परन्तु भाई! इस रामनाम धन में तो मैं कंगाल हूँ रंक हूँ। इसीसे इस भरे हुए घर में जैसे खाली हाथ आया था, वैसे ही खाली हाथ जा रहा हूँ।

ग्रामीण–तुम तो जाते हो, अब यह तुम्हारा डंडा किसे दूँ?

सेठ– तुझसे कहा था न कि जो तुझे अपने से मूर्ख दीखे उसे ही दे देना। इसमें पूछना क्या? ग्रामीण– तो सेठ! यह तुम्हारा डंडा तुम्हीं रखो। सेठ–क्यों? किसलिये? ग्रामीण– जहाँ थोड़े दिन रहना है उस जगत के लिए तो इतना बड़ा वैभव! इतनी सम्पत्ति और इतना अटूट धन! और जहाँ अनंत काल तक रहना है वहाँ के लिये कुछ भी नहीं। इससे बढ़कर मूर्खता और क्या होगी? मैं मूर्ख हूँ तो तुम मूर्ख शिरोमणि हो। इसलिये अपना डंडा संभालो।

ग्रामीण के आखिरी शब्द सेठ के हृदय को चीरकर अन्दर प्रवेश कर गये। बड़ा असर हुआ और उस समय सेठ से जो कुछ बन सका उसने कर लिया।

''तुलसी अजहुँ सुमिरि रघुनायक तरे गपंद जाके एक नाँय। कछु ह्वै न आयो गयो जन्म जाय।''

काशी में एक दिन गंगा किनारे भक्त कबीर जी बैठे हुये थे। एक जिज्ञासुने जाकर पूछा कि 'महाराज– शास्त्रों में जहाँ तक ज्ञानकी बड़ी प्रशंसा की गई है परन्तु किसी से अमर ज्ञान के सम्बन्ध में पूछा जाय तो उत्तर मिलता है कि ज्ञान तो अनहद हैं। उसकी कोई हदही नहीं बताता। इसलिये क्या करना चाहिये?

श्रीकबीरजीने कहा–ज्ञान की हद मैं जानता हूँ। जिज्ञासु ने कहा''तो महाराज बतलाने की कृपा कीजिये''। श्रीकबीर जी ने कहा–

''पढ़ने की हद समझ है,समझन की हद ज्ञान।
ज्ञानकी हद हरिनाम है, यह सिद्धान्त उर आन।।''

ज्ञानी भी ज्ञान की कथा कहते–कहते अंत में भगवान्नाम स्मरण करते हैं और तभी वे शान्ति पाकर विराम को प्राप्त होते हैं। अतएव तू हरिनाम में चित्त लगा।

''भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे। रामनाम ही सो अंत सबही को काम रे।।''

अभी से क्यों न लग जायँ?

जब बोलने की शक्ति नहीं रहेगी, प्राण पखेरू इस देह पिंजरे में से उड़ गया होगा, तब पीछे से सब कहेंगे ''रामनाम सत्य है।'' परन्तु जब तक शरीर ठीक है, देह में आत्मा है, जीभ में दो शब्द बोलने की ताकत है तब तक रामनाम लेने की सीख कोई नहीं देता।''अब रखवारी क्या करे चिड़िया चुग गई खेत। इस बात को तो कोई भाग्यशाली संत ही समझते है जो सब छोड़ नाम जप में तत्पर हैं।

'' रसनियाँ काहे न नाम उचारो।
लोलुप भयउ लोभ लालच बस, जाय सुजन्महि हारो।।
कामद धन दारिद दुकाल हर, सो तुम निपट विसारो।
लघुजीवन जिय जानि भजहु नित, सियवर प्रीतम प्यारो।।
काल कराल सीस पर नाचत, मूढ़ गाल जनि मारो।

सुत वनिता धन धाम विषय सुख, दुख सम जानि निवारो।।
जौं आपन भल चहहु सकल विधि, मोर कह्यो चित धारो।
सुमिरहु नाम चारु चिंतामनि नाते सब परि टारो।।
सेवहु संत अनंत छाड़ि छल, पटकि लाजको भारो।
ऊँच कहाय कवन सुख जो पै निज आतमा न तारों।।
प्रेमलता मैं मोर तोर करि राग रोष जिय जारो।''

ज्ञान और विराग योग जाग तप त्याग करैं।।
सिद्ध भये तरैं माया बीचही में लूटती।
तीरथ व्रतादि दान साधन अनेक धरै
पचि मरै चावल लहै न भूसा कूटती।।
भक्ति महारानी भवभानी जुक्ति जानी परै
ताहू में तो लालच लवारी आदि जूटती।
शंभु शिर सुरसरि धरि भनी 'रंगमनी'
राम नाम जाप विन ताप त्रै न छूटती।।

अनल के कारन रकार बिन कुकरम
कोटिन कलप के जराय को पचाइहै?
त्योंही आदि आदित के कारन अकार बिन
माया मोह निशा अंधकार को नसाइ है?
चन्द्र मोद कारन मकार बिन तीन ताप
छीन कर कौन शीत शांति सरसाइ है?
जपै 'रसराम' सीताराम जो जपावै आप
रामनाम जाप बिन जरनि न जाइ हैं।।

राम यश गाये बनी सबै रसरंग मनी
गाल गुल ज्ञान के गपोड़े नहि गपिये।
करम कलाप पापलीन धन के अधीन
करिकै वृथा ही न प्रयास ताप तपिये।।
पढ़ि पढ़ि ग्रन्थ पाठ पाथर न कीजै मन
गान तान चोज चतुराई में न चपिये।
लाखन में एक बात संत सीख सुखदात
शुभ गति चाहिये तो रामनाम जपिये।

गाइये न ग्राम गीत सुनिये नहीं सुप्रीत
हारी भवभीत रामकथा सुधा पीजिये।
चढ़िये न पंथन में पढ़िकै विवाद ग्रन्थ
पर दोष देखन में चित्त नहीं दीजिये।।
योग औ विराग तप त्याग हू की आस त्यागि
पागि रसरंग सदा संत संग कीजिये।
कोटिन में एक बात काशीपति करामात
रामधाम चाहिये तो रामनाम लीजिये।।

नाम लेने का मजा जिसकी जुबाँ पर आ गया।
धन्य जीवन हो गया चारों पदारथ पा गया।।

सीखो है सिलाक औ कवित्त छंद नाद सबै
ज्योतिपहू सीखो मन रहत गरूर में।
सीखो है सौदागिरी बजाजी और रस रीती
सीखो लाख फेरन में बहो जात पूर मे।।
सीखो सब जंत्र मंत्र तंत्रहू को सीख लानो
पिंगल पुरान सीखो सीखो सीख भयो सूर में।
सव गुन खान भयो निपट सयान राम
रटियो न सीखो सब सीख गयो धूर में।।

''तुलसी चतुर सराहिय रामनाम लयलीन।
पर धन पर मन हरन को वेश्या बड़ी प्रवीन।।
रामनाम रटते रहो, धरे रहो उर धीर।
कारज सकल सँवारिहैं, कृपासिंधु रघुवीर।।
बिगड़ो जनम अनेक को, सुधरे अबही आज।
होये राम को नाम जपु, तुलसी तजि कुसमाज।।
नहि कलि करम न भगति विवेकू। रामनाम अवलंबन एकू।।

काहू के आधार ग्यान भगति विराग योग
काहू के आधार जप दान तप धाम है।
काहू के आधार पाठ पूजन रसोइ केर
काहू के अधार रूप चरित ललाम है।।
काहू के अधार ब्रत नेम नृत्य गान तान
काहू के अधार ध्यान भजन अकाम है।

काहू के अधार बुधि विरति विवेक बल
मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है।।
काहू के अधार याग यजन विराग भाग
काहू के मनन भाव कोऊ अष्टयाम है।
कोविद कहाय कविताई में प्रवीन कोऊ
काहू के अधार सतसंग गुनग्राम हैं।।
काहू के अधार न्याय जोतिष पुरान मत
काहू के अधार अथ यजु रिग साम है।।
काहू के अधार गुन वचन निपुनाई
मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है।।
काहू के अधार भ्रात सुजन सहाय मीत
काहू के अधार माय बाप सुत बाम है।।
काहू के अधार हाट वाट के अधार कोऊ
काहू के अधार खाट गाँठि माहि दाम है।।
काहू के अधार दिन राति के अधार केऊ
काहू के अधार हिम काहू के सुघाम है।
जीविका अधार कोऊ कोऊ के अधार तन
मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है।।
लीला धाम रूप की अराधना कठिन अति
रोगन ग्रसित तनु कलिकाल राई है।
उठति अनेक व्याधि प्रेम नेम छूटि जात
एकरस एक टेक रहे न दृढ़ाई है।।
होत न विमल उर किये योग जप तप
पूजन पठन मति भोगन लुभाई है।
प्रेमलता ज्ञान ध्यान साधन उपाधि मय
सीताराम नाम की अपार प्रभुताई है।।

श्रीसीताराम नाम जप ही भजन है, नामजप ही शरणागति है, नामजप ही भक्ति है,नामजप ही ब्रह्मविद्या है, नामजप ही पराभक्ति है, नामजप ही प्रभु–प्राप्ति तथा पराभक्ति प्राप्ति का एकमात्र अमोध उपाय है। कहिये सभी अन्य साधनों से मुँह फेर कर केवल सीतारामनाम जपियेगा न अब?

७ २–साध्य–खण्ड ७

□ श्रीसीताराम नाम अनादि हैं □

कतिपय व्यक्तियों के हृदय में यह भ्रान्त धारणा बैठी है कि श्रीकौशलेन्द्र कुमार के अवतार होने पर, आप का रघुकुल गुरू श्री वशिष्ठजी द्वारा नामकरण के अवसर पर श्री रामनाम रखा गया। तभी से श्रीरामनाम का प्रचलन हुआ है। इसके पहले से अनादि सिद्ध श्रीनारायणादि सगुणब्रह्म के नाम भक्तसमाज में प्रचलित थे। ऐसे सज्जन को आधुनिक विद्वत्समाज द्वारा मान्य प्रमाण श्रीमानसजी की निम्न उद्धृत पंक्तियों पर विचार करना चाहिए।

''विषय करन सुर जीव समेता। सकल एक ते एक सचेता।।
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई।।''

यहाँ श्रीरामनाम अनादि, नित्य अवध अनादि तथा श्रीराम का अवधपति होना भी अनादि सिद्ध कहा गया है। यह उक्ति जगद्गुरु भगवान शंकरजी की थी।

अब आप और भी प्रमाण श्रीरामनाम के अनादि होने के विषय में लीजिये। श्रीमहाभारत शान्ति पर्व में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने भक्तराज अर्जुन से कहा है कि चारों वेदों में, पुराणों में, उपनिषदों में, ज्योतिषशास्त्रों में, सांख्यशास्त्र योग शास्त्रों में तथा आयुर्वेद आदि सद्ग्रन्थों मे महर्षियोने हम ब्रह्मों के बहुत से नाम गिना गये है। परन्तु वे सभी नाम अमुक अमुक लीला कार्य करने के निर्मित्त तत्त समयों में भक्तों द्वारा कहे गये। अत: वे सभी नाम गौण हैं, सादि है। भगवान्नामों को ही क्या कहें सभी मंत्रतत्त्वों में भी श्रीरामनाम परात्पर हैं? अत: अनादि हैं।

''ऋग्वेदेऽथ यजुर्वेदे तथैवार्थव सामसु।
पुराणे सोपनिषदि तथैव ज्योतिषेऽर्जुन।।
सांख्ये च योगशास्त्रे च आयुर्वेदे तथैव च।
बहूनि मम नामानि कीर्तितानि महर्षिभि:।।
गौणानि तत्र नामानि कर्मज्ञानि च कानि च।
सर्वेषु मन्त्र तत्त्वेषु रामनाम परात्परम्।।''

श्री आतप स्मृति में कहा गया है कि श्रीरामनाम नित्य हैं। सनातन है। ऐसे नाम का निरन्तर उच्चारण करते रहना इस जगती तल में सबों के लिए परम लाभदायक है। यहाँ सनातन शब्द से अनादि का ही भाव ग्रहण करना चाहिए।

''अयमेव परो लाभः सर्वेषां जगतीतले।
नाम व्याहरणं नित्यं श्रीरामस्य सनातनम्।।''

श्रीबृहस्पति स्मृति में श्रीरामनाम को परंब्रह्म कहकर अनादि बताया हैं क्योंकि परंब्रह्म अनादि है और सभी देवताओं से पूजित होना इनका महत्त्व परिचायक हैं। ऐसी विशुद्ध सम्मति सबों की है। महान् जनों को तो श्री रामनाम जप कर ही जीना भाता हैं।

''रामनाम परंब्रह्म सर्वदेवैः प्रपूजितम्।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि।।''

श्री शुक संहिता में श्री रामनाम को सनातन एवं श्री राघव के लिए परमप्रिय नाम बताया गया है। श्रीवृन्दावन विभूषण भगवान्श्री कृष्ण इसी रामनाम को जपकर वहाँ शोभा सम्पन्न हो रहे हैं। यहाँ भी सनातन शब्द में अनादित्व ही का भाव भरा है।

'' रामस्याति प्रिय नाम रामेत्येव सनातनम्।
दिवारात्रौ गृणन्नेषों भाति वृन्दावने स्थितः।।''

श्री केदारखंड में भगवान शंकरजी ने पार्वतीजी से कहा है कि श्रीसगुणब्रह्म के और जितने भी नाम है वह लीलाकार्यों को सम्पादन करते समय, उन कार्यों के सम्बन्ध से रखे गये। यथा मुरारि, खरारि इन नामों को राक्षसों के मारने पर रखे गये। परन्तु श्रीरामनाम सबों के आदि हैं।

''अन्यान्य यानि नामानि तानि सर्वाणि पार्वति।
कार्यार्थे सम्भवानीह राम नामादितः प्रिये।।''

श्री काशीखंड में भी भगवान शंकरजीने श्री रामनामही को आदि नाम कहा है। श्रीराम नाम के विमल सुयश को श्री ब्रह्मा, भगवान विष्णु के साथ हम (श्रीशिवजी) भी प्रेम पूर्वक कहते हैं और सुनते हैं। वही श्री रामनाम सकलेश्वर हैं और हैं आदि देव भी।

'' यस्यामलं प्रिय यशः सुयशो विधाता, ताक्ष्यध्वजश्च गिरिजे नितरां तथाहम्।
प्रेम्णा वदामि च श्रृणोमि सहैव ताभ्यां, तद्रामनाम सकलेश्वरमादि देवम्।।''

श्री इतिहासोत्तम नामक उप पुराण में महर्षि भृगुजी कहते हैं कि आदि पुरुष परात्पर ब्रह्म श्रीराघवजी का आदि रामनाम कोई स्वप्न में भी उच्चारण कर ले तो उसके समस्त पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। यदि श्री रघूत्तमजू के आदि रामनाम को कोई यत्नपूर्वक जपता है तो उसका क्या कहना है।

''स्वप्नेऽपि नामस्मृतरादिपुंसः क्षयं करोत्याहित पाप राशि:।
प्रयत्नतः किं पुनरादिपुंसः संकीर्त्यति नाम रघूत्तमस्य।।''

श्री विष्णुपुराणमें श्रीव्यास देवजी ने कहा है कि श्रीराधवजी का सर्वश्रेष्ठ नाम श्रीराम है वही सनातन भी है। श्रीविष्णुनारायणादि नामों से हजार गुणा अधिक फल देने वाले हैं।

''श्रीरामेति परं नाम रामस्यैव सनातनम्।
सहस्रनाम सादृश्यं विष्णोर्नारायणस्य च।।''

श्रीशिवपुराण में भगवान शंकरजी ने श्रीनारदजी से कहा है कि श्रीरामनाम सकलेश्वर आदि देव है। जो ऐसे नाम का सतत स्मरण करते हैं भूतल मे वेही धन्य हैं। उन्हे परममुक्ति (श्रीसाकेत की प्राप्ति) तथा अचल विमल भक्ति एवं प्रभु श्रीराघवजी के कृपा प्रसाद सब मिलेंगे।

''श्री रामनाम सकलेश्वरमादि देवं
धन्या जना भुवितले सततं स्मरन्ति।
तेषां भवेत्परम मुक्ति प्रयत्नतः तथा
श्रीरामभक्तिरचला विमला प्रसाददा।।''

श्री सुश्रुतसंहिता में श्री रामनाम को प्रणव ॐ का भी कारण बताकर अनादि जनाया गया है तथा श्रीरामनाम ही को जगद्गुरु के पदपर प्रतिष्ठित किया गया है। अतः विशुद्ध चित्तवाले योगियों को श्रीरामनाम ही का ध्यान श्रेयस्कर बताया गया है।

''कारणं प्रणवस्यापि रामनाम जगद्गुरुम्।
तस्माद्धेयं सदा चित्ते यतिभिः शुद्ध चेतसैः।।''

परात्पर सगुण साकार ब्रह्म श्री अयोध्याबिहारी जी तत्त्वतः एकही ब्रह्म हैं परन्तु स्वरूपतः आपके पति पत्नी भावात्मक युगलरूप अनादिसिद्ध है। श्रीवृहद्विष्णुपुराण में श्री पराशरजी मैत्रेयजी से यही कहते हैं।

''द्वयोर्नित्यं द्विधा रूपं तत्त्वतो नित्यमेकता।
राममन्त्रे स्थिता सीता सीतामन्त्रे रघूत्तमः।।
यतो वर्णात्मको रामः सीता मात्रात्मिका भवेत्।
यदा शब्दात्मको रामः सीता शब्दार्थ रूपिणी।।''

श्रीमानसजी के नीचे लिखे उद्धरणों से भी दोनो में अपृथक् सिद्ध सम्बन्ध निश्चित होता है। एक दूसरे से कभी नहीं पृथक् रह सकते।

''गिरा अरथ जल बीचि सम, कहिअत भिन्न न भिन्न।
बन्दौं सीतारामपद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।।''
''प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई।।''
प्रभु करुणामय परम विवेकी। तनु तजि रहहि छाँह किमि छेकी।।

जैसे एक ही ब्रह्म स्वरूपत: युगल भाव से नित्य अखंड ब्रह्म कहाते हैं उसी भाँति ब्रह्म का सीतारामनाम पूर्ण नाम है। श्रीराम का श्रीसीता खंड नाम है। पूर्ण नाम का आधा भाग ही है। ब्रह्मपुराण में यही कहा गया है।

''सीताराम नाम्नस्तु सदैक्यं नास्ति संशय:।
इति ज्ञात्वा जपेद् यस्तु स धन्यो भाविनां वर:।।''

आधा खंड नाम जपने वाले को नाम जप का पूर्ण लाभ नहीं होता। श्रीजानकी विनोद विलास नामक आर्ष ग्रन्थ में कहा है कि सीतानाम के बिना रामनाम जपे अथवा रामनाम के बिना सीताराम जपे तो उसे चिरंकाल तक नामसाधना करने पर भी यथार्थ सुख नहीं होगा। अत: युगल भावात्मक ब्रह्म का ही ध्यान पूजन अथवा नाम जप करना चाहिये।

सीतां बिना भजेद्रामं सीतां रामं विना भजेत्।
कल्पकोटि सहस्रैस्तु लभते न प्रसन्नताम्।।
सीतारामात्मकं ध्यानं सीतारामात्मकार्चनम्।
सीतारामात्मकं नाम जपं परतरात्परम्।।

सच्ची बात तो यह है कि जहाँ श्रीसीतासहचारिणी रूप से श्रीराम के संग में नहीं हों वहाँ धोखा ब्रह्म है सच्चे ब्रह्म नित्ययुगलरूप में ही रहते हैं। उसी भाँति श्रीरामरूप के बिना श्री सीतारूप अकेले धोखा ब्रह्म है। एक दूसरे के बिना रह ही नहीं सकते। युगलरूप ही सनातन ब्रह्म हैं। ऐसा श्रीजानकी विलासोत्तम नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है।

''स रामो न भवेज्जातु सीता यत्र न विद्यते।
सीतानैव भवेत् सा हि यत्र रामो न विद्यते।।
सीता रामं बिना नैव राम: सीतां बिना नहि।
सीतारामयोरेण सम्बन्ध: शाश्वतो मत:।।''

अब विचारना यह है कि श्री वैदेही, मैथिली, जानकी, किशोरी, श्री प्रिया आदि आपके अनेक नामों में अनादि कौनसा नाम है? श्री लोमश संहिता में आपका सतातन अनादि नाम (श्री) सीता ही कहा गया है।

''यज्ञ दान तपस्तीर्थ स्वाध्यायात्मबोधत:।
कोटि संख्यं राम नाम्नि पावित्र्यं वर्तते प्रिये ।।
तत: कोटि गुणं पुण्यं सीतानाम सनातनम्।
इति ज्ञात्वा भजन्त्येतान् मुनयो नारदादय:।।''

अर्थात् यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, वेदाध्ययन, आत्मज्ञान आदि साधनों से कोटि गुणा अधिक फल है। एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण में और एक बार श्रीसीतानाम उच्चारण करने से श्री रामनामोच्चारण के कोटिगुणा अधिक फल है। श्रीसीतानाम की अधिक महिमा कहने का कारण भी है। जगत्पिता की अपेक्षा जगज्जननी में वात्सल्य, क्षमा, करुणा आदि गुण अधिक होना स्वाभाविक है।

''गह सिसु वच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखइ जननी अरगाई।।''

पिता अबोध संतान की सुरक्षा में इतने तत्पर नहीं रहते जितना जननी। और भी कारण है वह श्रीगुणरत्नकोष के शब्दों में पढ़िये।

''मातर्मैथिलि राक्षसीस्त्वयि तदैवार्द्राऽपराधास्त्वया
रक्ष्यन्त्या पवनात्मजाल्लघुतरा रामस्य गोष्ठीकृता।
काकं तं च विभीषणं शरणमित्युक्ति क्षमौ रक्षता
सा नः सान्द्र महागसं सुखयतु क्षान्तिस्तवाकस्मिकी।।''

अर्थात् रावण वधोपरान्त अशोकवाटिका में जाकर जब श्रीहनुमानजी ने सद्यः अपराधकृत राक्षसियों को अंग भंग करके उन्हें ताड़ना दे देकर श्रीमैथिलीजी से मारने की आज्ञा माँगी, तब आपने श्रीहनुमानजी को नीति बताकर राक्षसियों की रक्षाकर ली। याद रहे कि इससे पहले राक्षसियों ने आपसे रक्षा करने की प्रार्थना भी नहीं की थी। श्री राघवजी के शरणागत दरबार में इतनी छूट नहीं है। वहाँ तो काकरूपधारी जयंत को त्राहि– त्राहि कहना पडा था। श्रीविभीषणजी को भी–

''श्रवण सुजस सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुवीर।।''

इनता तो कहना ही पड़ा तब जाकर उनकी रक्षा हुई। अतः जगज्जननी श्रीजानकीजी की क्षमाशीलता के सामने श्रीराघवजी की रक्षागोष्ठी हलकी हो गई। वही श्रीजानकीजू की आकस्मिकी क्षमाशीलता हम महापापी शरणागतों के लिए सुखद होगी। अतः श्रीसीतानाम भी क्षमादि गुणाधिक्य से भरा है। इसी दृष्टि से इस नाम की महिमा श्रीरामनाम से अधिक बतायी गई है। श्रीसीतानाम ही अनादि है ऐसा प्रमाण तो आपने श्रीलोमशसंहिता का पढ़ ही लिया। और भी युक्तिवाद सुनिये। अवतार लीला मे नामकरण के अवसर पर श्रीवशिष्ठजी ने आपका प्रधान नाम रखा वही अनादि सिद्ध(श्री) राम।

''सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक विश्रामा।।''

उसी भाँति श्रीनारदजी ने आपका नाम (श्री)सीता रखा था। तथा उसी नाम को तीनों लोकों में प्रसिद्ध बताया भी।

''इयं पुत्री महाभाग कुलद्योतकरी तब।
सीतेति नाम्ना विख्याता भविष्यति जगत्त्रये।।''

श्री परमहंस प्रेमलता जी कृत श्रीजानकीजन्म स्तुति में भी यही कहा गया है।

''ऋषि नारद आये, नाम सुनाये,सुनि सुख पाये,नृप ज्ञानी ।
सीता अस नामा पूरनकामा सब सुखधामा, गुनखानी।।''

आपकी अवतरण स्थली भी उसी अनादि नाम से संयुक्त है श्रीसीतामही। आपकी परत्व परिचायिका उपनिषद् भी आपके अनादि नाम से ही संयुक्त है सीतोपनिषद्। शिष्य परम्परा में भी सीतारामनाम ही जपने की रीति चली आ रही है।

''आदौ सीतापदं पुण्यं परमानन्द दायकम्।
पश्चाच्छ्री रामनाम्नस्तु कथनं संप्रश्यते।।''— श्री नृसिंह पुराणे

श्रीमनुशतरूपाजी की तपस्या सिद्ध होने पर जब स्वयं श्री साकेतविहारी युगलरूप प्रगट हुए उस अवसर पर भी आपके श्रीसाकेतधाम का नित्य सनातन अनादि नाम सीताराम ही कहा गया है। और श्रीसीताजी के अनादि होने का हेतु भूत इन्हें वहाँ आदिशक्ति कहकर साथ—साथ इन्हें कोटि—कोटि उमा रमा ब्रह्माणियों को उत्पन्न करने वाली कहकर आपका परात्पर ऐश्वर्य भी सूचित किया गया है।

''वाम भाग सोभति अनुकूला। आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला।।
जासु अंस उपजहिं गुन खानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी।।
भृकुटि विलास जासु जग होई। रामबाम दिसि सीता सोई।।''

''सुनु सीता तब नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं।
तोहि प्रानप्रिय राम, कहों कथा संसार हित''

इस दोहे में भी श्रीसीतानाम ही रटने को कहा गया है। महर्षि कल्प श्रीस्वामी जानकीवरशरणजी महाराज ने भी श्रीसीता ही नाम रटने का आदेश दिया है। श्रीजानकी जन्म बधाई का पद है।

''जय जय जय श्रीस्वामिनि सीता।

श्री जानकिवर की प्रानपियारी,जपत रहत नित सीता सीता।।''

श्रीगोलाघाट सद्गुरुसदन के श्री महाराज भी अनन्त नामों में श्रीसीतारामनाम पर ही अड़ने की बात कहते हैं।

''सुनयना माई सिय सब गुनन भरी।
उमा रमा ब्रह्मानि अंसजा, निगम परत्व करी।।
श्री मनु मननशील अति तप करि, सेयो परम हरी।
सोइ दशरथ नृप अवध ललन भये, सोइ प्रभु इनहिं वरी।।
इन्हके नाम अनन्त संत कहैं,सीतानाम अरी।
अति मृदुतर चित नित हित हुलसत प्रीतम स्ववश करी।।
सत्य सत्य यह सत्य कहत है, जेहि प्रिया दृष्टि परी।
सोइ भव तरिहि सु युगल विहारिनि मिलि गुरु सुफल फरी।।''

श्रीगुरुधौली वाले महाराज भी श्रीसीतानाम को ही अनादि बताते हैं।

''नहि सरि करै हमारी स्वामिनि।
गंधर्व नाग यज्ञ किन्नर सिधि साध्य गुह्यक विद्याधर कामिनि।
पंचवटी वनिका असोक की, गुन तद्रूप वपुष अभिरामिनि।।

केहि लेखै रति सहित त्रिया त्रय,वृन्दा विपिन विहारिनि स्वामिनि।
सर्वेश्वरी सिरोमनि सबकर,परम प्रकासक पर दुति दामिनि।।
परतम ब्रह्म परतमा महिषी, सीता नाम अनादि सुनामिनि।
मिथिला अवध राज कामद पिय 'मधुरी' सँग विहरत दिन जामिनि।।''

पं० जगदीशशुक्ल अपने श्रीरामनाम विज्ञान में लिखते हैं 'रामनाम की सत्ता सनातन और पुरातन है। संसार परिवर्तनशील है और रहेगा। अनेकों प्रकार के आन्दोलन हुए और मिटे। शासकों का उदय भी हुआ और अस्त भी। साम्प्रदायिकों औंर दार्शनिकों की कुश्तियों हुई, राजनीतिज्ञों और सत्ताधिकारियों की लड़ाइयाँ हुईं तथा लुटेरों और आक्रमणकारियों की हलचलें हुईं। किन्तु इनसे राम–नाम की सत्ता और महत्तापर कोई आँच नहीं आयी। इतिहास साक्षी है कि १३२५ से १३५१ के बीच मे राम–नाम के मूलोच्छेद के लिए तनी हुई बादशाह मुहम्मद तुगलक की तीखी तलवार को स्वामी रामानन्दाचार्य के एक ही हुँकार पर लकवा मार गया और सम्पूर्ण शासन असमर्थ होकर आचार्य के पावन पाद पद्मों में घुटने टेक दिये। मुसलमानी शासन के धर्मोन्मूलक अत्याचारों से ऊबकर मस्जिद दौड़ाने वाले महान् योगेश्वर बाबा श्यामदास जी ने हजारों नगरों में हजारों मस्जिदों को दौड़ा दिया जो आज भी जहाँ की तहाँ पड़ी हुई रामनाम की शक्ति और सामर्थ्य की गवाही दे रही है। प्रमाण के लिए आप सिन्धराज्यके शिकारपुर नगर में जाकर फरलाँग दौड़कर सड़क पर पड़ी हुई बूढ़ी मस्जिद से उसका इतिहास पूछ सकते है और मुसलमानी अत्याचारो के दाँत खट्टे कर देने वाली नामनाम की सत्ता का स्मरण कर सकते हैं। इस प्रकार रामनाम की सत्ता को भी दबाए रही और झुकाए रही उसे सदैव अपने चरणों पर। यह सत्य जो है, शिव जो है सुन्दर जो है।

सर्वोत्तम भगवन्नाम

श्रीपद्मपुराण में ब्रह्मा का वचन है श्रीनारदजी के प्रति

श्रीविष्णु नारायणादि जितने असंख्य भगवन्नाम हैं, सभी श्रीरामनाम से ही उत्पन्न हुए हैं, और सभी हरिनामोंके वैभव भी रामनाम ही से प्राप्त हैं। इस बात को मैंने भलीभाँति जान लिया हैं। अत: श्री देवर्षिजी आप भी श्री रामनाम ही का जप करें।

''विष्णु नारायणादीनि नामानि चामितान्यपि।
तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि रामनामत:।।
सर्वेषां हरिनाम्नां वै वैभवं रामनामत:।
ज्ञातं मया विशेषेण तस्मात् श्रीनाम संजय।।''

श्री विष्णु पुराण में उल्लिखित श्री भगवान वेदव्यास का कथन है कि भगवान विष्णु के एक–एक नाम सर्ववेदाध्ययन से बढ़कर है और ऐसे सहस्रों विष्णु नाम से बढ़कर एक बार का श्री

रामनाम उच्चारण है। ऐसी सज्जनों की सम्मति है। श्री राघवजी का सर्वोत्तम और सनातन नाम तो श्रीराम ही है। श्रीविष्णु नारायणादि नामों से अनंत गुणा बढ़कर है।

''विष्णोरेकैक नामापि सर्ववेदाधिकं मतम्।
तादृग्नाम सहस्रेण नामनाम सतां मतम्।।
श्री रामेति परं नाम रामस्यैव सनातनम्।
सहस्रनाम सादृश्यं विष्णोर्नारायणस्यच।।''

इतिहासोत्तम नामक आर्ष ग्रन्थ में स्वयं परमपुरुष भगवान अपने वैष्णव भक्तों को उपदेश देते हुए आदेश देते हैं कि श्री रामनाम के समान कोई नाम न तो अब तक हुआ है न भविष्य में होगा ही। अतएव आप सब इसी नाम का कीर्त्तन कर (शुभाशुभ कर्म) बन्धनों से मुक्त हो जाइये।

''रामनाम समं नाम न भूतो न भविष्यति।
तस्मात्तदेव संकीर्त्त्य मुच्यते कर्मबन्धनात्।।''

प्रभासपुराण में स्वयं परमप्रभुकी श्रीमुखवाणी है, श्री नारदजी के प्रति—देवर्षे, हमारे सभी नामों में मुख्यतम नाम श्री रामनामही है। समस्त प्रकार के प्रायश्चित इसी नामके उच्चारण मात्र से हो जाते है तथा सभी प्रकार के पापों से जापक मुक्त हो जाता है। श्रीरामनाम मेरे लिये प्राणों से बढ़कर प्रिय है। श्री नारद आप सत्य सत्यजानिये रामनाम से बढ़कर मेरे लिये प्रिय कोई वस्तु नहीं है। (तब तो प्रभो! श्री रामनाम के जापक भी आपको सर्वाधिक प्रिय होंगे ही? क्यों हम ठीक कहते हैं न?)

''नाम्नां मुख्यतमं नाम श्रीरामाख्यं परन्तप।
प्रायश्चितमशेषाणां पापानां मोचकं परम्।।
श्रीरामनाम परमं प्राणत्प्रियतरं मम।
नहि तस्मात् प्रियः कश्चित सत्यं जानीहि नारद।।''

'क्रियायोगसार' नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि भगवान विष्णु का एक—एक नाम समस्त वेदाध्ययन से बढ़कर मंगलदायक है। उन सभी विष्णुनारायणादि नामों में नाम तत्त्व के ज्ञाता श्रीरामनाम ही को सर्वश्रष्ठ बताते हैं। इसलिये बताते हैं कि श्रीविष्णुसहस्त्रनाम पाठ करने से जो लाभ होगा, उससे अधिक तो केवल एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण मात्र से ही हो जायगा।

''विष्णो र्नामानि विप्रेन्द्र सर्व वेदाधिकानि वै।
तेषां मध्ये तु तत्त्वज्ञ रामनाम परं स्मृतम्।।
विष्णोर्नाम सहस्राणि पठनाद्यल्लभते फलम्।
तत्फलं लभते मर्त्यो रामनाम स्मरन्सकृत्।।''

श्रीशिवसंहिता में कहा गया है कि श्रीनारायणादि भगवन्नाम बहुत अधिक संख्या में रटते जाओ परन्तु इनमें प्रभावप्रकाश तो श्री रामनाम ही से मिलेगा। अब बताइये आप ही, जब ये

नाम श्रीरामनाम ही से माँगकर प्रकाश जापक को देंगे तो जापक सीधे श्री रामनाम ही क्यों न रटेगा? अब साकार निराकार की बात भी सुन लीजिए। श्री नारायणादि नाम तो सगुण साकार ब्रह्म के हैं। निरीह अज आदिक नाम निर्गुण निराकार ब्रह्मके है। दोनों के ऐश्वर्य प्रभाव अलग अलग है। परन्तु जो नित्य नवलमाधुरी से विभूषित श्रीसाकेतधाम के संशोभित करने वाले श्रीदशरथनन्दन श्रीराघवजू है उनमें दोनों साकार निराकार ब्रह्मों के ऐश्वर्य एकत्र भरे हैं। श्रीरामनाम सगुण निर्गुण दोनों ब्रह्मों को प्रगट करने वाले हैं। श्रीमानसजी का वचन है—

''अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।''

अत: श्री रामनामके स्मरण से ही साक्षात् श्रीरामधाम नित्य अयोध्या(श्रीसाकेत) में आपका प्रवेश संभव है।

''नारायणादि नामानि कीर्त्तितानि बहून्यपि।
सभ्यग् भगवतस्तेषु रामनाम प्रकाशकम्।।
नारायणादि नामानि साकारैश्वर्यमुक्तमम्।
नित्यं ब्रह्म निराकारमैश्वर्य वै विभाति च।।
उभयैश्वर्यमान्नित्यो रामो दशरथात्मजः।
साकेते नित्य माधुर्ये धाम्नि संराजते सदा।।
रामनाम परं तत्त्वं द्वयोः कारणमुज्ज्वलम्।
तस्य संस्मरणादेव साक्षाद्रामालयं ब्रजेत्।।''

(जब अपने इष्टधाम श्री साकेत की प्राप्ति एकमात्र श्रीसीतारामनाम जप से ही संभव है तबतो हम भूलकर भी कभी अन्य नाम का उच्चारण नही करेंगें। चर्चावश भले कहा जाय। जपने के ख्याल से तो कहेंगे ही नहीं) अब आप जरा श्री पुलस्त्यसंहिता की बात भी सुन लीजिये। श्रीकृष्ण श्रीवासुदेव आदि अनेक भगवन्नाम है सही, परन्तु वेदों ने तो उन सबों में सबसे बड़ा श्री रामनाम ही को बताया है।

''कृष्णेति वासुदेवेति सन्ति नाम्नान्यनेकशः।
तेभ्यो रामेति यन्नाम प्राहुर्वेदाः परं मुने।''

किन्तु कठिनाई यह है श्री कृष्ण नारायणादि नाम तो झट से निकल आवेंगे, परन्तु सरल उच्चारण वाले श्रीरामनाम कहने में नानी मर जायगी। मरे क्यों नहीं? पापियों के मुख से सीधे रामनाम कैसे कहा जायेगा? तभी तो पूर्वजीवन में व्याधवृत्ति में फँस जाने के कारण श्रीवाल्मीकिजी को मुखसे सीधे रामनाम कहते नहीं बना। सप्तर्षियों ने बताया, खैर मरा मरा उल्टा ही नाम जपो तो सही। इससे भी बन जायगा! क्या अन्य भगवान्नाम भी उल्टे जपने पर फलदायक होंगे। आप बोलते क्यों नहीं? सच सच क्यों नहीं बताते?

अत: श्रीरामनाम जापक बनने के लिए पहले हजारों जन्मों तक श्री कृष्ण नाम अथवा श्रीनारायण नाम को दिन—रात अखंड जप करो। तब कहीं जाकर, श्रीरामनाममें अनुराग होगा। दिलग्गी है श्री रामनाम जपना? ऐसा प्रौढ़ वचन हम नहीं कहते हैं। श्री वशिष्ठतन्त्र में ऐसा आया है—

''कृष्ण नारायणादीनि नामानि जपतोनिशम्।
सहस्रैर्जन्मभिः रामनाम स्नेहो भवत्युत।।''

कहाँ तक प्रमाण दिये जाँय? श्रीमेरूतन्त्र में भी कहा गया है कि भगवान्नामों में सबसे मुख्यनाम श्रीरामनाम ही है। अनन्त ब्रह्माण्डों में प्रचलित भगवान्नामों में श्रीरामनामसे बढ़कर कहीं भी कोई दूसरा नाम नहीं देखा गया है।

''नाम्ना मुख्यतमं नित्यं रामनाम प्रकीर्तितम्।
नातः परतरं नाम ब्रह्माण्डेऽपि प्रदृश्यते।।'

श्रीमहारामायणमें भगवान शंकरजी श्रीपार्वतीजी से कहते है परमेश्वरके अनन्त नामों में श्रीरामनाम सर्वोत्तम है।

''परमेश्वर नामानि सत्यनेकानि पार्वति। परन्तु रामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम्।

श्रीपद्मपुराण का यह श्लोक प्रसिद्ध ही है—

''राम रामेति रामेति राम रामे मनोरमे।
सहस्र नाम तात्तुल्यं रामनाम वरानने।।''

श्रीमानस में भी इसका अनुवाद है—

''सहस नाम सम सुनि सिय बानी। जपि जेई पिय संग भवानी।।''

देवर्षि नारदजी ने स्वयं श्रीराघवलाल से वरदान माँगा है। आपके श्रीरामनाम पापनाशन में सबसे बड़े समर्थ सिद्ध होवें। आपकी भक्तिरूपी पूर्णिमा की रात में श्रीरामनाम पूर्णचन्द्रवत् बने रहें। उनके सामने अन्य नाम तारागणवत् स्वल्प प्रकाश वाले बने रहेंगे। ऐसी ही नाम झाँकी आपके भक्तों के हृदयाकाश में सदैव बनी रहे।

''यद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक ते एका।।
राम सकल नामनते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका।।
राका रजनी भगति तब, रामनाम सोइ सोम।
अपर नाम उडगन विमल, बसहु भगत उर व्योम।।''

अब हम स्थानाभाव से अधिक प्रमाण न देकर अपने पूर्वाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज के श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका से केवल दो घनाक्षरी कवित्त उद्धृत कर, इस प्रकरण को समाप्त करते हैं।

'नाम तो अनन्त तामें रामनाम भूप है।''
नारायणादि नाम कहे कोटि वार तऊ
तुल्यता न होत नाम वारक अनूप है।
और नाम देत भुक्ति मुक्ति विष्णुलोक लगि
रटे रामनाम देश पावै रसरूप है।।

कीजिये न हठ सठपन छोड़ि दीजे नाम

परम पीयूष और मत अंधकूप है।

(श्री)युगल अनन्य साँच बदत बजाय बात

नामतो अनन्त तामें रामनाम भूप हैं।।

और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ

रामनाम चित्त चिंतामनि चाहि चाह रे।

और नाम रैयत दिवान औं वजीर सम

रामनाम अचल अखंड बादशाह रे।।

और नाम शिष्य सद् समता सजाये सदा

रामनाम गुरु गुन अगम अथाह रे।

(श्री) युगल अनन्य और नाम दिन चारि यार

रामनाम एक रस नित्य निर्वाह रे।।''

कृपालु पाठक बतायें इतने शास्त्रों के प्रबल प्रमाण की जानकारी होने पर आप कौन–सा भगवन्नाम जपेंगे?

''जैसे ब्रह्मरूपन में राम महाराजा रूप

धामन में राजा धाम अवध सुभ्राजा है।

जैसे सब ग्रन्थन में राजा वाल्मीकि काव्य

कविन में वालमीकि सुजस दराजा है।।

रामभक्त धीरन में राजा हनुमंत वीर

तारक षडक्षर ज्यों मंत्रन समाजा है।

ईश शिरताजा जपै शंभु रसराममनी

सब हरिनामन में रामनाम राजा है।।''

कतिपय समन्वयवादी सज्जन और भगवन्नामों को युक्तिवाद से रामनाम के तुल्य ही प्रभावयुक्त बताते है। वे इतने शास्त्रप्रमाणों की कैसे उपेक्षा करेंगे? यदि करें भी तो उनकी कौन सुनता है? भक्तसमाज में सर्वाधिक प्रचार और प्रसार तो श्रीरामनाम का ही है।

सर्वश्रेष्ठ मन्त्र

हम श्रीरामनाम को मन्त्र कैसे मान लें? मन्त्र में तीन अंगों का होना आवश्यक है। आदि में वागबीज ऐं, कामबीज क्लीं, शक्तिबीज ह्रीं श्रीबीज श्रीं आदि अनेक मन्त्रबीजों में किसी न किसी बीजाक्षर की संगति मन्त्र देवता के वाचक नाम के साथ होना अनिवार्य है। सो श्रीरामनाम में नहीं देखते। पुन: वषट्, फट्, वौषट्, स्वाहा, नम: आदि शक्तियों में किसी एक भी शक्ति का साहचर्य श्री रामनाम में है नहीं। अत: बीजहीन शक्तिहीन कीलक(मन्त्र देवता का वाचक) मन्त्र को मन्त्रकोटि में परिगणित करना कैसे बने? किसी भी तार्किक के मन में ऐसी शंका उत्पन्न होना सहज सम्भव है।

समाधान यह है कि रामनाम सवांगपूर्ण मन्त्र ही नहीं महामन्त्र है। श्रीरामशब्द स्वत: बीज रूप हैं। ये अग्निबीज है, भानुबीज है,चन्द्रबीज है, सर्वशक्ति बीज है, सभी मन्त्र बीज है, सर्ववेद बीज है, चराचर जगत बीज है। यहाँ तक कि सभी भगवन्नामों के बीज तथा सभी सगुणब्रह्मों के अवतार बीज भी श्रीरामनाम ही है। तब अलग से बीज जोड़ने की क्या आवश्यकता? अब उपर्युक्त बीजों के लिए प्रमाण लीजिये:–

अग्नि सूर्य तथा चन्द्र बीज–

वंदौ नाम राम रघुवर के। हेतु कृशानु भानु हिमकर के।।

श्रीमहारामायण में श्रीरामनाम स्थित रकारमात्र को वडवानल से लेकर सभी अग्नियों का कारण माना गया है। अत: रकार मनोमल तथा शुभाशुभ कर्मों को भस्मकर देते हैं जो अन्य किसी भी अग्नि से सम्भव नहीं।

''रकारोऽनल बीजं स्याद् ये सर्वे वडवादय:।
कृत्वा मनोमलं सर्व भस्मकर्मशुभाशुभम्।।''

श्रीरामनाम के मध्याकार से सूर्य उत्पन्न होते हैं। अत: अकार के प्रभाव से जापक के हृदय में वेदशास्त्रों के बिना पढ़े ज्ञान हो जाता है। श्रीरामनाम स्थित मकार से अमृतपूर्ण चन्द्रमा उत्पन्न होते हैं।

''अकारो भानुवीजं स्याद् वेदशास्त्र प्रकाशक:।
मकाश्चन्द्र बीजं च पीयूष परिपूर्णकम्।।''

श्रीरामनाम त्रिदेवों के भी बीज अर्थात् उत्पन्नकर्ता है। श्रीरामनाम के रकार मात्र से ब्रह्मा विष्णु महेश तथा सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। अत: शक्ति बीज भी हैं।

''रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरि:।
रकाराज्जायते शुम्भु: रकारात्सर्व शक्तय:।।''

सभी मन्त्रबीज श्रीरामनाम:–

श्रीपद्मपुराणमें श्रीशिवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि श्रीरामनाम असंख्य मन्त्रों तथा असंख्य भगवन्नामों के बीज है। परमानन्ददाता हैं। वे महामन्द हैं जो इनकी उपेक्षा करके अन्य साधन में समासक्त हो रहे हैं।

''असंख्य मन्त्र नाम्नां च बीजं शर्म्मास्पदं परम्।
अनादृत्य महामन्दाः संशक्ताश्चान्य साधने।।''

श्रीपुलहसंहिता कहती है कि सभी मन्त्र तत्त्व श्री रामनाम में इस प्रकार गुप्तरूप से स्थित हैं जैसे पिटारी में छिपाये हुए रत्न हों।

''यथाकरण्डे रत्नानि गुप्तान्यज्ञै र्न दृश्यते।
तथैव सर्वमन्त्राश्च रकारेषु व्यवस्थितः।।''

श्रीमहाशम्भु संहिता में श्री मैथिलीजी स्वयं अपने प्राणवल्लभजू से कहती हैं। प्रियतम! कोई प्रणव को कोई आपके षडक्षर मन्त्रराज से बड़ा बताते हैं, परन्तु मेरे मत से दोनों ही आपके रामनाम से ही सिद्ध हैं। अतः दोनों के कारण भूत आपके नाम ही बड़े हैं।

प्रणवं केचिदाहुर्वै बीजं श्रेष्ठं तथापरे।
तत्तु ते नामवर्णाभ्यां सिद्धिमाप्नोति मे मतम्।।''

सगुणनिर्गुण ब्रह्मवीज श्रीरामनाम ही है।

श्रीशिवसंहिता में श्रीनारायणादि सगुण ब्रह्म तथा नित्य निराकार ब्रह्म का भी कारण रामनाम को कहा गया है। यदि उभय ब्रह्म अनादि हैं किन्तु नामजप से ही इन दोनों के अनुभव होते हैं। इस दृष्टि से दोनों के प्रगट करने वाले श्रीरामनाम वीजभूत हुए। अतः श्रीरामनाम संस्मरण से श्री रामधाम की प्राप्ति होती है।

''नारायणादीनि नामानि साकारैश्वर्यमुत्तमम्।
नित्यं ब्रह्म निराकारमैश्वर्य वै विभाति च।।
रामनाम परं तत्त्वं द्वयोः कारणमुज्ज्वलम्।
तस्य संस्मरणादेव साक्षाद्रामालयं ब्रजेत।।''

सगुणब्रह्मों के अवतार बीज श्रीरामनांम हैं।

श्रीस्कन्द पुराण में श्री शिवपार्वती संवाद रूप में कहा गया है कि सभी अवतार श्रीरामनामकी शक्ति से प्रगट होते है। सत्य कहता हूँ। देवि! श्रीरामनाम की महिमा बड़ी अद्‌भुत है।

'' सर्वेऽवतारा श्रीरामनाम शक्ति समुद्‌वाः।
सत्यं वदामि देवेशि! नाम माहात्म्यमद्‌भुतम्।।''

पुनः वायु पुराण में भी यही बात आयी है।

''सर्वेषामेवावताराणां कारणं परमाद्‌भुतम्।
श्रीमद्रामेति नामैव कथ्यते सद्‌भिरन्वहम्।।''

श्रीरामनाम अनन्त ब्रह्माण्डों के तथा चराचर जगत् के बीज हैं। श्रीपद्मपुराण में कोटि–कोटि ब्रह्माण्डों को रामनामांश से उत्पन्न कहकर त्रिदेवसहित उनकी स्थिति भी रामनाम ही में बतायी गयी है।

'रामनामांशतो जाता ब्रह्मामाण्डाः कोटिकोटिशः।
रामनाम्नि परं धाम्नि संस्थिता स्वामिभिस्सह।।'

श्रीरामपूर्वतापनी उपनिषद में सम्पूर्ण सचराचर जगत की स्थिति श्रीरामनाम में उसी भाँति बतायी गयी है, जैसे वटबीज में वट के विशालवृक्ष गुप्तरूप से स्थित रहते हैं।

'यथैव बटबीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः।
तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम्।।''

सभी वेदों के बीज भी रामानाम ही हैं–

श्री भुसुण्डि रामायण कहती है श्रीरामनाम असंख्य कोटि लोकों के जैसे कारण हैं, उसी भाँति सभी वेदों के भी बीज हैं।

'असंख्य कोटि लोकानामुपाददानं परात्परम्।
तथैव सर्ववेदानां कारणं नाम उच्यते।।'

श्री पुलहसंहिता का कहना है कि जैसे बीज ही में शाखापल्लव संयुक्त विशालवृक्ष सूक्ष्म रूप से छिपे रहते हैं, उसी भाँति समस्त वेदराशि श्रीरामनाम के रकार में स्थित रहती है।

'बीजे यथा स्थितो वृक्षः शाखा पल्लव संयुतः।
तथैव सर्व वेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिताः।।'

ऊपर भी श्रीरामनाम को सर्वशक्ति बीज कहा जाता है। श्रीवृहद्विष्णुपुराण में श्रीपराशर जी ने अपने शिष्य से कहा है कि स्वभाविकीशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति आदि जितनी भी लोकपूज्या शक्तियाँ हैं, सभी श्रीरामनाम के अंश से ही उत्पन्न हैं।

'स्वाभाविकी तथा ज्ञानक्रियाद्याः शक्तयः शुभाः।
रामनामांशतो जाता सर्वलोकेषु पूजिताः।।'

उपरिनिर्दिष्ट उद्धरणों से स्पष्ट हो गया है कि श्रीरामनामात्मक मन्त्र बीजहीन नहीं है। स्वयं बीजभूत हैं अतः बीज एवं कीलक उभय मन्त्र संपत्ति एकमात्र श्रीरामनाम ही में है। रही नमस्कारात्मक शक्ति की बात, सो श्रीनाम स्वयं सर्ववेद मुनि भक्त जन नमस्कृत हैं। जिनको सभी नमन करें, जो सबके नम्य हों, वही तो नाम है। इसी दृष्टि से ऋग्वेद की संहिता ५।३।१० कहती है।

'भूरि नाम वन्दमानो दधाति।।'

भक्तराज अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीमुख से श्रीरामनाम की स्तुति सुनकर, श्रीआदिपुराण में नित्य विशुद्ध रामनाम को बार–बार नमस्कार करते हैं।

'नमोस्तु नामनित्याय नमो नामप्रभाविणे।
नमोस्तु नामशुद्धाय नमो नाममयाय च।।'

अत: श्रीरामनाम सर्वाङ्गपूर्ण सिद्धमन्त्र शिरमौर हैं। अनेक वैदिकमन्त्रों के द्रष्टा, तान्त्रिक तथा शाबरमन्त्रों के स्रष्टा, मंत्ररहस्य, मर्मज्ञ, मौलिमणि भगवान् शंकर श्रीरामनाम ही को महामन्त्र एवंबीजमन्त्र मानकर जपते हैं।

'बन्दौ नाम राम रघुवर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को।।
विधिहरिहरमय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो।।
महामन्त्र जोइ जपत महेसू। कासी मुकुति हेतु उपदेसू।।'
वीर महा अवराधिये साधे सिधि होय।
सकल काम पूरन करै जानै सब कोय।।
बेगि विलम्ब न कीजिये लीजै उपदेस
बीजमन्त्र जपिये सोई जो जपत महेस।।श्रीविनय प० १०८।१२।

अत: श्रीसीतारामनाम केवल भगवन्नामो में ही सर्वोत्तम नाम हों, इतना ही नहीं, इन श्रीनाम में सभी तन्त्रमन्त्रोंकी शक्ति भरी है। या यों कहिये कि मन्त्रशास्त्रोंमें प्रशंसित सभी महामन्त्रों में भी रामनाम ही सर्वश्रेष्ठ मन्त्र हैं। इस सम्बन्ध के शास्त्रप्रमाण तो और बहुत हैं। हम केवल थोड़े से प्रमाण पाठकों के हृदय में अपने जाप्यनाम में मन्त्रात्मक प्रभाव दृढ़ाने के लक्ष्य से उद्धृत करते हैं।

श्रीनारद पञ्चरात्रसंहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही सभी मन्त्रों के शिरोमणि हैं। अन्य मन्त्रों को भी इन्हीं के प्रभाव से सिद्धि मिलती है। श्रीरामनामही में सभीं नामों, मन्त्रों की सिद्धियाँ सिमट कर भरी हैं। अत: श्रीरामनामात्मक भावप्रिय मन्त्र ही को जपना चाहिये।

'अयं सर्वेषु मन्त्रेषु चूड़ामणिरूदाहृत:।
मन्त्राणां सिद्धिदो मन्त्र: श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।
सर्वार्थ सिद्धि युक्तेषु नाम्नामेवार्थतायत:।
अत: श्रीरामनामेदं भजेद्भावैक वल्लभम्।।'

बात ब्रह्मयामल नामक मन्त्रशास्त्र की है। भगवती पार्वती अपने प्राणनाथ भगवान शंकर से पूछती हैं, प्रभो, आपने कई मन्त्रशास्त्रों में औरों की दृष्टि से अलक्ष्य होने की गुटिका नामक तंत्रात्मिका युक्ति बतायी। विशेष खड़ाँऊ पर चढ़कर, जल में स्थल की भाँति चलने की युक्ति भी बतायी। दूसरेके शरीर में अपनी जीवात्मा को प्रवेश कराने का मंत्र भी बताया। वचन सत्य होने की शक्ति प्राप्त करने वाले मन्त्र बताये। सभी सृष्टि के धन देखने की अर्थसिद्धि भी बतायी। मन में जो आवे, वही सिद्ध हो जाय, ऐसी मनोमयी सिद्धि भी बतायी। ज्ञान—विज्ञान के चमत्कार प्रगट करने वाली लक्ष्मी कुतूहल की सिद्धि, मनोरथपूर्ति वाली वाञ्छासिद्धि तथा आकाश में उड़ने की शक्ति देने वाली खेचरी सिद्धि बताई। इन सभी सिद्धियों के पृथक—पृथक मन्त्र हैं। अब मैं यह जानता चाहता हूँ कि कोई ऐसा एक ही मन्त्र है क्या, जिस एक ही मन्त्र से सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जायँ? मुझे अपनी अनुगामिनी जानकर मुझे छिपाइये नहीं। मन में मंत्र शक्तियों का प्रभाव निर्णय कर, तत्त्वत: कहिये।

गुटिका पादुका सिद्धिः परकाया प्रवेशनम्।
वाचा सिद्धिश्चार्थ सिद्धिस्तथा सिद्धिर्मनोमयी।।
ज्ञान विज्ञान कर्माणि नाना सिद्धिकराणि च ।
लक्ष्मी कुतूहला सिद्धि र्वाञ्छा सिद्धिस्तुखेचरी।।
केनेदं सर्वमाप्नोति देव मे वद तत्त्वतः।
सर्वतो निर्णयं कृत्वा ज्ञात्वा मामनुगामिनी।।

भगवान शंकरजीने उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि प्रिये, तुमने तो केवल सर्वसिद्धियों को देने वाला एकही मन्त्र पूछा। मैंतो तुम्हें ऐसा मंत्र बताऊँगा, जो समस्त सिद्धियोंको देने में अकेले समर्थ होगा। वही मंत्र सभी प्रकारका ऐश्वर्य भी देगा, उसीसे परामर्थ भी सिद्ध होगा। लौकिक पारलौकिक मंगलों को नित्यनित्य देनेवाला भी वही मंत्र समर्थ होगा। बतावें ? वही मंत्रजपो, जो बताऊँ। वह है सभी नामोंसे, सभी मंत्रोंसे बढ़कर परात्पर प्रभाव रखनेवाला श्रीरामनाम। सच्चासुख पाने के लिए श्रीरामनामजप से बढ़कर, कोई उपाय है भी नहीं। सभी तंत्रमंत्रों का तत्त्व मुझे मालूम है। मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, विल्कुल सत्य कह रहा हूँ।

'सर्वैश्वर्य प्रदं सर्वसिद्धिदं परमार्थदम्।
महामाङ्गलिकं नित्यं रामनाम परात्परम्।।
नातः परतरोपायः सुखार्थं बर्तते प्रिये।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं नान्यथा वचनं मम।।'

संमोहन नामक तंत्रशास्त्रमें भी भगवान् शंकरजीने पार्वतीजी से यही बात बताई है। हे पार्वति! मैने जितने मंत्रों के चमत्कार बताये हैं, उन सभी मंत्रों द्वारा प्राप्त होनेवाली सिद्धियाँ, एक मात्र श्रीरामनामही से निश्चित रूपसे मिल जाती हैं। बात यह है कि उन मंत्रों के शास्त्रोक्त प्रयोग साधकोंसे सविध बन नहीं पाते। अतः उन मंत्रोंके प्रयोग सहित सिद्ध करनेपर भी सिद्धि शीघ्र नहीं मिलती। श्रीरामनामसे वे सभी सिद्धियाँ अनायास प्राप्त हो जाती हैं। इनका प्रयोग अमोघ है, अचूक है। अतः देवि, अन्यान्य मंत्रोंका संग्रह त्यागकर, शीघ्र सर्वसिद्धिदायक श्रीरामनामही कीर्त्तन का नियमपूर्वक करना चाहिए।

'यन्मयोदितमुल्लासं मन्त्राणांभूधरात्मजे
तत्सर्वं रामनाम्नैव सिद्धिमाप्नोति निश्चितम।।
सर्वेषां सुप्रयोगानां सिद्धिरन्यत्र दुर्लभा।
श्री रामनाम स्मरणादनायासेन सिद्धयति''
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वसिद्धिदम्।
कर्त्तव्यं नियमं देवि त्यक्त्वाऽन्यान्यमन्त्रसञ्चयान्।।

श्रीमानसजी का भी यही निर्णय है।

साधक नाम जपहि लय लाये। होहि सिद्ध अनिमादिक पाये।।

स्मरण रखना चाहिये कि सिद्धि प्राप्त करनेकी श्रीनाम जपविधि अलग है। जिसे किसी तांत्रिक गुरुसे समझना होगा। अधिक नामाभ्याससे सभी सिद्धियाँ आपही सुलभ होंगी।

श्रीतन्त्रसार नामक मंत्रशास्त्र में भी श्रीपार्वतीजी से भगवान् शंकर कहते हैं कि सभी मंत्र समूहोंका निचोड़ रूप श्रीरामनामही है। वेदोंके तो हृदय ही हैं। श्रीरामनाम सुधा धाम है। साधकोंके हृदय में अन्यान्य तंत्रमंत्रों की सविधजप द्वारा अनेक सिद्धियाँ प्राप्त करनेकी रूचि तभी तक रहती है, जब तक श्रीरामनामरूपी अमृत का पान नहीं किया है। वह मंत्र शिरोमणि नाम सबोंके लिए दुर्लभ है। पापी कैसे जपेंगे? अनेक जन्मोंके पुण्यपुञ्ज उदय होनेपर ही श्रीरामनाम जपमें प्रवृत्ति होती है।

इदमेव परं सारं सर्वेषां मन्त्रसंहते।
वेदानां हृदयं सौम्य रामनाम सुधास्पदम्॥
यावच्छ्री रामनामस्तु पानं नास्ति नृणां शिवे।
तावन्मन्त्राणि यन्त्राणि रुचिः स्याद् हृदयस्थले॥
दुर्लभं सर्वजीवानामिमं मन्त्रेश्वरेश्वरम्।
कथं भजन्ति पापिष्ठाः सुकृतौघं बिना प्रिये॥'

मंत्रमहोदधिनामक मंत्रशास्त्रमें कहा है कि श्रीरामनाम तो प्राणिमात्रका अपना प्राण सर्वस्व है। सभी मंत्रोंके परम गुरु हैं। इसी नाम के संकीर्तनसे प्राणी सर्वोत्तम मोक्ष प्राप्त करते हैं।

श्रीरामनाम सर्वस्वं मन्त्राणां परमं गुरुम्।
यस्य संकीर्त्तनाज्जन्तुर्याति निर्वाणमुत्तमम्॥'

अब हम आगे कुछ संहिताओं के प्रमाण उद्घृत करेंगे। वेदों के मंत्रभागही संहिता कहलाती है। श्रीविश्वामित्र संहितामें श्रीराघवजीके गुरु श्री विश्वामित्रजी वैश्यों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि उन महाभागने अध्यात्म शास्त्रों को भलीभाँति जान लिया है, उनने परमसुधा चख लिया, जिनने वाणीमात्रसे श्रीरामनामका कीर्तनकर लिया। श्रीरामनाममें सभी मंत्र तंत्रोंकी शक्ति भरी है। जो सिद्धियाँ सहज सुखमयी हैं, तथा जिन्हें दुर्लभसे दुर्लभ परासिद्धि कहते हैं, सभी इन श्रीरामनामके जपसे ही प्राप्त हो जाती है। नाना मंत्रतंत्रोंके प्रयोगों से अनजान नाहक मूर्ख रचते पचते रहते हैं। परम अभिराम श्रीरामनामको छोड़कर सिद्धि कहाँ पाइये? हमतो भाई, उन्हीं श्रीरामनामका भजन करते हैं, जिनके स्मरणमात्र से सभी मनोरथों के फल नयन गोचर हो जाते हैं।

'ज्ञातमध्यात्म शास्त्रं च प्राप्तं तेनामृतं महत्।
कीर्तितं तेन वचसा श्रीरामेत्यक्षर द्वयम्॥
सर्व मन्त्रमयं नाम यन्त्रास्पदमनुत्तमम्।
स्वाभाविकीं परां सिद्धिं दुर्लभां तज्जपाल्लभेत्॥
वृथा नाना प्रयोगेषु मन्त्रतन्त्रेषु मानवाः।
यत्नं कुर्वन्त्य हो मूढ़ास्त्यक्त्वा श्रीरामसुन्दरम्।

यस्य संस्मरणादेव सर्वांथाश्चक्षुगोचरा:।
भवन्त्येवानयासेन तच्छी राममहं भजे।।'

हिरण्यगर्भ संहितामें श्रीअगस्त्यजी अपने शिष्य श्रीसुतीक्ष्णजी को उपदेश करते हुए कहते हैं कि श्रीरामनाम ही परममन्त्र है। श्रीनामही मंत्रात्मक पद है। पुनर्जन्म एवं मरणभयको मिटा कर संसारके तारने वाले भी यही हैं।

'श्रीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम्।
तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्यु भयापहम्।।

श्रीमहाशम्भु संहिता में श्रीशिवजीका वचन है कि श्रीरामनाम समस्त मंत्रोंके उत्पन्न करने वाले बीज हैं। यही संजीवनी जड़ी है। जिसके हृदयमें श्रीरामनाम सरकार बस जाँय, वह चाहे हलाहल विष पान कर लेवे, या प्रलयकालीन अग्निमें पड़ जाय, अथवा कालके मुखही में घुस जाय, उसे कहीं भय नहीं होगा। 'जो पै राखिहैं राम तो मारिहैं को रे''। (श्रीकवितावली)

''श्रीरामनामाखिल मन्त्रबीजं सञ्जीवनं चेत् हृदये प्रविष्टम्।
हालाहलं वा प्रलयानलं वा मृत्योर्मुखं वा विशतां कुतोभी:।।''

पतञ्जलि संहितामें कहा गया है कि श्रीरामनाम सभी मंत्रोंके परम एवं अक्षय बीज हैं। जो सतत इनका कीर्त्तन करते रहते हैं, उनके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

''रामेति नाम परमं मन्त्राणां वीजमव्ययम्।
ये कीर्त्तयन्ति सततं तेषां किञ्चिन्न दुर्लभम्।।''

श्रीप्रमोद रामायणमें कहा गया है कि जितने भी अनन्त शुभदायक मन्त्र हैं, सभी श्रीरामनाम के अंश से ही उत्पन्न हुए हैं। अज्ञानी श्रीरामनामके उज्ज्वल माहात्म्य को नहीं जानते हैं।

रामनाम्नांशतो जातास्सुमन्त्राश्चप्यनन्तका:।
अवुधा नैव जानन्ति नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।।

अब कुछ पुराणोंके प्रमाण भी आप जान लें। श्री पद्मपुराण में परामर्थतत्त्व के मर्मज्ञ जगद्गुरु भगवान् शंकरजी, श्रद्धास्वरूपिणी भगवती पार्वतीजी से कहते हैं कि सभी वेदों को बराबर पाठ करलें, सभी महामन्त्रों का अनेकवार जप करलें, उनसे कोटिगुण पुण्य एकवारके श्रीरामनाम उच्चारण से ही प्राप्त होगा। तन्त्रशास्त्रमें जितने भी प्रयोग बताये गये हैं, वे उन उपायोंसे सिद्ध हों न हों, निश्चय नहीं है, किन्तु श्रीरामनामके कीर्तनसे वेही समस्त सिद्धियाँ अनायास तथा अतिशीघ्र प्राप्त होंगी ही।

''जपत: सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति।
तस्मात्कोटि गुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते।।
ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तेस्तैर्यत्साध्यते फलम्।
तत्सर्वं सिद्धयति क्षिप्रं रामनामैव कीर्त्तनात्।।''

पुराणसंग्रहमें कहा गया है– श्रीवेदव्यास–शिष्य श्रीसूतजी, श्रीशौनकजी से कहते हैं कि सभी मन्त्रसमूहों में श्रीरामनाम सर्वोपरि है। परमगोप्य हैं। श्रीपार्वतीपति शंकरजीके तो जीवन ही हैं। चित्तवृत्तिको संशुद्ध बनाने वाले भी यहीं हैं।

''सर्वेषां मन्त्रवर्गानां रामनान परं स्मृतम्।
गोप्यं श्रीपार्वतीशस्य जीवनं चित्तशोधकम्।।''

कालिकापुराणका वचन है कि श्रीरामनाम प्राणोंको अनुप्राणित करने वाले हैं। जीवोंको जीवित रखने वाले हैं; तथा सभी मन्त्रोंमें परममंत्र हैं। क्यों न सर्वदा सर्वप्रिय हों?

''प्राणानां प्राणमित्याहु जीविनां जीवनंपरम्।
मन्त्राणां परमं मन्त्रं रामनाम सदाप्रियम्।।''

श्रीक्रियायोगसार नामक पुराणभागमें आया है कि दो अक्षर वाले श्रीरामनाम सभी मंत्रों से अधिक फल देने वाले हैं। इनके एकवार के ही उच्चारणसे, पापीसे पापी भी परमगति पा लेता है।

''रामेत्यक्षर युग्मं हि सर्वमन्त्राधिकं द्विज।
यदुच्चारण मात्रेण पापी याति पराङ्गतिम्।।''

महाभारत शान्तिपर्व में श्रीरामनाम को सभी मन्त्रतत्त्वों में परात्पर कहा गया है।

''सर्वेषु मन्त्रतत्त्वेषु रामनाम परात्परम्।।''

इतने प्रमाण श्रीरामनामके अभ्यन्तर मन्त्रशक्ति बताने में पर्याप्त है। प्रिय पाठक ! अब आपही निर्णय कीजिये कि कौनसा भगवन्नाम आपको जपना है?

षडक्षर युगलमन्त्रराज तथा श्रीयुगलनाममें विशेष अन्तर नहीं है। यदि संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ सज्जन श्रीमन्त्रराज का शुद्ध–शुद्ध उच्चारण नहींकर पावें, तो वे अधिक संख्यामें श्री युगलनामही जपें। अथवा जिन्हें निरन्तर नाम रटनेका चस्का लग गया है। एकक्षणभी श्रीनाम बिना रहा नहीं जाता, ऐसे सतत नामयोगीसे यदि गृहीत मन्त्रराज काजप न बने तो कोई चिन्ता न करें, नामजपमें ही मन्त्रजपका फल एवं मन्त्रत्याग दोषका परिहार हो जायगा। इस सम्बन्धमें नामके परमाचार्य परमहंस श्रीप्रेमलता जी कहते हैं–

मंत्र षडक्षर नाम जो, युगल एक जिय जोइ।
प्रेमलता सियराम नित, रटै भरमना खोइ।।
सर्व तजै नहि दोष जो, मन लागै सियराम।
प्रेमलता सब धर्मके, कारण नाम ललाम।।

यदि नामजप के अतिरिक्त आपको और अवकाश हो, तो आपको गुरु–गृहीत युगलमन्त्रराज अवश्य जपना चाहिये। यदि आप अपनी साधनाको मन्त्रमयी बनाना चाहते हों और आपको निरन्तर मन्त्र के जप एवं नाम संस्मरण में मन रम गया है, तो आप नामजप छूट जानेकी चिंता न करें। मन्त्रजपसे ही उन्हें श्रीनामजप वाला लाभ भी हो जायगा। कहने का भाव कि श्रीनाममन्त्र में अभेद है। आपकी रुचि हो तो दोनों जपिये, और अवश्य जपिये। यदि दोनोंमें से किसी एकही में सतत साधननिष्ठ होना चाहें, तो शेषके त्याग में आप दोषभागी नहीं होंगे। ऐसी समझ इस लेखक की भी है।

श्रीरामनाममन्त्र में सर्वाधिक फलोत्पादक प्रभाव होते हुए भी जापकोंके लिए कुछ विशेष सुलभता और सुगमता है, जो अन्य मन्त्रोंमें दुर्लभ हैं। क्षुद्रदेवताओं के अल्पवीर्य मन्त्रोंके १— जनन, २—दीपन, ३— बोधन, ४—ताडन, ५—अभिषेक, ६—बिमलीकरण, ७— जीवन, ८— तर्पण, ९— गोपन और १०— आप्यायन— ये दश संस्कार करने पड़ते हैं। इनके बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। यथा—

''जननं दीपनं पश्चाद् बोधनं ताडनस्तथा।
अथाभिषेको बिमलीकरणाऽप्यायन पुनः।।
जीवनं तर्पणं गुप्ति र्दशैता मन्त्र संस्क्रिया।''

परम समर्थ श्रीनाममन्त्रमें इन संस्क्रियाओं की कोई अपेक्षा नहीं। इनके बिना भी तो उल्टे नामजपसे श्रीवाल्मीकि जी व्याध से ब्रह्मतुल्य बन गये। मन्त्रतत्त्ववेत्तागण मन्त्रोंमें छिन्न, रूद्ध, शक्तिहीन, पराङ्मुख, वधिर, नेत्रहीन, कीलित, स्तम्भित, दग्ध आदि ५० दोष बताते हैं। मांत्रिकों को इन्हें जानकर, इनसे बचते हुए मन्त्राराधन करना चाहिये। अन्यथा मन्त्रसिद्ध नहीं होने को। यथा —

''दोषानिमानविज्ञाय यो मन्त्रान् भजते जडः।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटि शतैरपि।।''

परन्तु श्रीनाममन्त्र तो जापकके असंख्य दोषोंको मिटाकर विशुद्ध बना देते हैं, इनमें दोष कहाँ से आ सकते हैं?

धर्मानशेष संशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमाः।
तेभ्योऽनन्तगुणं प्रोक्तं श्रेष्ठं श्रीनाम कीर्त्तनम्।।

— श्रीमार्कण्डेयपुराणे, श्रीव्यास वाक्यम्।

श्री विश्वामित्र—वशिष्ठ कलहमें पारस्परिक शपाभिशाप में सभी मन्त्र शक्तियाँ कीलित कर दी गई थीं। तबसे तान्त्रिकगण किसी भी मन्त्रसाधनमें सर्वप्रथम उत्कीलन प्रयोग द्वारा अपने इष्टमन्त्र को शापमुक्त कराकर, तत्पश्चात् मन्त्राभ्यास करते आये हैं। उत्कीलन प्रयोग सम्पूर्ण होनेपर, उसकी फलस्तुति इस प्रकार पठित होती है—

''इदं श्री त्रिपुरास्तोत्रं पठेत् भक्त्या तु यो नरः।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वशापाद् विमुच्यते।।
इति सर्व यन्त्रमन्त्रतन्त्रोत्कीलनं सम्पूर्णम्।।''

परन्तु परंब्रह्ममय श्रीरामनामात्मक मन्त्रशिरोमणि में शाप—प्रभाव कहाँ स्पर्श करने को? 'ब्रह्मराम ते नाम वड़' को कीलित कर सके, ऐसी सामर्थ्य किसमें है? गज, गणिका, अजामिल आदि बिना उत्कीलन किये ही, भगवन्नाम प्रभावसे परमपद प्राप्त कर चुके हैं।

वेदमन्त्रों के लिए शान्तिपाठ भले आवश्यक हों, परन्तु 'विश्रामस्थानमेकं' रामनाम तो स्वतः शान्तिस्वरूप हैं। सभी अमंगलों को मिटाकर, जापकोंके हृदय में परमशान्ति स्थापित करना आपका सहज स्वभाव है। रही मन्त्रों की सिद्धिमें पुरश्चरण की बात। सो अन्य सभी मन्त्रोंके आदि में विनियोग न्यास आदि अनिवार्य रूप से आवश्यक है, जपान्तमें पूजन, हवन, तर्पण, मार्जन,

ब्राह्मण भोजन भी आवश्यक है। इनके बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। परन्तु हारीतस्मृति नाममंत्र की सिद्धिके लिए इनकी भी आवश्यकता अनपेक्षित बताती हैं।

''बिनैव दीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां बिनैव हि।
विनैव न्यास विधिना जपमात्रेण सिद्धिदः।।''

साधक दुष्ट प्रयोग सिद्धिके लिए मन्त्रसाधनमें श्मसानपीठिका, शवपीठिका का उपयोग करते हैं, तीव्र वैराग्यपूर्वक ज्ञानार्जनके लिए अरण्यपीठिका का तथा जितेन्द्रियता लाभके लिए श्यामापीठिका का उपयोग होता है। आदिरामायण नाममंत्र में इनसबों को उपेक्षणीय बताती हैं—

देशकाल क्रिया ज्ञानादनपेक्ष्यं स्वरूपतः।
अनन्तकोटि फलदं नाममन्त्रं जगत्पतेः।।

शुचि अशुचि सब दशाओं में नाममंत्र का अभ्यास बन सकता है। सिद्धि के बाधकों की परचा भी न करें। उच्चारणमात्र होना है।

न शौच नियमाद्यत्र न सिद्धारि विचारणम्।
कल्पवृक्ष स्वरूपत्वाज्जनानां रामनामकम्।।

उपरिनिर्दिष्ट मंत्रसाधनके सभी आवश्यक नियमों के पालन करने पर भी मंत्र सिद्धि किसी को फलित होती है, किसी को नहीं। यह बात श्रीरामनामात्मक मंत्रमें नहीं है। सभी विधियों से हीन होनेपर भी, केवल नामग्रहणमात्र होना चाहिये। फल तो अवश्यम्भावी है। किसकी मजाल कि एकनामग्रहण के फल को भी व्यर्थ कर सके?

''अन्यदाराधनशतै र्मन्त्रं फलति नाथवा।
गृहीतमात्र फलदं रामनाम स्वरूपतः।।''

(ये सभी श्लोक श्री आदिरामायण के हैं)

श्रीरामनाम परत्त्व

श्रीभुसुण्डिरामायणमें कहा गया है कि परात्पर श्रीरामनाम असंख्य कोटि लोकों के उत्पन्न करने वाले हैं। सभी वेद भी श्रीनामही से प्रगट हुए हैं।

''असंख्य कोटि लोकानामुपादानं परात्परम्।
तथैव सर्ववेदानां कारणं नाम उच्यते।।''

श्रीशाश्वततंत्र में कहा गया है कि श्रीरामनामके प्रसादसे ही ब्रह्माजीमें सृष्टि रचना करने की, श्रीविष्णुलोकमें पालन करने की शक्ति प्राप्त हुई है। इन्द्रादिक देवगण भी श्रीरामनामही से समृद्धिमान बने हुए हैं।

भगवान् शंकरजी, कहते हैं कि हे देवि पार्वती! श्रीरामनाम ही के प्रसाद से मुझे ऐसी सामर्थ्य प्राप्त है कि तीनों लोकों के चराचर को क्षणमात्र में संहार कर डालता हूँ।

"धाता सृजति भूतानि विष्णु धार्यते जगत्।
तथा चेन्द्रादय: सर्वे रामनाम्ना समृद्धिमान्॥
यस्य प्रसादाद्देवेशि मम सामर्थ्यमीदृशम्।
संहारामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम्॥"

श्री लिङ्गपुराणमें भी श्री शिवजीने श्रीपार्वती जीसे ऐसा ही कहा है— पार्वती ! श्रीरामनाम के कणमात्र प्रभाव से मुझे शिवपद मिला है।

"यत्प्रभाव लवकांशत: शिवे शिवपदं सुभगं यदवाप्तम्।"

श्री लिङ्गपुराण में तो श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वती जी से कहा है कि हे प्रिये! मैं गोप्यसे भी गोप्य वस्तु कृपापूर्वक तुम्हें बता रहा हूँ कि साकार तथा निर्गुण निराकार दोनों प्रकारके ब्रह्मों से भी श्रीरामनाम परे हैं।

"साकाराद्गुणाच्चापि रामनाम परं प्रिये।
गोप्याद्गोप्यतमं वस्तु कृपया संप्रकाशितम्॥"

इस सम्बन्ध वाला श्रीमानसवचन सर्वविदित है।

"अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा॥
मोरे मत बड़ नाम दुहू तें। किये जेहि जुग निज बस निज बूते॥
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहि जनकी। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मनकी॥
एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म विवेकू॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें॥
व्यापकु एक ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन धन आनंद रासी॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अविकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी॥
नाम निरूपन नाम जतन ते। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें॥
निरगुन ते एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नाम बड़ राम तें, निज विचार अनुसार॥ २३॥
राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा । भगत होहि मुद मंगल बासा॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि विवाकी॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नाम जिमि रबि निसि नासा॥
भँजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन॥
निसिचर निकर दले रघुनन्दन । नामु सकल कलि कलेषु निकन्दन॥

सबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल, वेद बिदित गुन गाय।।२४।।
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सब कोऊ।
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक वेद वर विरिद बिराजे।।
राम भालु कपि कटुक बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा।
नामु लेत भवसिन्धु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं।
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा।।
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनिवर बानी।।
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती।।
फिरत सनेह मगन सुख अपने। नाम प्रसाद सोच नहिं सपने।।
ब्रह्म राम ते नामु बड़, बर दायक वर दानि।
रामचरित सतकोटि महँ, लिय महेस जियँ जानि।।२५।।

अर्थात् वेदशास्त्रों के मत से एक ही ब्रह्मतत्त्व के सगुण निर्गुण दोनों रूप अनिवर्चनीय है, महिमा दोनों की अगम अथाह है। दोनों ही अनादि हैं और हैं अप्रतिम निरूपम। नामरहस्य मर्मज्ञ श्रीगोस्वामिपाद के विचार से श्रीरामनाम उभय ब्रह्मस्वरूपों से बड़े हैं। क्योंकि श्रीनाम ने अपनी शक्ति से दोनों को स्ववश कर रखा है। श्री वैष्णवाचार्य शिरोमणि श्रीगोस्वामीजी महाराज का कहना है कि मैं कोई अधिकार पाकर प्रौढ़ वचन नहीं कहता। मेरे हृदय में श्रीरामनाम के प्रति ऐसा ही विश्वास है, रुचि और प्रीति भी श्रीनाम में इसी भाँति की है।

'प्रीति–प्रतीति जहाँ जाकी तहँ ताको काज सरो।
मेरे तो माय–बाप दोउ आखर, हौं सिसु–अरनि अरो।।
संकर साखि जो राखिं कहौं कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो रामनामहि ते तुलसिहि समुझि परो।।'श्रीविनयपत्रिका,२२६।५,६।

सगुण ब्रह्म तो प्रगट अग्नि के समान सर्वोपयोगी बने रहते हैं, निर्गुण ब्रह्म काष्ठगत गुप्त अग्निवत् अव्यक्त रहते हैं। उनकी सत्ता बुद्धिगम्य मात्र है। ऐसे तो दोनों ब्रह्मस्वरूपों का साक्षात् अनुभव अगम है, किन्तु श्रीनामाभ्यास में दोनों में से जिन्हें चाहिये सुगमतापूर्वक अनुभवगम्य बना सकते हैं। दोनों बह्मस्वरूपों से श्रीनाम को युक्तिवाद द्वारा बड़ा सिद्ध कर रहे हैं। प्रथम अव्यक्त निर्गुण ब्रह्म की बात लीजिये। ये सर्वव्यापक, अद्वय, महान् से भी महान्, अविनाशी एवं सच्चिदानन्द घन कहे जाते हैं। हमारे हृदय में भी अपनी आनन्दराशि के साथ विराजमान हैं। किन्तु आपकी अपरिमित आनन्दराशि से मेरे को क्या लाभ। सर्वसुहृद कहाने वाले के पास आनन्द का खजाना, अपने प्रयोजन से भी बहुत अधिक हो, वहीं हम आनन्दाभाव में दीन–दुखी बने रहें, तो आपकी आनन्दराशि मेरे किस काम की? सच है निर्गुण में उदारतादि गुण कहाँ पाइये? किन्तु

कृपण शिरोमणि! याद रखना मेरे पास तुम्हारे नाम का बल है। तुमसे वलात् आनन्द छीनकर रहूँगा। देखें कब तक छिपाते हो? हम पहले नामप्रतिपादक ग्रन्थों के स्वाध्याय, नामरहस्यमर्मज्ञ सज्जनों के सत्संग से श्रीनाम का मोल, महिमा प्रभाव को जानेंगे, अन्यथा क्षुद्र लौकिक प्रयोजन के लिए महाअनमोलरत्न को साग बैगन के मोल में गँवा देंगे। तत्पश्चात् नामप्रभावानुभवी जापकों से नामजप विधि सीखकर नामाभ्यास करेंगे। तबतो अव्यक्त यार तुम्हें व्यक्त सगुण स्वरूप में परिवर्तित होना ही पड़ेगा। हृदय में द्विभुज धनुषधारी उदार, दयालु रूप में प्रगट होकर मुझे अनन्त आनन्द में डुबों देना। रत्न को जौहरी से दाम अँकवाकर भजा लीजिये। उससे प्राप्त द्रव्यों द्वारा जो चाहिये प्राप्त करते रहिये। इस प्रकार निर्गुण ब्रह्म से श्रीरामनाम बड़े हुये। सगुण–लीला में वर्णित श्रीमानस पंक्तियों से पाठक सगुण ब्रह्म की अपेक्षा भी नाम को बड़ा समझ लें।

प्रिय रामनामते नाहि न रामो।
ताको भलो कठिन कलिकालहुँ आदि–मध्य परिनामों।।
सकुचत समुझि नाम–महिमा मद–लोभ–मोह–कोह–कामो।
राम–नाम–जप–निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो।।
नाम–प्रभाउ सही जो कहै कोउ सिला सरोरुह जामो।
जो सुनि–सुमिरि भाग–भाजन भइ सुकृति–सील भील भामो।।
वालमीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामों।
उलटे पलटे नाम–महातम गुञ्जनि जितो ललामो।।
रामतें अधिक नाम–करतव जेहि किये नगरगत गामो।
भये बजाइ दाहिने जो जपि तुलसीदास से बामो।।

श्री हनुमत्संहिता में श्रीहनुमान्जी श्री राघवलालजू से कहते हैं– प्रभो! आपसे आपके नाम बड़े हैं। मेरी ऐसी निश्चल मति है। आपने केवल अयोध्या को ही तो तारा है। आपके नाम तीनों लोकों को तारते हैं और सदा तारते रहेंगे।

'राम त्वत्त्वोऽधिकं नाम इति मे निश्चला मतिः।
त्वया तु तारिताऽयोध्या नाम्ना तु भुवनत्रयम्।।'

वेद–पुराण– शास्त्रों के सर्वश्रेष्ठ मर्मज्ञ भगवान् वेदव्यासजी ने श्रीविष्णुपुराण में बताया है कि श्रीरामनाम से बढ़कर कोई भी तत्त्व न तो वेदों में है, न स्मृतियों में, न संहिताओं में, न पुराणों में,न तन्त्रशास्त्र में। आपही बताइये,अब कौन सद्ग्रन्थ बाकी रह गये?

'रामनाम्नः परं किञ्चित्तत्त्वं वेदे स्मृतिष्वपि।
संहितासु पुराणेषु नैव तन्त्रेषु विद्यते।।'

श्रीकालिकापुराण तो शाक्तग्रन्थ है। इसमें पराशक्तिका ही परत्व कहा गया है। वहाँ भी श्रीरामनाम को सर्वेश्वर, शरणार्थियों के सुखद कहकर, बताया गया है कि सभी शक्तियों को उत्पन्न करने वाले

कारणभूत श्रीरामनाम ही हैं। किन्तु अधिकांश शक्तियाँ तमोमयी होती हैं। उनके हेतुभूत श्रीरामनाम तो तम से परे हैं।

'सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमस: परम्।
श्री रामनाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम्।।''

जगत् को अपने शासनाधीन रखकर, अपने बनाये हुये निश्चित नियमों पर चलाने वाले श्री ब्रह्म, विष्णु, महेशादि जगत् के नियामक कहे जाते हैं। श्रीकूर्मपुराण में कहा है कि नियामकों को भी उत्पन्न करने वाले तथा अपनी प्रेरणा के अधीन रखने वाले श्रीरामनाम ही सभी के सर्वेश्वर हैं। भगवान् शंकरजी श्री पार्वती जी को आदेश दे रहे हैं कि उन्हीं श्रीरामनाम का तुम निरन्तर जप करो।

'जपस्व सततं रामनाम सर्वेश्वर प्रियम।
नियामकानां सर्वेषां कारणं प्रेरकं परम्।।'

श्रीआदिपुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण्, श्रीअर्जुनसे बताते हैं कि श्रीरामनामही जगत्को धारण करतें हैं। श्रीनामही जगत्का पालन करते हैं। श्रीनामही की कृपासे नामोच्चारण होता है तथा श्रीनामही के शासन अधीन जपका फल भी है।

''नामैव धार्यते विश्वं नामैव पालयते जगत्।
नामैव नीयते नाम नामैव भुञ्जते फलम्।।

श्रीमहारामायण में भगवान् श्रीशंकरजी, श्रीपार्वतीजी से कहते हैं कि जगत् के पोषण धारण करने वाले श्रीरामनाम ही हैं। अतएव श्रीरमुक्रीड़ा धातु से व्युत्पन्न श्रीरामनाम ही को परब्रह्म कहा जाता है।

'पोषणं भरणाधारं रामनाम्नो जगत्सु च।
अतएव रमु क्रीड़ा परब्रह्माभिधीयते।।'

श्री भारतविभाग नामक उपपुराण में कहा गया है कि परमानन्द प्रदान कर्त्ताओं में श्रीराम नाम सर्वश्रेष्ठ है। अत: श्रीरामनामही को परब्रह्म, परमधाम तथा सभी कारणों के भी आदिकारण बताया गया है।

आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम्।
परंब्रह्म परंधाम परंकारण कारणम्।'

यह बात श्रीइतिहासोत्तम नामक उपपुराण में आयी है। श्रीपुष्कर मुनि नरकवासियों की दारुण यन्त्रणा देखकर दयार्द्र हो गये। उन नरकवासियों से कहा– भैया, तुम लोक परात्परब्रह्म श्रीरामनाम से विमुख रहने के कारण ही नरक में आ पड़े हों। यहाँ घोर पीड़ा सह रहे हो। हाहाकार से क्या लाभ। सर्वदु:खहारी रामनाम का स्मरण करो।

'किमत्र हाहाकारेण युष्माकमधुना ध्रुवम्।
स्मरणध्वं रामनामाख्यं मन्त्रं दुःखापहारकम्।।'

कोई बात नहीं, अब भी श्रीरामनाम सरकार को आरत होकर पुकारो। अर्थात् आरत स्वर से नामोच्चारण करो। ये महान से भी महान् होकर बड़े दयालु हैं। अपने उच्चारण करने वाले के

कृतज्ञ हो जाते हैं। कहना चाहिये कि ऐसे कृतज्ञ कोई परतत्त्व होंगे भी नहीं। अपनी उत्तम पुकार पर शीघ्र तुम्हें यहाँ से उबारने आ पहुँचेंगे। आगे का प्रसंग है कि हुआ भी ऐसा ही। श्रीमुनिराज के मुख से नाम सुनते ही ये नरक से छूट गये,तथा नामोच्चारण करते ही इनके लिए श्रीसाकेत से विमान आकर उस नरक के सभी वासियों को श्रीदिव्यधाम ले गये।

'कृतज्ञानां शिरोरत्नं रामनाम परात्परम्।
कथं न द्रवते श्रुत्वा स्वनामाह्वानमुत्तमम्।।'
'श्रुत्वा नामानि तत्रस्थास्तेनोक्तानि तथाद्विज।
नरका: नरकान्मुक्ता: सद्य: एव महामुने।।'

श्री प्रभासपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही ब्रह्म के मुख्यनाम हैं। इन्हें सर्वेश्वर का भी ईश्वर कहा गया है। मधुरता की खान है। इनके जीभपर स्फुरित होते ही, दिव्य रसखान श्रीसीताराम महारास का अनुभव होने लगता है।

'मधुरालयमदो मुख्यं नाम सर्वेश्वरेश्वरम्।
रसनायां स्फुरत्यासु महारासरसालयम्।।'

श्रीप्रमोदनाटक नामक आर्ष ग्रन्थ का वचन है। श्रीराघवजी के निर्मल नाम श्रीरामनाम है। यह नाम निर्विकार है। युगलस्वरूप को लखाने वाले हैं। ऐसे कृपानिधि हैं कि भक्तों के संकट सदा निवारण करते रहते हैं। ये सभी देवताओं से, मुनिवरों से तथा ईश्वर वर्ग से भी सम्यकपूजित हैं। मैं इन्हीं का स्मरण करता रहता हूँ।

'अनामयं रूपयुग प्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं दयानिधिम्।
स्मरामि श्रीराघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देव मुनीश्वरेश्वरै:।।'

श्री आदित्यपुराण में श्रीशंकरजी ने श्री पार्वतीजी को बताया है कि श्रीरामनाम में ही श्रीरघुलाल जी सपरिकर चारोभाई, गुणगण तथा मंगलमय श्रीधाम स्थित रहते हैं।

'रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातर: परिकरास्तथा।
गुणानां निचयं देवि तथा श्रीधाम मङ्गलम्।।'

श्रीवृहस्पति स्मृति में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही परब्रह्म है। सभी देवगण इन्हीं का सर्वाधिक पूजन करते हैं। महानुपुरुष तो इन्हीं को जपते हुये जीते हैं। यह मैं विशुद्ध सर्वसम्मत सिद्धान्त कहता हूँ।

'रामनाम परं ब्रह्म सर्वदेवै: प्रपूजितम्।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि।।'

श्री निर्वाणखण्ड अन्तर्गत श्रीशिवजी का सम्वाद है स्वयं श्रीरघुलाल जी के साथ। वाह्यभोगों के तृष्णालु मन्दबुद्धि वाले श्रीरामनाम के परत्व को क्या जानें? सभी वेदान्तों की सम्मति में श्रीरामनाम ही परब्रह्म है। यहीं जगत् के प्रभु हैं। सत् तथा असत् से परे, परमानन्द को जनन करने वाले हैं। परात्पर ईश्वर है। श्रीरामनाम तथा सभी महज्जन इन्हीं श्रीनाम की उपासना करते हैं।

'मन्दात्मानो न जानन्ति वहिस्र्थस्पृहायुता:।.

रामनाम परंब्रह्म सर्ववेदान्त सम्मतम्।।

जगत्प्रभुं परमानन्दं कारणं सद्सत्परम्।

रामनाम परेशानं सर्वोपास्यं परमेश्वरम्।।'

श्रीसौर्यधर्मोत्तर में कहा गया है कि श्रीरामनाम का परत्त्व सभी जगह वेदों में भरा है। मूर्ख नहीं जानते। इसी से तो भवसागर में डूबते हैं।

'परत्वं परमं नाम्नो विदितं सर्वत: श्रुतौ।

अबुधा: नैव जानन्ति सम्पतन्ति भवार्णवे।।'

यहाँ तक प्राचीन आर्षग्रन्थों के आधार पर श्रीरामनाम का परत्व प्रतिपादित हुआ, आगे हम अनन्त श्री स्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज की कुछ महावाणी श्रीसीताराम सनेहवाटिका से भी उद्धृत करेंगे।

श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीरामनाम के आद्यक्षर रकार के एक ही स्तुत्य अंश से अनीह अकाम निर्गुण ब्रह्म का प्रकाश होता है। श्री ब्रह्मा–विष्णु–महेश, ये त्रिदेव भी श्रीरेफही में निवास करते हैं तथा रेफही से प्रगट होते हैं। साधनों और सिद्धियों की समष्टि रकार ही में भासमान होती है। जापक इन्हें ही जपकर अनमोल एवं निश्चला पराप्रतिभा प्राप्त करते हैं।

'रेफहिके एक अंस प्रसंस से ब्रह्म अनीह अकाम प्रकासे।

तानहु देव समेत निकेत सदैव बसैं तेहि बीच निकासे

साधन सिद्धि समूह जहाँ लगि रेफ अनूपम अंक सुभासे।

(श्री) युग्म अनन्य पराप्रतिभा अनमोल अडोल जपे प्रतिकासे।।'१९१९।।

पुन: कहते हैं कि बुद्धि से बिचारकर देखोगे, तो श्रीजानकीरमणजू के श्रीरामनाम ही में तुम्हें निस्सन्देह समस्त उत्तमोत्तम तत्त्वों की स्थिति मिलेगी। ईश्वर के अवतार और अवतारी तथा तीनों जगदीश (ब्रह्मा,विष्णु, महेश) निस्सन्देह श्रीरामनामही के अभ्यन्तर दीख पड़ेंगे। कोटि कामाभिराम युगलस्वरूप, लीला, धाम तथा गुणगण सभी श्रीनाम ही से प्रगट होंगे। उन सबों का जापक एकत्र रसास्वादन करता है। ऐसे नाम को क्षणमात्र भी भूलने से अपार दु:ख होगा। अत: विचारपूर्वक इन्हीं नाम का निरन्तर रटन करते हुए जीवन धारण करना कर्त्तव्य है।

'जानकीरमण नाम मध्य व्यवधान बिना।

निखिल सुवस्तु वरवोध सोध कीजिये।

ईश अवतार अवतारी जेते जगदीश

तेते शकहीन नित नित्त लखि लीजिये।।

युगल स्वरूप कोटि काम तें अनूप

लीला धाम गुन सुछबि प्रतच्छ रस पीजिये।

(श्री) युगल अनन्य पलपाब विरहित होय।

हाय हरतौर गौर युत भज जीजिये।।' १४६७।।

श्रीयुगलकिशोर जू का युगलरूप भी श्रीयुगलनामों के अभ्यन्तर नख–शिख पर्यन्त नित्य विराजमान रहते हैं तथा रूपों के अङ्ग –अङ्ग में नाम विराजमान हैं। श्रीनाम तथा रूप का रहस्य अगम अथाह है। सभी नहीं समझ सकते।

'नामी नाम माँझ नख शिख लौं विराजमान

हेरिये सुजान मान भान को विहाय के।

ऐसो कौन अंग रसरंग निधि जामें नाम

ललित ललाम नहिं लसत सुभायके।।

संत सतगुरु सुचि संग के विहीन नर

आन तान गावत कुरंग नीर न्हाय के।

(श्री) युगल अनन्य अनमोल नाम नामी गति

अगम अथाह कैसे पावे बिललाय के।।११३५।।

सखेन्द्र श्रीरसरंगमणिजी महाराज की विमल महावाणी भी पठनीय है–

रामनाम गुरु को परमगुरु प्रेमपद

रामनाम सुर को परम सुर एक है।

रामनाम मन्त्रन को महामन्त्र मुक्तिदानि

रामनाम जन्त्र तन्त्र खानि सिद्धि सेक है।

रामनाम ज्ञानहू को ज्ञान ध्यान ध्यानहूं को

जोगहूं को जोग और विवेक को विवेक है।

रटै 'रसराम' आठयाम हटै मद काम

मिलै सीताराम गहे रामराम टेक है।

रामनाम प्रणवको कारण उच्चारण ते

तारण करन भव उदधि अगम है।

रेफ औ अकार त्यों मकार विधि हरिहर

त्रिगुणको हेतु आप अगुन परम है।

वीज वह्नि भानु शशि मनमल मोहतम

नासिकै प्रकासै सुख सीत अनुपम है।

शिवाकौ सुनायौ शिव महामन्त्र 'रसराम'

रामनाम हरिके सहस्रनाम सम है।।

श्री अयोध्यापति से आपके नाम बड़े हैं

इस पर एक बड़ा ही मनोरंजक इतिहास है। लंकाविजय से श्रीअवध प्रत्यागमन पर, श्रीजानकीजीवनजू श्री अवध के साम्राज्य पद पर अभिषिक्त हुए। प्रत्येक वर्ष आपकी उस अभिषेक तिथि पर, राज्यतिलक की वर्षगॉठ मनायी जाने लगी। ऐसी ही वर्षगांठ के अवसर पर, देश–देश के नृपतिगण अपने–अपने विभिन्न देशों से उपहार लेकर, समाट् का अभिवादन करने पधारे थे। कुलगुरु श्रीवशिष्ठजी की सम्मति से उस समय के सभी ऋषि, मुनि भी आमंत्रित किये गये थे। श्रीराघवेन्द्र के द्वितीय गुरु श्रीविश्वामित्र कैसे नहीं आवें ? ब्रह्मलोक से नारदादि देवर्षिगण भी पधारे थे।

सिन्धुदेश के नरेश श्रीत्रिविक्रमदेव जी प्रात:काल ही आवश्यक भेंट के साथ श्री कौशलेन्द्र राजसभा में सम्मिलित होने आ रहे थे। रास्ते में मिले उन्हें देवर्षि नारद। कलह–प्रिय नारदजी को उस भोले–भाले नरेश को देख कुछ कौतुक रचने को फुरा। देवर्षि ने कहा–राजन्! सभाभवन में प्रवेश करने के पहले, कुछ मेरी भी सुन लो। तुम ठहरे भोले भाले, तुम्हें अपने राज्यपद के गौरव का भी ख्याल रखना चाहिए। ऋषि–मुनियों को यथायोग्य प्रणाम करना तो राजाओं का धर्म ही है पर राजा होकर, सभी सामान्य राजाओं को भी प्रणाम करते फिरना राज्यगौरव को मिट्टी में मिलाना है। वह श्रीविश्वामित्रजी तो कल–परसों तक एक देश के राजा ही थे। आज मुनि बन बैठे हैं, तो क्या हुआ? आखिर हैं तो क्षत्रिय राजा ही। उनके छोटे राज्य से तुम्हारे राज्य का गौरव अधिक साम्मान्य है। उन्हें प्रणाम करने में तुम्हारे राज्य गौरव में बट्टा लगेगा। देवर्षि की बात कैसे अमान्य होगी? नृपति त्रिविक्रम सभा में जाकर, सबों को प्रणाम तो किया, किन्तु श्रीविश्वामित्र जी के समीप से जाते हुए भी उनकी ओर श्रद्धादृष्टि से न तो देखा, न प्रणाम किया।

श्रीदुर्वासाजी के बाद, कोही मुनि में दूसरा नम्बर श्री विश्वामित्रजी का ही आता है। एक साधारण नरेश के द्वारा भरी अवध राज्यसभा में अपना अपमान उन्हें क्यों कर सहन होने लगा? आग–बबूला हो उठे। बोल उठे, श्रीरामभद्र! श्रीकौशलेन्द्र हाथ जोड़े सामने उपस्थित हुए। क्या आदेश गुरुदेव? 'देखो, इस मानी राजा त्रिविक्रम को समुचित दण्ड तुम्हें देना है।' जैसी आज्ञा हो, आपका यह सेवक पालन करने को तत्पर है।' ' इसे अपने हाथों प्राणदण्ड दो। 'अभी अभी श्री गुरुआज्ञा का पालन करता हूँ'। 'अभी नहीं, आज अभिषेक का वर्षोत्सव हो लेने दो।' कल प्रात:काल ही इसे मौत के घाट पार उतारियो, प्रतिज्ञा करो, मेरे सामने।''श्री विश्वामित्र जी के आदेश से उसी समय सत्यसंकल्प श्री राघवेन्द्र ने भरीसभा में हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की, कि कल प्रात:काल ही श्रीगुरु आज्ञा से मैं सिन्धुनरेश त्रिविक्रम को प्राणदण्ड दूँगा। त्रिविक्रम देव ने अपनी आँखों के सामने श्रीराघवलाल की अमोघ प्रतिज्ञा सुनी। आधे प्राण तो उसी समय सूख गये। काटो तो खून नहीं। दौड़े–दौड़े श्रीनारद जी के चरणों में जा गिरे। देवऋषि! आपने क्या गजब ढा दिया! ऐसा पाठ पढाया कि अबतो हमारे प्राणों के लाले पड़ रहे हैं। श्रीनारद जी ने कहा– मैं क्या जानता था, कि थोड़ी सी बात का इतना बड़ा बतंगड़ हो जायगा। खैर, तुम घबड़ाना नहीं। श्रीहनुमन्तलालजी की वीरमाता श्री अञ्जनीदेवी जी इस समय भी अवधनगर के दक्षिणप्रान्त में स्थित मुक्ताचलपर्वत पर

ठहरी हैं। उनक श्रीचरणों पर त्राहि–त्राहि कहकर गिरो जाकर। उनसे रक्षा का सुदृढ़ वचन लेना, पर पूरा भेद बताना मत। ऐसा ही हुआ। प्राण संकटग्रस्त राजा त्रिविक्रम को सदय हृदया माता अञ्जना ने अभय वचन दिया। उसी समय नित्य नियम की भाँति श्रीहनुमन्तलाल जी अपने मातृचरण की वन्दना करने पध ारे थे। माता का आदेश हुआ– बेटा! मेरे लाल!! मैंने इस प्राणसंकटापन्न राजा त्रिविक्रम को अभयवचन दे दिया है। मेरे वचन की लाज रखनी है तुम्हें। मातृ आज्ञा में तत्पर श्रीहनुमन्तलाल जी ने अम्बा जी को आश्वासन दिया कि माताजी आपकी आज्ञा से मैं इसकी प्राणरक्षा करूँगा।

पुनः राजा त्रिविक्रम को एकान्त में बुलाकर, प्राण लेने वाले के परिचय के साथ–साथ, राजा के अपराध का भी व्यौरा पूछा। राजा ने कहा कि मैंने श्रीनारद जी के सिखाने से श्री विश्वामित्रजी को प्रणाम नहीं किया था, इसी अपराध से उन्होंने स्वयं श्रीरघुलालजी से मेरे वध की प्रतिज्ञा करा ली है। अब क्या हो? मेरे प्राणों की रक्षा अब आपके समर्थ हाथों में है। अपने स्वामी की प्रतिज्ञा सुनकर, परम स्वामिभक्त श्री मारूतिजी बड़े धर्मसंकट में पड़े। एक ओर स्वामिभक्ति, दूसरी ओर मातृ आदेश। साँप छुछून्दर की गति हो रही है। 'बुद्धिमतां वरिष्ठं' प्रत्युत्पन्नमति को युक्ति विचारने में देर नहीं हुई। उन्होंने श्रीरामरूप से भी बढ़कर, श्रीरामनाम की शक्ति को जानकर, श्रीनाम की ओट लेने की ठानी। राजा को सिखाया,अभी से जाकर, तुम खूब उत्साह से श्रीसीतारामनाम का रटन करो। जबतक मौत की घड़ी न टले,तब तक तुम्हारे नामोच्चारण में किंचित् भी शिथिलता नहीं होनी चाहिए। मरता क्या नही करता? दूसरे दिन प्रातः श्री राघवजू धनुषवाण को लिये वध्य नृपति त्रिविक्रम की खोज में निकल पड़े। देखते क्या हैं, एक विस्तृत रमणीक मैदान के एक छोर पर राजा बैठा श्रीरामनाम का जोर–जोरसे उच्चारण कर रहा है। श्रीहनुमन्तलाल जी अपनी पूछ बढ़ाकर उसके चारों ओर पूछ का ही परकोटा बनाकर,उसे अभिगुप्त कर रहे हैं। दृश्य देखकर आप तो हैरान हो गये। अब क्या हो? हमारे नाम और नामानुरागी श्रीहनुमान दोनों समर्थ उसकी रक्षा में है। परन्तु अपनी प्रतिज्ञा तो पालन करनी ही है। श्रीराघवजी का 'जिमि अमोघ रघुपति कर बाना' एक के बाद दूसरे चलने लगे। श्रीवाण नामजापक त्रिविक्रम तक पहुँचकर लौट आते थे, और पुनः तरकश में प्रवेश कर जाते थे। नामजापक का वध ा श्रीवाण करें? कैसे सम्भव है? एक के बाद तीक्ष्ण से तीक्ष्णतर वाण चलाते–चलाते चौबीस घण्टे बीत गये। न वाणमोचन छूट रहा है, न त्रिविक्रम का नाम जप। दूसरे दिन के सूर्योदय होते ही, कौतिकी नारदजी ने श्रीविश्वामित्र जी से जाकर, कहा–ब्रह्मर्षि श्री विश्वामित्र जी! कुछ ब्रह्मर्षियों का क्षमा दयादिगुण भी तो अपने हृदय में लाइये। देखिये आपके परमदुलारे,अतिशय सुकुमार,श्री राघवसरकार वाण चलाते चलाते मारे पसीने के लथपथ हो रहे हैं। कैसा हठ है आपका? चलिये उनका श्रम निवारण कीजिये। कोमल चित्त विश्वामित्र द्रवित हो गये। घटनास्थल पर पहुँचकर कहा– श्रीरामभद्र! मेरा वचन रह गया। तुम्हारी प्रतिज्ञा भी पूरी हुई। अब मैं त्रिविक्रम को क्षमा करता हूँ। रहने दो वाणमोचन। श्रीराघवजी से भी आपके नाम को अधिक शक्तिशाली सिद्धकर, श्रीनारदजी के कौतुक के साथ–साथ वह विनोदमयी राघवलीला भी समाप्त हुई। बोलिये परमसमर्थ श्रीरामनाम सरकार की जय! यह प्रसंग श्रीविदुर के संत श्रीरामप्रियाशरण जी ने स्वरचित छन्दोवद्ध श्रीरामनाम की विजय नाम्नी पुस्तिका में

लिखी है तथा इसी का थोड़ा रूपान्तर कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक में भी छपा है। जहाँ तहाँ कथारूप में भी यह गाथा गाई जाती है। सुना है श्रीअयोध्या मणिपर्वत वाले श्रीमानसतत्त्वान्वेषी पं० श्रीरामकुमारदास जी इसे किसी आर्षग्रन्थ में भी उल्लिखित बताते हैं।

स्वर्ग के पारिजातवृक्ष पाने पर श्रीसत्यभामादेवी परमप्रसन्न हो रहीं थीं। उसी समय श्रीनारद जी वहाँ आये। पूछा देवि! अब आपको क्या चाहिए? 'बस यही कि जन्म–जन्म तक मुझे श्रीकृष्ण ही पतिरूप में मिलें।' इसमें क्या है? किसी सत्पात्र को श्रीकृष्ण दान कर दीजिये। 'बबा सो लुनिये लहिय जो दीन्हा।' 'सत्पात्र कहाँ पाइये?'देवि! मैं तो प्रतिग्रह अंगीकार नहीं करता। किन्तु यह है कि सात्त्विक दान। मैं ही ले लूँगा।' भोलीभाली देवी सत्यभामा ने दान संकल्प कर झट से श्रीनारद के हाथ में जल दे दिया। इतने ही में श्रीकृष्ण वहाँ आ पहुँचे उनका हाथ पकड़कर श्रीनारद लिवा चले। श्रीकृष्ण चुपचाप उनके साथ चले जा रहे हैं। किसी की ओर पलटकर देखते भी नहीं। तब तो श्रीसत्यभामाजी को अपनी भूल समझ में आई। अब क्या हो? देवर्षि! मैं तो इनके बिना जी नहीं सकती। कोई उपाय बताइये।' श्रीनारदजी ने कहा, इनके बराबर सुवर्ण तौलकर दे दीजिये। मैं इन्हें लौटा दूँगा। रनिवास भर के सारे स्वर्ण–भूषण श्रीकृष्ण के साथ तुला पर चढ़ाये गये। बराबर नहीं हुए। श्रीरुक्मिणी देवी ने सुना तो श्रीतुलसीपत्र पर श्रीकृष्णनाम लिखकर तराजू के भूषणवाले पलड़े पर रख दिया। श्रीकृष्ण ऊपर उठ गये, नाम गरू हो गया। श्रीनारदजी ने न तो सुवर्ण लिया, न श्रीकृष्ण को। श्रीनाम तुलसी मुख में डालकर चलते बनें। जाते–जाते कहा मुझे तो इस लीला से यही दिखाना था कि प्रभु के रूप से आपका नाम बड़ा है।

श्रीनाम–प्रकाश

'बन्दो नाम राम रघुवर को। हेतु कृशानु भानु हिमकर को।।'

सूर्य, चन्द्र, अग्नि (विद्युत, प्रकाश) आदि प्रकाशक तत्त्वों के भी उत्पन्न करने वाले श्रीराम–नाम में कितना अधिक प्रकाश होगा, पाठक कैमुतिक न्याय से स्वयं अनुमान कर सकते हैं। जिन बड़भागी महानुभावों को श्रीनामप्रकाश देखने की दिव्यदृष्टि मिली है,उनके नीचे दिये गये अनुभूत वचन, पाठक उन्हीं के शब्दों में पढ़ें।

श्री आदिरामायण में श्रीरामनाम महामणि के पारखी श्रीहनुमंतलालजी ने श्रीनलजी को बताया है कि एकओर सभी मन्त्रों को, कोटि–कोटि ज्ञानराशि को जुटाकर रखिये, सब मिलाकर भी श्रीरामनाम की समता नहीं कर पावेंगे। अनन्तकोटि सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि के प्रकाश से भी बढ़कर प्रकाश श्रीनाम में है। अतः जापक के भीतर–बाहर समस्त अन्धकार की राशि को श्रीनाम नष्ट कर देते हैं।

'एकतः सकला मन्त्रा एकतो ज्ञान कोटयः।
एकतो रामनाम स्यात्तदपि स्यान्न वै समम्।।
अनन्तकोटि सूर्येन्दु बह्नि दीधिति दीप्तिमत्।
वाह्यान्तर सुसंच्छन्नं तमोवृन्द निरासकम्।।''

श्रीहनुमंतलाल जी पुनः कहते हैं कि सत्युगमें कोई—कोई सुकृती अपने सद्गुरू से श्रीराम—नाम के रहस्य को एक बार आस्वादन करके, अज्ञानान्धकार को छिन्न—भिन्न करके, तथा अपने भीतर प्रकाश से परिपूर्ण होकर सिद्ध बन गये हैं तथा परतम ब्रह्म श्रीराघवजू को प्राप्त किया है।

'पुरा कृतयुगे केचित् जनाः सुकृतिनो नल।
सरहस्यं रामनाम सकृदास्वाद्य सद्गुरुम्।।
भित्वाऽज्ञान तमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम्।
परे ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्तः विनाश्रमम्।।'

श्रीरामोपनिषद् में आया है कि श्रीरघुनाथजू ही परब्रह्म हैं, परमतप, परम तत्त्व हैं, तथा उन्हीं का श्रीरामनाम तारक ब्रह्म हैं। श्रीरामनाम अपने प्रकाश से प्रकाशित परम ज्योतिर्मय हैं। प्रणव के प्राण हैं तथा सृष्टि स्थिति और लय के कारण हैं।

'राम एव परंब्रह्म राम एव परंतपः।
राम एव परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्।
स्व भू ज्योंतिर्मयोऽनन्तरूपी स्वनैव भासते।
जीवत्वेनदमो सृष्टि स्थिति हेतु र्लयस्य च।।'

लिङ्गपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही से सम्पूर्ण जगत् सदा प्रकाशित हो रहा है। श्रीरामनाम का अमित प्रभाव वचन से अगोचर है।

रामनाम्ना जगत्सर्वं भासितं सर्वदा द्विज।
प्रभावं परतमं तस्य वचनागोचरं मुने।।

ब्रह्माण्डपुराण में श्रीधर्मराज कहते हैं— श्रीरामनाम का दिव्य प्रकाश वेद— वेदान्त के अनुभव में नहीं समाने वाला है। श्री नामप्रकाश जिनके हृदयमें प्रसरित हो गये, वह जापक त्रिलोकपूज्य हो जाते हैं।

'रामनाम प्रभा दिव्या वेद वेदान्त पारगाः।
येषां स्वान्ते सदा भाति ते पूज्या भुवनत्रये।।'

श्री आङ्गिरसपुराण में कहा गया है कि जो भीतर तथा बाहर अर्थात् बैखरी से — दोनों स्थलों से नाम जपते हैं, उनके हृदय की आनन्दकली श्रीनामरूपी सूर्य के द्वारा खिल जाती है।

'आभ्यन्तरं तथा वाह्यं यस्तु श्रीराममुच्चरेत्।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदिपङ्कजे।'

रामतापनीयउपनिषद में कहा गया है कि पापरूपीवृक्षके लिये श्रीरामनामकुठार है। पापरूपी सूखीलकड़ी को भस्म करने वाले दावानल हैं तथा पापराशिरूपी घोर अन्धकारको भगानेवाले प्रकाशमान सूर्य हैं।

'पापद्रुम कुठारोऽयं पापेन्धन दावानलम्।
पापराशि तमस्तोमं रविः साक्षात्प्रभानिधिः।''

श्रीलोमशसंहिता में भगवान् शंकरजी कहते हैं कि श्रीरामनाम अज्ञानरूपी अन्धकार के मिटाने में कोटि—कोटि सूर्य चन्द्रमा तुल्य प्रकाशमान हैं तथा ज्ञानामृत की वृष्टि करने वाले सजल जलद हैं। ऐसे श्रीरामनाम को सदा जपना चाहिए।

'अज्ञान तिमिरोद्‌भेदं कोटि सूर्येन्दु भास्वरम्।
ज्ञानामृत पयोवाहं रामनाम सदा जपते।।'

श्रीजानकीपरिणय नाटकनामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि स्यमंतक आदि महामणीन्द्र से भी श्रीरामनाम में अधिक प्रकाश है। जीभपर सदा प्रकाशरूप से स्थित रहें, तो हृदय के भीतर वाले तथा दृश्य जगत में भासमान् मोहान्धकार विनाश करने में समर्थ है। अतः हम तो दिन–रात यही नाम जपते हैं।

'महामणीन्द्रादपि काशतेऽधिकं सदैव जिह्वाग्र प्रदीपयत्यलम्।
आम्यान्तर ध्वान्त सबाह्यमुल्वणं निवारणे शक्तमहर्निशं भजे।।'

इसी प्रकार श्रीप्रमोद नाटक में भी कहा गया है कि निरामय रामनाम युगलरूप के प्रकाशक अर्थात् साक्षात् कराने वाले हैं। सदा भक्तों की आर्त्ति हरने वाले कृपानिधान हैं। सभी देव–मुनीश्वरों से पूजित श्री राघवजू के रामनाम को हम स्मरण करते हैं।

'अनामयं रूपयुगं प्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम्।
स्मरामि श्रीराघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देव मुनीश्वरेश्वरैः।।'

श्रीजावालि संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम का दिव्यप्रकाश जिसके हृदय को प्रकाशित किये रहता है, उसके लिये परतमब्रह्म से प्राप्य सभी दिव्यानन्द सुलभ हो जाते हैं।

'रामनाम प्रभो दिव्या यस्योरसि प्रकाशते।
तस्यास्ति सुलभं सर्वं सौख्यं सर्वेशजं परम्।।'

श्रीनामजप से ही परमसिद्ध पद पर प्रतिष्ठित श्रीबड़े महाराजजी कहते हैं, वेदवाणी आदि भी शब्द ब्रह्म है, पर श्रीरामनाम शब्द ब्रह्म से ही निर्मल ज्ञान स्फुरित होता है। इन्हें अनन्त ज्ञानराशिरूपी सुविशाल वटवृक्ष की भाँति उसके लघुवीजके समान समझना। इन्हीं का रसास्वादन करो। सगुण–निर्गुण दोनों ब्रह्मों में श्रीरामनाम ही की कला व्याप रही है। 'अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।' जिन्हें ऐसी दृष्टि प्राप्त हो गयी है, उनके लिये आठो प्रहर सर्वत्र श्रीरामनाम ही का प्रकाश फैलता हुआ प्रतीत होता है।

'शब्दब्रह्म जावत जहान बीच पेखो तुम
तावत अमल बोध नाम सर्वेश में ।
सूक्ष्म सुवट बीज सम लखो चखो रस
अरस विहाय वँधो काहू के न वेश में।।
रामनाम ही की कला कलित अनूप अति
व्यापि रही नित्त अविशेष सविशेष में।
(श्री) युगलअनन्य आठयाम अवलोकु निज
नामही की आभा फैलि रही सब देश में।।

चन्द सूर पावक प्रकासी जैते जग बीच
तेते सब नामही के आसरे प्रकास गुन।
रेफ परब्रह्म तेज अमित दिनेस सम
व्यापक अचर चर वदे वेद विदुषन।।
नामी नाम एकता अखंड संत शास्त्र सुचि।
संवत सदैव इह जानि विषय बीज भुन।
श्रीयुगल अनन्य नामनेह बिना किये सठ
कोटि–कोटि कल्पलैं खराबी सहो सीस धुन।।१७७२।।

श्रीसीतारामशुद्ध चिदानन्द परिपूर्ण प्रकाश के भी कारण है। कलंक हरने वाले हैं। अपने अन्तःकरण को निर्मल एवं पावन बनाकर, श्रीनाम के परत्व देखिये और असत भोगवासना जन्य शोक–विलाप को नामकृपा से त्यागिये। निराकार तथा साकार ब्रह्म से भी स्वच्छ हैं तथा जगत् के उपादान कारण श्रीनाम हैं। श्री बड़े महाराज कहते हैं कि श्रीसीतारामनामही श्रीशेष, शुकदेव, शारदा, गणेश तथा असंख्य मुनीश्वरों तथा श्रीशंकरजी के भी जीवन धन हैं।

'सीतारामनाम परिपूरन प्रकाश शुद्ध
चिदानन्द कारन कलंक के हरन हैं।
पेखिये परत्त्व मलहीन शुचि सत्त्व करि
परिहरि असद विलाप आभरन है।।
निराकार सहित अकार से सहज स्वच्छ
सानुकूल नाम जग उपादान घन है।
(श्री) युगल अनन्य शुक शेष शारदा गनेश
अमित मुनीश ईश शंकर सुघन है।।२२०३।।

रहे नहिं पावत प्रपंच पंच वंच मंत्र
मान मद रंच जहाँ नाम भानु भास है।
सरस सुभाव भाव भाग अनुराग गुन
सुमन सदैव बिगसत अनयास है।
अखिल अमंगल अगार दुखधार भार
अधिक अजार भार मिटन कुवास है।
श्री युगल अनन्य और साधन से कौन काम
नाम की कृपालुता से भ्रम तम नास है। २६५।।

रामनाम मानिक झलक दुतिदाम काम
कोटिन कृसानु भानु तारकेश तुच्छ हैं।

पल पल पर प्रतिकाश भास भव हर
अमर अजर कर निकर मुमुच्छ है।।
रहस रसाल नेह निधि रसिकेश प्रिय
हर हिये हरन रहित रस रूच्छ है।
श्रीयुगल अनन्य वरनेश परमेश सम
सरस रमन बिना कलिकाल कुच्छ है।।
प्रानापान व्यान औ समानस उदान नाग
कुरुम कृकिल देवदत्तहू में हेरिये।
करन कदंब मन मति अभिमान चित्त
नाम धाम बीच लसे सदा यों निवेरिये।
भूमिहू पताल स्वर्ग अपवर्ग मध्य मीत।
अन्तरीछ दिगदस वही सुख ढेरिये।।
श्रीयुगल अनन्य सोम सूरज नखत माहि
अचल प्रकाश नाम पेखै गुन गेरिये।।२२१३।।

श्रीनाम–प्रताप

संस्कृत के प्रतिप– धतु और धञ् उपसर्ग से व्युत्पन्न प्रताप शब्द का अर्थ होता है, प्रभुत्व पराक्रम आदि का आतंक फैलाने वाला तेज। श्री वैद्यनाथ जी प्रताप शब्द की दोहाबद्ध परिभाषा इस प्रकार लिखते हैं।

जाकी कीरति सुयस सुनि, होय सत्रु उर ताप।
जग डराय सब आपही, कहिये ताहि प्रताप।।

श्रीसूर्य भगवान् का प्रताप प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर है। अत: प्रताप की उपमा सूर्य से देने की कबिकुल रीति हैं। यथा–

जब तें रामप्रताप खगेसा। उदित भये अति प्रबल दिनेसा।।

पुन: प्रताप शब्दान्तर्गत तेज का भाव भी अन्तर्हित है। तेज की उपमा अग्नि से दी जाती है। 'तेज कृशानु रोष महिषेसा' आतंक फैलाने वाले सुयश प्रसारित करने का धर्म होने से इनमें भी प्रताप का आरोप किया जाता है।

अब हम पूर्वाचार्यों की महावाणियों का उद्धरण देकर, श्रीसीतारामनाम सरकार के प्रताप धर्म पर प्रकाश डालेंगे। श्रीरामनामके आतंक से जापक के भय भी भयभीत होकर भाग जाते हैं। पापराशि, संकट भी भस्म हो जाते हैं। यह सब हम आगे आने वाले भय संकट निवारण प्रसंग में दिखायेंगे। यहाँ श्रीगोस्वामिपाद तथा श्री बड़े महाराज की कुछ महावाणियाँ इस सम्बन्ध की यहाँ उल्लिखित की जा रही है।

'जान आदि कवि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू।।' १।१९।५

आदि कवि महर्षि वाल्मीकिजी ने श्रीनामाभ्यास करके अपने जीवन में ही प्रत्यक्ष अनुभव किया कि पहले आपके समस्त संचित पाप जलकर भस्म हुए। पुनः इसी शरीर में पूर्वकृत व्याधों के कुसंग से की गई हिंसा, वटमारी कुनारी संसर्ग आदि अक्षम्य क्रियमाण पाप भी समस्त जल गये तथा उन्हें श्रीनामसरकार ने बिल्कुल पापमुक्त कर दिया। प्रारब्ध पर भी विजय कर आप ब्रह्मतुल्य हो गये। विशुद्ध हृदय में श्रीनामचमत्कार स्वतः अनुभूत होने लगते हैं।

'भंजेउ राम आपु भवचापू। भव भय भंजन नामप्रतापू।।' १।२४।६

ऊपर की अर्द्धालीमें भव शब्द का यमक है। प्रथम भव का अर्थ श्रीशिवजी, तथा दूसरे भव का अर्थ संसार का जन्म–मरण है। श्रीरामनाम के प्रताप से ही जापक के हृदय के पुनर्जन्म, नरकयातना, आसन्न विघ्न–बाधाओं के भय सभी आपही आपभग जाते हैं। अतः सभी तीव्र नाम–साधक अपने आपको निर्भय निशंक से देखेंगे। आप नामाभ्यास करके स्वयं भी अपने हृदय से पूछ लीजिये।

'नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरिहर प्रिय आपू।''

देवर्षि नारद ने श्रीरामनामकाप्रताप कैसे जाना? उत्तर –

' हिमगिरि गुहा एक अति पावनि। बह समीप सुरसरी सुहावनि।।
आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखि देवरिषि मन अति भावा।।
निरखि सैल सरि विपिन विभागा। भयउ रमापति पद अनुरागा।।
सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी । सहज विमल मन लागि समाधी।।'

आपको दक्षप्रजापति ने शाप दिया था कि सम्पूर्ण लोकों में विचरते हुए भी तेरे ठहरने का कोई निश्चित स्थान न होगा। उस शाप के मारे आप कहीं भी कुछ काल जमकर नहीं रूक पाते थे। यहाँ हरि स्मरण का माध्यम नाम जप ही था। नामों में श्रीनारद श्रीरामनाम के जापक हैं। यह बात श्रीमानसजी से सिद्ध है। अरण्यकाण्ड के अन्त में पंपासर पर श्रीराघव–नारद संवाद है। उसमें श्रीनारदजी ने वर माँगा है–

'यद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तें एका।।
राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग बन बधिका।।'

'राका रजनी भगति तब, रामनाम सोइ सोम।
अपर नाम उडगन बिमल, बसहुँ भगत उर व्योम।।'

श्रीनारद जी ने प्रत्यक्ष देखा है कि श्रीरामनाम से शाप भी टल जाता है। इतना ही नहीं, इन्द्रप्रेरित काम भी अपने सहाय सहित आपको डिगा नहीं सका। काम के द्वारा उपद्रव होने पर, आपको क्रोध होना स्वाभाविक था। सो श्रीरामनाम के प्रताप से क्रोध भी आपके पास फटक नहीं सका। यद्यपि उस समय प्रभुकृत अवतार हेतु लीला ने आपको कुछ काल के लिये मोहान्ध बना